

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180405

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library

Call No. H83
T36K
Author शांति शर्मा
Accession No. PH 1834
Title श्रृंगार - न - रत्नमाला

This book should be returned on or before the date last marked below.

खुदा-न-खास्ता

लेखक—

शौकत थानवी

अनुवादक -

महमूद अहमद 'हुनर'



मोल विक्रेता

१९८२

प्रकाशन

२, मिन्दोरोड — इलाहाबाद — २

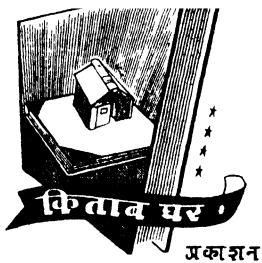
प्रथम संस्करण

१९५४

मूल्य २।।

मुद्रक

टंडन प्रिंटिंग वर्क,
५-ए, एलबर्ट रोड,
इलाहाबाद



“शौकत थानवी हास्य-रस के प्रसिद्ध लेखक हैं। हिन्दी-भाषा-भाषी उनसे पूर्णतः परिचित हो चुके हैं। प्रस्तुत उपन्यास उनकी उच्च-कॉटि की हास्य रचना है। आशा है पाठकों का वह भली-भांति मनोरंजन कर सकेगी। पाठकों ने यदि इसे अपनाया तो श्री थानवी की अन्य रचनाओं को उनके समक्ष रखने का प्रयत्न किया जायगा।”

—प्रकाशक

खुदा-न-ख्वास्ता

एक

हमारी नौका एक हचकांले के साथ जैसे किसी चट्टान में टकरा सी गई और हम दोनों मियाँ बीबी खुदा को याद करते हुए एकदम हड़बड़ा कर उठ बैठे । देखा तो नौका किनारे में लगी हुई थी और औरतों की एक भीड़ हमारे स्वागत के लिए मौजूद थी । लेकिन किस तरह ? किसी की निगाहों में शोले थे, किसी की भवे तनी हुई और किसी के साथे पर समुद्र की लहरों में कहीं अधिक बल पड़े हुए थे । मन का विश्वास हो गया कि नौका डूब चुकी है और हम मरने के बाद दूसरे लोक में पहुँच चुके हैं । अपने गुनाहों में तौबा करने का निश्चय कर ही रहे थे कि उस भीड़ की एक महिला ने गुस्से में भग्यि हुए स्वर में कहा—“इन दोनों ने तो कानून का उल्लंघन और बेशर्मी की हद कर दी है । गिर-फ्तार करलो इन दोनों को और सुबह मेरे सामने पेश करो ।”

यह सुनना था कि कुछ स्त्रियों हमारी नौका में फाँद पड़ी । उनमें से एक स्त्री ने मेरी बीबी का बुर्का नीच कर मुझे पहिना दिया और फिर हम दोनों को नौका से उतार कर एक बन्द मोटर में बिठाया गया । यह मोटर बड़ी तेजी में चौड़ी और साफ सड़कों में ले जाकर एक विशाल इमारत के सामने रोक दी गई जो देखने में कुछ-कुछ जेलखाने सी लगती थी । सीलचोंदार बड़े से फाटक के सामने एक कोमलाङ्गी युवती साड़ी बांधे कंधे पर बन्दूक रखते पहरा दे रही थी । मोटर के ठहरते

खुदानखास्ता]

ही उस स्त्री ने फाटक खोल दिया और हम दोनों मोटर से उतार कर उस इमारत के अन्दर इस शान से लाये गये कि मैं बुकें में लिपटा हुआ था, बेगम बेपर्दा थी और हम दोनों को कुछ स्त्रियाँ बन्दूकें कंधों पर रखे घेरे हुए थी। उस इमारत में पहुँचा कर हम दोनों को एक और सीखचोंदार कमरे में बन्द करके बाहर ताला लगा दिया गया और सिर्फ एक महिला कमरे के दरवाजे पर बन्दूक लिये पहग देती रही, बाक़ी सब चली गई।

हम हैरान थे कि यह जाग रहे हैं या स्वप्न देख रहे हैं। यह दुनिया है या दूसरी दुनिया। बस इतना याद पड़ता था कि नौका जब तूफ़ान में घिर चुकी थी तब भूख और प्यास से निढाल होकर पालों की ओर से निराश हो जाने के बाद हमने अपने को मौत के सिपुर्द कर दिया था और मौत ही के इन्तज़ार में न जाने किस वक़्त हम ऊँघ गये और फिर जो आँख खुली तो अपने को इस हाल में पाया जिसके बारे में यह समझ में न आ रहा था कि यह कौन सी दुनिया है। ज़िन्दगीवाली दुनिया या ज़िन्दगी के बाद वाली दुनिया। हमारे ताज्जुब और हैरानी का यह हाल था कि हम दोनों आपस में भी कोई बात न कर सकते थे। अपनी-अपनी जगह पर बैठे सोच रहे थे कि एकाएक हमारे कमरे का दरवाज़ा खुला और एक स्त्री ने एक ट्रे लाकर हम दोनों के सामने रख दी। ट्रे में कुछ बिस्कुट, कुछ सूखे मेवे और गर्म काफ़ी थी। भूख का यह हाल था कि हम दोनों दूट पड़े उन चीज़ों पर और सारा सामान थोड़ी ही देर में साफ़ कर दिया। लेकिन पेट भर जाने के बाद अब यह चिन्ता और भी परेशान करने लगी कि आखिर हम दोनों को क्या हो गया है और हम दोनों हैं कहाँ। जो स्त्रियाँ समुद्र तट पर मिलीं थीं या उसके बाद जिन स्त्रियों को देखा उन सब की शक्ल इन्सानों की सी

थी। बिल्कुल वैसी ही स्त्रियाँ जैसी हमारी दुनिया बल्कि हमारे देश में होती है। बड़ी साफ़ हिन्दी बोलती हैं। अलबत्ता जरा सा फ़र्क़ यह था कि हमारे यहाँ की स्त्रियाँ इतनी चुस्त-चालाक और इतनी जिम्मेदार नहीं हुआ करतीं जितनी यहाँ महसूस हो रही थीं। स्त्री और बन्दूक, स्त्री और गिरफ़्तारी, स्त्री और पहरेदारी। अर्जात्र पहेलियाँ थीं ये। हमसे ज़्यादा बेगम हैरान थीं। यह गुमगुम एक-एक चीज़ को आँखें फाड़े देख रही थी। एकाएक हमारे कमरे का द्वार फिर खोला गया और दो तीन स्त्रियाँ ने, जो स्वाकी रंग की साड़ी बाँधे, कमर में चमड़े की कार्निस्टबलों की सी पेटी में डंडे लगाये हुए थीं, अन्दर आकर कहा—“उठो, कचहरी का वक़्त आ गया। ए मर्दुए! बुर्का पहन कर चल। बेहया कहीं का। यह मर्द जात और यह बेशर्मी!”

हमने चुपके से बुर्का पहन लिया और चुपचाप उनके साथ हो लिये। हम दोनों को फिर उसी मोटर में बिठा दिया गया और यह मोटर चौड़ी सड़कों और सुन्दर बाज़ारों में से गुज़रने लगी। हमने इस बद-हवासी की हालत में भी कम से कम यह तो देख ही लिया कि हमको कहीं रास्ते में एक मर्द भी नज़र न आया। चौराहों पर सफ़ेद रंग की साड़ियाँ बाँधे हुए स्त्रियाँ बिल्कुल उसी तरह खड़ी ट्रैफ़िक को कंट्रोल कर रही थीं जिस तरह हमने अब तक ट्रैफ़िक सिपाही देखे थे। दूकानों पर स्त्रियाँ ही स्त्रियाँ नज़र आईं। दूकानदार भी वही और ग्राहक भी वही। कहीं-कहीं एकाध बुर्का भी दिखा। लेकिन हमको औरन यह ख़याल आ गया कि इसमें हमारी ही तरह का कोई पुरुष होगा। वह मोटर इसी प्रकार के बाज़ारों से गुज़र कर एक बड़े ही सुन्दर पार्क में दाख़िल हुई और थोड़ी दूर जाकर एक शानदार इमारत की बरसाती में रोक दी गई जहाँ एक बहुत ही मोटी-ताजी महिला संगीन लिये टहल-टहल कर पहरा दे रही थीं। हमारी निगरानी करनेवाली स्त्रियों ने

सुदानख्वास्ता]

हमको मोटर में उतार कर उसी इमारत के एक बंदे में ढाल में पहुंचा दिया जहाँ अदालत का सा नक्शा था। सामने ही जंगल से घिरे हुए एक प्लेटफार्म पर बहुत बड़ी मेज के गिर्द कुर्सियाँ बिछाये हुए कुछ प्रतिष्ठित महिलाये बैठी थीं और जंगल के इस तरफ बहुत सी स्त्रियाँ खड़ी थीं। मेज पर बैठी हुई स्त्रियों में मेरी बीच वाली महिला चश्मा लगाये बंदे गौर में वह बयान सुन रही थीं जो जंगल के इस तरफ खड़ी हुई एक स्त्री बड़ी खानी के साथ पढ़ रही थी। हमारी निगाहों के सामने बिल्कुल कंचहरी का नक्शा फिर गया और वहाँ के ढंग से समझ में भी यही आया कि यह अदालत है। वकील बहस में लगी है और अदालत सुन रही है। मुल्जिम के कटहरे में एक स्त्री सिर झुकाये खड़ी थी। कुछ स्त्रियाँ बग़ावर लिखती जा रही थीं। कुछ देर के बाद वकील ने अपनी बहस खत्म कर दी। हाकिम ने चश्मा ठीक करके कुछ लिखा और सब जंगल के सामने में हट गये तो वह महिला जो रात को समुद्र किनारे मौजूद थीं और जिनके हुक्म से हम गिरफ्तार हुए थे, आगे बढ़ीं और एक कागज़ अदालत के सामने पेश कर दिया। हाकिम ने उस कागज़ का ध्यान से देखने के बाद पीछे खड़ी हुई एक स्त्री को इशारा किया। वह स्त्री डंडा लेकर आगे बढ़ी और आवाज़ दी—

“समुद्र किनारे के मुल्जिम अदालत के सामने हाज़िर हो।”

हमारी पहरेदारनियाँ हम दोनों को लेकर आगे बढ़ीं और हम दोनों को मुल्जिम के कटहरे में खड़ा कर दिया गया। अदालत की कुर्सी पर विराजमान वृद्ध महिला ने हम दोनों को गौर से देखा और उनकी बग़ल में बैठी एक अघेड़ अवस्था की महिला ने बेगम से पूछा—

“तुम्हारा नाम ?”

बेगम ने कहा—“मईदा खातून ।”

उन महिला ने नाम लिखते हुए पूछा—“माँ का नाम ?”

“हबीब फ़तमा ।”

“कौम !”

“मुसलमान, शेख सिद्दीकी ।”

महिला ने सब लिखने के बाद कहा—“कहो, अम्माँ हब्बा की क़सम, जो कुछ कहेंगी सच-सच कहेंगी ।”

बेगम ने क़सम खा ली तब उन महिला ने बड़ी गम्भीर आवाज़ में कहा —“तुम पर यह इलज़ाम है कि तुम इस राज्य के क़ानूनों के खिलाफ़ एक मर्द को बेपर्दा साथ लिये किश्ती में सैर कर रही थीं । यह जुर्म इस राज्य के संगीन-तरीन जुर्मों में से एक है और इस तरह के जुर्मों की तरफ़ ध्यान न देने के मानी यह है कि हम अपने राज-काज का सारा नियम-क़ानून तुम्हारी ऐसी बागी औरतों के लिये उलट-पुलट दे । तुमने न सिर्फ़ मर्दों को बेशर्मी के लिये उकसाया है बल्कि राज्य का क़ानून भी तोड़ा है । इस सिलसिले में तुमको क्या कहना है ?”

बेगम ने कहा—“सरकार, हम इस जगह के लिये बिल्कुल अजनबी हैं । हमको दरअसल यह भी पता नहीं कि हम एकाएक किस दुनिया में आ गये हैं । आज से बीस दिन पहले हम दोनों मियाँ बीबी ने।”

अदालत ने टांका—“बीबी मियाँ कहो । मियाँ का दर्जा नीचा है । बयान जारी रहे ।”

बेगम ने कहा—“हुज़ूर, आज से बीस दिन पहले हम दोनों बीबी मियाँ ने अपने अजीज़ों, दोस्तों और रिश्तेदारों से तंग आकर, ग़रीबी की हालत में अपनी की बेग़ानगी देखकर इस दुनिया और इस ज़िन्दगी

खुदानख्वास्ता]

मे मुँह मोड़ लेने की ठानी और आत्महत्या का यह प्रगतिशील तरीका सोचा कि अपने को किस्मत पर छोड़ कर एक मामूली सी नौका पर बम्बई के समुद्र तट से खाना हो गये । न हमारी कोई मंजिल थी और न कहीं हमको पहुँचना था । हवा का रुख जिस-जिस तरफ़ हुआ उस-उस तरफ़ हमारी नौका बहती रही । तूफ़ानों के थपेड़े खाये, मौत आ आकर टली । लेकिन हम तो खुद ही हर समय मौत का स्वागत करने को तैयार थे । मगर हमारी जान इतनी सख्त थी कि कोई तूफ़ान हमारी किस्ती को डुबो न सका और हमको यह तजरबा हुआ कि मौत सिर्फ़ उन्हीं लोगों को आती है जो ज़िन्दगी की तमन्ना करते हैं । दस बाग़द दिन तक हमारे पास खाने-पीने का जो सामान था वह चलता रहा । फिर हम दोनों ने एक बक़्त खाना और तरस-तरस कर मीठा पानी पीना शुरू किया । आखिर वह भी खत्म हो गया और आज चार दिन के बाद हमको इस जगह पर कुछ बिस्कुट, कुछ मेवा और काफ़ी मिल सकी । हमारे हिन्दुस्तान में औरतें पर्दा करती हैं और मर्द बेपर्दा रहते हैं । इसी रिवाज के मुताबिक़ मैं बुक़्त में थी और मेरा शौहर बेपर्दा कि अचानक हम गिरफ़्तार कर लिये गये । इस देश के क़ानूनों का तो हमको अब तक पता नहीं । यह भी मालूम नहीं कि यह जगह कौन सी है, इसका क्या नाम है और यहाँ के क्या क़ानून और नियम हैं ।”

अदालत ने बेगम का सारा बयान ध्यान से सुना और कुछ लिखने के बाद सवाल किया—“तुम्हारे देश में क्या किसी को यह पता नहीं कि अरब सागर में एक नारी देश भी है जहाँ हिन्दुस्तान और आस-पास के देशों से वह स्त्रियाँ आ आकर बस गई हैं जो मर्दों की ज़्यादातियों, खुदगर्जियों और हुक़मत से तंग आ चुकी थीं पर अपने स्वाभिमान को अब तक बिल्कुल त्याग न चुकी थीं ।”

बेगम ने कहा—“हुजूर, यह बात मैं आज सुन रही हूँ, नहीं तो अब तक तो मैं यह समझ रही थी कि या तो यह स्वप्न है, नहीं तो हमारी किस्ती डूब चुकी है और हम दूसरी दुनियाँ में पहुँच कर अपने पिछले कर्मों का हिसाब देने के लिये हाज़िर हुए हैं।”

हार्किम ने मुस्करा कर कहा—“ख़ूब, अच्छा हम तुमको अज्ञानता के कारण कोई सजा नहीं देते पर तुम दोनों मग़कारी शिक्षालय में छः महीने तक नज़रबन्द रहोगे। इस बीच में तुमको इस देश में रहने के ढंग आ जायेंगे। शिक्षालय के नियमों का पूरा पालन किया जाय। वहाँ तुम्हारे आराम की सारी चीज़ें मिलेंगी। अगर तुमको किसी तरह की कोई ज़रूरत हो तो मंत्रागणी जी वहाँ मौजूद रहती हैं, उनसे तुम मदद ले सकती हो। अपने शौहर से कह दो कि अब हिन्दुस्तान की हवा भूल जायें। यहाँ उनको शरीफ़ बेटों दामादों की तरह शर्म-हथा का खयाल रखकर पर्दे में रहना पड़ेगा और यह आठ माल की उम्र से ज़्यादा किसी लड़की के सामने न हो सकेंगे। बाकी सारे क़ायदे-क़ानून और तौर-तर्क़ के शिक्षालय की मंत्रागणी स्वयं ही सिखा पढ़ा देंगी।”

अदालत ने यह फैसला सुनाकर फैसले की एक नक़ल उन महिला को दे दी जिन्होंने यह मुक़दमा पेश किया था और वहीं महिला हम दोनों को उसी मोटर में बिठाकर रवाना हो गईं। मोटर बड़ी ही साफ़-सुथरी और चौड़ी सड़कों से होकर थोड़ी ही देर में एक कोठी के सामने आकर रुकी और हमारी निगरानी करने वाली महिला ने हम दोनों को उस कोठी के एक कमरे में बिठाकर इन्तज़ार करने का आदेश दिया और स्वयं खटपट-खटपट करती चली गईं। थोड़ी ही देर में वे अपने साथ एक बड़ी ही सुन्दर, सुसंस्कृत नवयुवती को ले आईं और

खुदानख्वास्ता]

बेगम ने कहा—“यह सेक्रेट्री साहिबा हैं इस शिक्षालय की, और अब आप इनकी ही मेहमान रहगी। आपको अगर किसी क्रिस्म की कोई तकलीफ हो तो इनमें ही कह दीजिएगा।”

सेक्रेट्री साहिबा ने बड़े ही मधुर स्वर में कहा—“मैं आपके लिये किसी ऐसे क्वार्टर का प्रबन्ध किये देती हूँ कि आपको भी तकलीफ न हो और आपके घरवाले भी आराम में रह सकें। अब आप इसी को अपना घर समझिये। अच्छा कोतवालिनी साहिबा, अब आप जा सकती हैं।”

हमारी निगरानी करने वाली महिला, जिनके सम्बन्ध में अब यह मालूम हुआ कि कोतवालिनी हैं, सेक्रेट्री साहिबा से हाथ मिला कर खटपट करती हुई चली गईं और सेक्रेट्री साहिबा हमारे रहने-सहने के प्रबन्ध में लग गईं।

दो

शिक्षालय में जो क्वार्टर हमको रहने के लिये दिया गया उसके दो भाग थे । अन्दर मर्दाना और बाहर ज़नाना । मर्दाना हिस्से में पर्दे का विशेष प्रबंध था । घर में काम करने के लिये दो मर्द थे और बाहर ज़नाने के लिये दो औरतें मिली थी । शिक्षालय की ओर से आगम और सुविधाओं का बड़े ऊँचे पैमाने पर इन्तज़ाम था पर खाना घर पर बनता था और सारा इन्तज़ाम भी घर में हमको और बाहर बेगम साहबा को खुद ही करना पड़ता था । दरअसल राज्य की तरफ से छः महीने तक पाँच सौ रुपया महीने की एक पेन्शन बेगम को मिलने लगी थी कि इसी में अपना खर्च चलाओ । नौकरों को तनवाह दो और जो चाहें करें । चुनांचे सेक्रेट्री साहबा की सलाह से बेगम साग इन्तज़ाम करती थी । महीने भर की ज़िन्म लाकर घर में भर दी गई थी । दूध, मक्खन, डबल रोटी, अंडा और तरकारियों के राशन बँध गये थे । अब मुसीबत यह थी कि घर चलाना था हमको । खाना पकाने के लिये जो नौकर घर में था वह पकाता तो बहुत अच्छा था पर उसके कर्तव्यों में यह भी था कि वह हमको खाना पकाना सिखाये और सेक्रेट्री साहबा का भी विशेष आदेश था कि एक महीने की इस ट्रेनिंग के बाद हमारा खाना पकाने का इम्तहान होगा इसलिये मुवह में उठकर चूल्हे-हाँडी की फ़िक्र होती थी । हमको भला चूल्हा-हाँडी में क्या मतलब ? अबसे पहले कभी रसोईघर का रुख भी न किया था । बहुत से मर्दों को खाना बनाने का शौक़ होता है ।

खुदानखुवास्ता]

खुद हमारे बहुत मे दोस्त अपने हाथ मे अच्छी-अच्छी चीज़ें पका लिया करते थे मगर हम इस सिलसिले में बिल्कुल कोरे थे । न कभी यह शौक हुआ और न अब तक ऐसी मुसीबत पड़ी थी कि खुद खाना पकाते । लेकिन अब हम मजबूर थे कि रसोईघर में धुएँ मे आँखें फोड़ें और चूल्हे के सामने अपना मुँह झुलसा करें । हमारे बावर्ची ने, जो बावर्ची होने मे ज्यादा हमारा उस्ताद था, हमको सबसे पहले आटा गूँधना सिखाया । कुछ न पछिये कितनी उलझन होती थी जिस वक़्त गीला आटा दोनों हाथों में लुथड़ कर रह जाता था । आटा गूँधने की तालीम के बाद लोई बनाने का सबक याद कराया गया और फिर रोटी पकाने की तालीम दी जाने लगी । खुदा बचाये, हमारे ख्याल में दुनिया का सबसे मुश्किल काम यही रोटी बनाना है । शुरू-शुरू में तो हमारी चपातियाँ तवे पर अजीब-अजीब नक़शे बनाया करती थी । कोई चपाती होती थी बिल्कुल सीलौन के नक़शे की, कोई चपाती इधर से उधर फटकर आस्ट्रे लिया कर नक़शा बन जाया करती थी । कोई चपाती आधी हाथ में चिपक कर रह जाती थी, आधी चूल्हे में और तवा बिल्कुल साफ़ । खैर, यह तो अभ्यास न होने के कारण था, लेकिन तवे के ऊपर चपाती डाल कर फिर उसको पलटना, बस क्रयामत का सामना होता था । कभी उँगलियाँ तवे से चिपक गईं, कभी रोटी जल कर रह गई । सच पछिये तो हम तंग आ चुके थे इस ज़िन्दगी में । बेगम से अगर कभी इस मुसीबत का जिक्र किया तो वह हँसकर कह दिया करती थी—“ज़रा मे धरेलू कामों मे घबरा गये आप ? पड़ जायगी आदत धीरे-धीरे । सवाल यह था कि आखिर किस-किस बात की आदत डाली जाती ? ज़िन्दगी ही कुछ अजीब सी होकर रह गई थी । वह आदमी, जिसका घर पर कभी पता ही न चलता हो, अब जैसे कैद होकर रह गया था । घर से बाहर जाने की नौबत ही न आती और घर का काम इतना कि किसी वक़्त दम

लेने की माहलत ही न थी। सुबह उठते ही चाय और नाश्ते के इन्तजाम के लिये रसोईघर में सर खपाना पड़ता था। चाय और नाश्ते के खत्म होते ही दिन के खाने का इन्तजाम शुरू हो जाता था। एक बजे दिन तक इससे फुरसत पाई तो दूसरा नौकर घर की सफाई बेगम की ट्रेनिंग देने के अलावा सीने-पिरोने की तालीम दिया करता था। वही हम थे कि कर्माज का एक-एक बटन बेगम से टकवाया करते थे। सुई पकड़ने तक की तर्माज न थी। और अब हमारे लिये सिगर मशीन अलग थी, सीने-पिरोने की थैली अलगे और कैची अलग। दिन भर कपड़ों का ढेर लगाये कुछ न कुछ सिया करते थे। खुदावरख़ यानी हमारा वह नौकर जो हमें सीना काढ़ना सिखाया करता था, हमसे बग़बन कटा करता था कि यह बड़ी ख़राब बात है कि मर्दाने कपड़े भी बाज़ार में दर्जी सिये। आपको तो चाहिये कि बेगम साहिबा के कपड़े सीना भी सीख लें। और जब हमने कहा कि उनको आप सीना आता है तो उसने बड़े ताज्जुब से कहा कि तब तो और भी शर्म की बात है कि वे औरत होकर सीना-काढ़ना जानें और आप मर्द होकर, जिनका काम ही सीना-काढ़ना है, सुई तक न पकड़ सकें। उससे हमको यह भी मालूम हो चुका था कि बेगम साहिबा लाग़ब सीना-काढ़ना जानें, लेकिन अब उनको इन कामों की फुरसत ही न मिलेगी। वे चार पैस कमाने की फ़िक्र करेंगी या ये घरेलू काम लेकर बैठेंगी। और सचमुच बेगम के बाहर के काम इतने बढ़े हुए थे कि घर में उनका पता ही न चलता था। अब हमको इतना ही मालूम था कि उनको पुलिस ट्रेनिंग स्कूल में भरती कर दिया गया है। इसलिये दिन भर वह स्कूल में रहती थीं और शाम को वहां से वापस आकर बाहर जनाने में ही उनकी बहुत सी सहेलियाँ आ जाती थीं जिनसे बैठी बातें बनाया करती थीं और हम अन्दर से भर-भर थाली पान बना-बना कर भेजा करते थे। कभी-कभी गुबरातिन—

खुदानख्वास्ता]

बाहर की नौकरानी, ब्यांड़ी में आकर आवाज देती कि बेगम साहिबा चाय मँगवा रही हैं और हमको चाय तैयार करके बड़े मलीक़े के साथ नाश्ते सहित बाहर भेजना पड़ती थी। कभी मालूम होता कि बाहर ज़नाने में ताश खेले जा रहे हैं और हम दिल ही दिल में ऐसी मजलिसें याद करके तड़प जाया करते थे। कभी यह मालूम होता कि बेगमाबाद की कोई मशहूर शायरा (कवियत्री) आई हुई हैं। उनकी शायरी सुनी जा रही है और हम अपनी साहित्यिक गोष्ठियों याद करके रह जाते थे। कभी खुदाबख़्श से कहा कि ज़रा भाँककर देखा तो बाहर क्या हो रहा है और मालूम यह हुआ कि बेगम साहिबा सेक्रेट्री साहिबा से कैरम खेल रही हैं। सारांश यह कि उनका दिल बहलाने और उनकी दिलचस्पियों के तो नित्य नये सामान थे पर हम कैद होकर रह गये थे घर में। अगर बेगम ही घर पर रहा करती तो उनसे बात करके जी बहलता पर उनको अपनी बाहर की दिलचस्पियों से ही फुसत न थी। और अगर हमने कभी इस सिलसिले में शिकायत भी की तो जवाब यह मिलता था कि तुम तो हो बेवकूफ़। तुम्हारे लिये तफ़रीहां की क्या ज़रूरत है। मैं दिमागी काम करती हूँ, सर खपाती हूँ, दिन भर ट्रेनिंग स्कूल में मंढनन करती हूँ, अगर शाम को ज़रा तफ़रीह न करूँ तो दिमाग को शान्ति कैसे मिले। तुम घरदारी करने हो, जिसमें दिमाग को काम में लाने की कोई ज़रूरत ही नहीं। बस गोंध भून लिया, तुम ही बताओ, इसमें दिमाग की क्या ज़रूरत पड़ी? दाल बघारने, रोटी पकाने और थोड़ा बहुत सीने-पिरोने के अलावा तुम्हारा काम ही क्या है। मैं दिन भर की थकी-हारी इसीलिये तो घर में नहीं आती कि तुम यह रोना रोने बैठ जाओ। औरत तो इसलिये घर में आया करती है कि मर्द उसकी तमाम थकावट दूर कर देगा, उसका मन बहलायेगा, उसमें अच्छी-अच्छी बातें करेगा। पर तुम्हारा तो ढंग ही निराला है

कि मैंने घर में कदम रखवा और तुम शिकायतों के दफ्तर लेकर बैठ गये। मैं इसका मख्त नापसन्द करती हूँ। और उनके जाने के बाद खुदाबख्श और वावर्चा अब्दुल करीम भी हमको समझाते थे कि यह आपकी भूल है। वेगम का दिल हाथ में रखिये। उनके दम से आपकी सारी खुशी है, उनसे ही आपका मुद्दाग बना है। और तज्जात को अगर कभी आपकी बातों पर गुस्सा आ ही जाय तब सब्र कर लीजियेगा। जब वह घर में आयें तब आप खुद उठकर उनके सब काम किया कीजिये। हाथ में धोने का पानी रख दीजिये, घर में पहनने वाली साड़ी देकर बाहर वाली साड़ी मँभाल कर रख दीजिये। जूता उतार कर सलीपर रख दीजिये। जब वह खाना खाने बैठें तब जरा पंखा लेकर बैठ जाया कीजिये। वह खुद आपसे ये खिदमतें न लेंगी। पर औरत का दिल मोहने के लिये मर्दों को यह करना ही पड़ता है। अब मेक्रेट्री साहिबा के मियाँ का देखिये कि बच्चों का पालन.....।”

हमने उल्लल कर कहा—“बच्चों का पालन ! क्या यहाँ यह भी होता है ?”

अब्दुल करीम ने आश्चर्य से कहा—“इसमें ताज्जुब की क्या बात है। सभी मर्द बच्चों का पालन करते हैं। ऐ और नहीं तो क्या औरतें बच्चे पालने के लिये घर में बैठी रहती हैं ?”

हमने निहायत धवरा कर कहा—“पर बच्चे तो औरत ही के पेट से होते हैं या वह भी... ..?”

खुदाबख्श ने हँस कर कहा—“आपकी भी क्या बातें हैं। मर्द के पेट से बच्चा क्योंकर हो सकता है। मगर पैदाइश के बाद ही से सारी ज़िम्मेदारी तो मर्द की होती है।”

खुदानख्वास्ता]

हमने इस सिलसिले में पूरी जानकारी हासिल करने के लिये कहा—
“औरत के बच्चे की ज़िम्मेदारी मर्द कैसे ले सकता है ?”

अब्दुल करीम ने कहा—“जिस तरह आपके देश में मर्द के बच्चे की ज़िम्मेदारी औरत ले लिया करती है ।”

हमने कहा—“मगर हमारे देश में भी बच्चा मर्द के पेट से खुदा नख्वास्ता नहीं होता ।”

खुदायग़्श ने समझाते हुए कहा—“देखिये, इसको यां समझिये कि औरत के सर तो रोज़ी कमाने की एक ज़िम्मेदारी है । दूसरे जब बच्चा पेट में होता है तो छठे महीने के बाद से उसको सवा चार महीने की छुट्टी बच्चा होने के मिलसिले में दी जाती है । यानी तीन महीने की बच्चा होने के पहले और सवा महीने की बच्चा होने के बाद । सवा महीने पर औरत नहा धोकर अपने बाहर के कामों में लग जाती है और अब बच्चे की पूरी देख-भाल की ज़िम्मेदारी मर्द पर आ जाती है । उसको दूध बना कर पिलाना, उसको नहलाना, उसको साफ़ रखना, उसको बहलाना, उसको मुलाना, मतलब यह कि सब कुछ मर्द ही करते हैं ।”

अब्दुल करीम ने कहा—“यही तां मैं जिक्र कर रहा था कि सेक्रेट्री माहिबा के घरवाले का यह हाल है कि एक तो बेचारे घर का पूरा काम करते हैं उस पर से खुदा रखे तीन छोटे-छोटे बच्चे हैं । उनकी देख-भाल अलग । फिर यह कि जरा सी भी छुट्टी मिली और वे बुनने की तीलियाँ या क्रोशिया लेकर बैठ गये । कभी किसी बच्चे का स्वेटर बुन रहे हैं कभी किसी का कनटोप, और कुछ नहीं तो मेज़पोश और तकिये के गलाफ़ों पर फूल ही काढ़ा करते हैं । घर की सफ़ाई का यह हाल है कि

आईना बना रखा है घर को, बहुत कम मर्दों में ऐसा मुघड़पन होता होगा जो उनमें है। ऐसी दस्तकारी के नमूने तो देखने में भी मुश्किल से आते होंगे। अब आप भी कोशिया और तीलियों की बुनाई शुरू कर दीजिये।”

हमने उलझते हुए कहा—“तुम लोगों को क्या पता कि मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह भी अपने दिल पर कैसा जुल्म करके कर रहा हूँ। इन कामों से भला हम मर्दों को क्या ताल्लुक, ये तो मय औरतों के काम हैं।”

खुदाबग़्श ने हाँठ पर उँगली रखकर चुप रहने का इशारा करते हुए कहा—“अगर, यह क्या गुज़ब करते हैं आप। खुदा के वास्ते ऐसी बात भी मुँह से न निकालियेगा। ये बातें बग़ावत में गिनी जाती हैं और इनकी सज़ा बहुत ही मख्त है। यहाँ यही बातें मर्दों का फ़र्ज़ समझी जाती हैं और हर शरीफ़ मर्द का फ़र्ज़ है कि वह इज़्ज़त आबरू के साथ घर बैठकर अपनी बीबी और बच्चों की जितनी भी हो सके सेवा करे और अपने सलीक़ों से घर को बनाये रखे।”

हमने तंग आकर कहा—“अब तो मय कुछ करना ही पड़ेगा जित तरह हो सकता है। सुबह से उठकर यह वक़्त आ गया है और अब तक इतनी भी मोहलत नहीं मिली कि शेव ही कर लेता।”

अब्दुल करीम ने कानों पर हाथ रख कर कहा—“खुदा के लिये यह बदशगूनी आगे कभी न कीजियेगा। बेगम साहिबा को अस्लान सलामत रखे, आप सबसे पहले सुबह उठकर शेव कर लिया कीजिये।”

हमने कुछ न समझते हुए कहा—“इमें बदशगूनी की क्या बात है और बेगम साहिबा की सलामती का इससे क्या ताल्लुक?”

खुदानख्वास्ता]

.खुदाबग़्श ने ताज्जुब से कहा —“आपको नहीं मालूम?”

अब्दुल करीम ने .खुदाबग़्श से कहा—“अरे ये बेचारे क्या जानें. तुम इनको समझा दो।”

.खुदाबग़्श ने समझाते हुए कहा—“हमारे इस देश में मर्द के सुहाग की निशानी यही है कि उसकी दाढ़ी मुड़ी हुई हो। यहाँ सिर्फ़ वही मर्द दाढ़ी रखते हैं जिनकी बीवियाँ मर जाती हैं। इसलिये यहाँ के मर्द हर हालत में दाढ़ी मुड़ाने का ख़याल सबसे ज़्यादा रखते हैं। मेहरबानी करके आप अभी जाइये और शेष कर डालिये। भोग तो न जाने क्यों दिल बहुत धबका रहा है।”

अब्दुल करीम ने कहा—“आपके मुत्क में भी तो सुहाग की कांडें न कोई निशानी होती होगी।”

हमने कहा—“वहाँ मर्द का सुहाग हाँ कब होता है जो उसकी निशानी हो। वहाँ तो मर्द के दम से औरत का सुहाग कायम रहता है और सुहागिनी औरतों के लच्छन दूसरे होते हैं। जैसे उनके हाथों में चूड़ियाँ होती हैं, वे रंगीन लिबाम पहनती हैं। चूड़ियों का टूटना और सुहागिनो का सफ़ेद कपड़े पहनना बदशुगूनी समझी जाती है।”

“बिल्कुल उलटी बात।” .खुदाबग़्श ने कहा—“जिस तरह वहाँ चूड़ियों का टूटना बदशुगूनी है उसी तरह यहाँ दाढ़ी का बढ़ना बदशुगूनी है। यहाँ तो बहुत से घरानों में रंडुवे मर्दों का सर भी मूँड़ दिया जाता है और दाढ़ी छुड़वा दी जाती है। पर यह सब घरानों में नहीं है। अलबत्ता दाढ़ी तो कोई रंडुवा क़ानूनन रख ही नहीं सकता।”

हमने हैरत में यह कायदा सुनकर कहा—“मुझे कभी तो हँसी आती है और कभी इस ज़िन्दगी पर गुस्सा आता है कि मैं किस जंजाल में

फँस गया। इसमें अच्छा तो यह था कि हमारी किरती इधर ही जाती। अच्छा यह बताओ कि यहाँ से हमको कभी छुटकारा भी मिलेगा ?”

खुदावरख ने कहा—“वेगम साहब जय चाहें, आपको लेकर जा सकती हैं। आप अकेले नहीं जा सकते और न वगैरह उनकी मर्जी के जा सकते हैं। यह ट्रेनिंग के छः महीने बिता कर वेगम साहब बिल्कुल आजाद होगी कि वे जो जी चाहें करें।”

अब्दुल करीम ने कहा—“मगर वेगम साहब भला क्यों जाने लगीं उस देश में जहाँ मुना है कि औरतों के साथ बर्ही मुलूक होता है जो यहाँ मर्दों के साथ होता है। कौन औरत इसको पसन्द करेगी कि वह अपनी यह आजादी और यह हुकूमत छोड़ कर वह कैद और गुलामी लें। अच्छा, यह बात तो फिर हो सकती है। मुझे घबराहट हो रही है आप में। आप पहले शेष कर लीजिये।”

हम बुझे हुए दिल के साथ उठे और आईने के सामने शेष करने के लिये बैठ गये।

तीन

आज हमारे यहाँ सेक्रेट्री साहबा के घरवाले आने वाले थे। बेगम ने हमको खाम हिदायते दे रखी थी कि घर अच्छी तरह साफ़-सुथरा रहे और पूरी-पूरी खानिर हों। इसके अलावा यह भी कह दिया था कि बाहर जनाने में सेक्रेट्री साहबा भी खाना खायेगी। चुनांचे दावत का भी इन्तज़ाम था। हमको अब रोज़ का मामूली खाना बनाना तो आ गया था मगर अभी दावत के लिये अच्छे-अच्छे खाने बनाने नहीं आते थे। अब्दुल करीम ने इस दावत का इन्तज़ाम खुद ही किया और हमने खुदाबरख़श की मदद से सारे घर की सफ़ाई की, खुद भी नया सूट निकाल कर पहना और बाहर भेजने के लिये पान बनाने लगे कि ठीक उसी समय ड्योर्दी में आवाज़ आई—“सवारी उतरवा लो।”

खुदाबरख़श ने कहा—“लीजिये, वह आ गये सेक्रेट्री साहबा के घरवाले।”

और हमने ड्योर्दी तक जाकर उनका स्वागत किया। वह डोली में भी बुर्का पहन कर बैठे थे। हालाँकि चार क़दम आना था उनको, मगर इतना कड़ा पर्दा था कि न पूछिये। डोली से उतर कर पहला सवाल यही किया कि “कोई औरत तो नहीं है घर में?” और जब हमने विश्वास दिलाया कि कोई नहीं है तब वह तशरीफ़ लाये अन्दर, और कमरे में पहुँच कर बुर्का उतारने के बाद अपनी टाई ठीक की। हमने बातचीत का सिलसिला छेड़ने के लिये कहा, “आपसे मिलने की ऐसी

तमन्ना थी कि मैं क्या कहूँ। मगर मैं यहाँ अजनबी, और आपने कभी तकलीफ़ नहीं की।”

मेक्रेट्री साहबा के शौहर ने ग़ालिस घरेलू अन्दाज़ में कहा, “क्या बताऊँ, खुद मेरा बहुत ज़ी चाहता था आपसे मिलने को। घर के भगड़े मोहलत ही नहीं देते। छोटे बच्चे की आँखें दुख रही थीं, उससे बड़े बच्चे को खाँसी ऐसी है कि जब दौरा पड़ जाता है, पेट में साँस नहीं समार्ता। डाक्टरनी का इलाज महीने भर तक हुआ। जब उसमें कोई फ़ायदा न देखा तो मैंने इनसे कहा कि किसी हकीमिन को दिखा दे। अब अहमदी ग़ानम साहिबा हकीमिन का इलाज हो रहा है और खुदा की मेहरबानी से फ़ायदा भी है। इनको अपने सरकारी कामों से फ़ुरमत नहीं मिलती। दिन भर बाहर ही रहती हैं, और फ़ुरमत मिले भी तो मैं इसको पसन्द नहीं करता कि मेरे होते मर्दाना काम यानी बच्चों की देख-भाल और दूमरे घरेलू काम वह औरत होकर करें।”

मेक्रेट्री साहबा के ये शौहर या तो बड़े शानदार मर्द थे, अच्छे ग़ासे क़द और हाथ पाँव के आदमी, खुलता हुआ गोरा रंग, बड़ी-बड़ी तावदार मूँछें, दाढ़ी मुँड़ी हुई, इसलिये कि खुदा रक्खे मुहागवान थे। वड़ा ही मुन्दर फैशनेबुल सूट पहने, क्रीमती टाई बाँधे, सर पर बड़े-बड़े अँग्रेजी बाल, जो हिन्दुस्तानी विधवा औरतों की तरह बिल्कुल उलटे हुए यानी बेमांग के थे, अच्छा ग़ासा रोबदार चेहरा, लेकिन बातें ऐसी कि लगता था कि वह बातें कर ही नहीं रहे हैं। हमने ताज्जुब से उनकी बातें सुनकर कहा—“मगर कमाल है, आप घरेलू काम-काज भी करते हैं और बच्चों की देख-भाल भी।”

उन्होंने मूँछों को ठीक करते हुए कहा—“तो फिर क्या करूँ। रिश्तेदारों में ऐसा कोई मर्द नहीं जो बेगम साहबा के सामने आ सके

‘खुदानखवास्ता’]

और नौकरों पर मुझे इतना भरोसा नहीं कि घर उन पर छोड़ दिया जाय। अलबत्ता आप तो फिर भी आजाद हैं। अभी कम से कम बच्चों ही के भगड़े में नहीं फँसे।”

मैंने कहा—“अरे साहब, जितनी पायंटियाँ बगैर बच्चों के मेरे सर हैं, मेरे लिये तो वही वरदास्त में बाहर हैं। मैं तो जिन्दगी भर इस सारी मुमीबत में आजाद रहा। मेरे देश में भला मर्दों को घर के चूल्हा-हांडी और सीने-पिरोने में क्या मतलब?”

वह घबरा कर बोले—“अरे, तो फिर कौन करता है घर का मारा इन्तजाम?”

“वहाँ तो औरतें यह सब कुछ करती हैं।”

वह बोले—“और मर्द बैठ देखा करते हैं?”

हमने कहा—“जी नहीं, मर्द अपने रोज़ी-रांजगार के धंधे देखते हैं, नौकरी-चाकरी और रोज़ी कमाने के दूसरे काम उनके लिये होते हैं।”

सेक्रेट्री साहब के शौहर ने ताजुब में कहा—“लाहौल विला कुवत। और औरतें ऐसी बेहया होती हैं कि मर्दों की कमाई खाती हैं?”

हमने कहा—“इसमें हया और बेहयाई का क्या मवाल। वहाँ औरतें हाँती ही हैं मर्द की मोहताज।”

वह उमी तरह ताजुब से बोले—“अजीब मुल्क है आपका और अजीब रिवाज है वहाँ का। यहाँ तो यह औरत के लिये मर जाने की बात है कि वह अपनी जिन्दगी में मर्द को बाहर निकाले कमाई करने के लिये और आप घर में बैठ कर मर्द की कमाई खाये। और वहाँ के मर्द भी खूब हैं जो बाहर निकलते हैं कमाई करने के लिये। तो क्या वहाँ पर्दा बिल्कुल नहीं है?”

हमने कहा—“है क्यों नहीं। वहाँ औरतें पर्दा करती हैं।”

वह एकदम इस बुरी तरह हँस रहे हैं जैसे किसी ने कोई बड़ा ज़बर्दस्त चुटकुला सुना दिया हो। बड़ी मुश्किल से हँसी को क़ाबू में लाकर बोले—
“क्या मचमुच औरतें पर्दा करती हैं और मर्द बेपर्दा रहते हैं? यानी आपका मतलब यह हुआ कि औरतें बुर्का पहनती होंगी और डोली में बाहर निकलती होंगी।”

हमने उनकी इस हँसी पर ताज्जुब करते हुए कहा—“जी हाँ औरतें बुर्का पहनती हैं और औरतें ही डोलियों में या पदंदार गाड़ियों में निकला करती है। औरतों के लिये थियेटर और सिनेमा में, यहाँ तक कि रेलगाड़ियों में भी जनाने दर्जे होते हैं।”

वह बोले—“खैर जनाने दर्जे तो यहाँ भी अलग होते हैं हर जगह, मगर वह बहुत बड़े होते हैं और उनमें ही एक तरफ़ पदंदार दर्जा होता है मर्दाना जिसमें पदों का ग़्वास ग़्वाल रखा जाता है हम शरीफ़ बेटों, दामादों के लिये। मैं तो आपकी बातों को इस तरह ताज्जुब से सुन रहा हूँ जैसे कोई सपना देख रहा हूँ। और हँसी आ रही है इस बात पर कि कैसी अजीब बात मालूम होती होगी यह कि औरत डोली में चली जा रही है बुर्का ओढ़े। तो क्या आपकी बेगम साहबा भी इसी तरह बुर्का पहना करती थीं?”

हमने कहा—“जी हाँ, बिल्कुल पदों में रहती थी, बस इसी तरह जिस तरह यहाँ आकर मैं मुर्माबत में फँस गया हूँ।”

उन्होंने जैसे बड़े ताज्जुब से पूछा—“अच्छा, यह तो बताइये कि आप खुद कैसे बेपर्दा बाहर निकलते होंगे। मुझे तो कोई अगर बग़ैर बुर्के के सड़क पर छोड़ दे तो मैं वहीं पर बैठ जाऊँ अपने कोट से मुँह छिपा कर। एक क़दम तो मुझसे चला न जाय। अभी मैं डोली पर आया हूँ तो जब तक क़हारिने ड्योढ़ी में बाहर नहीं चली गईं, मैंने डोली के बाहर क़दम नहीं रक्खा।”

खुदानखास्ता]

हमने अचरज से कहा—“क्या कहा, कहाँ रहें ? यानी औरतें आपको डोली में लाई हैं ?”

वह हमसे भी ज़्यादा ताज्जुब से बोले—“और नहीं तो क्या मर्द डोली उठाते हैं ?”

हमने कहा—“जी हाँ, हमारे यहाँ तो कहाँ होते हैं डोली उठाने के लिये।”

उन्होंने कहा—“आपके यहाँ की तो दुनिया ही निराली है। औरतें डोली में बैठती हैं, मर्द डोली उठाते हैं। यहाँ तो यह तमव्वुर (कल्पना) ही ऐसा अजीब मालूम होता है कि हँसी भी आ रही है और ताज्जुब भी हो रहा है।”

हम कुछ कहने ही वाले थे कि बाहर से बेगम की आवाज़ आई—
“अरे, मैंने कहा, सुनते हो ? भाई साहब से मेरा सलाम कह दो।”

सेक्रेट्री साहबा के शौहर ने इशारे से कहा कि मेरा भी सलाम कह दो। चुनांच हमने डबोड़ी के पाम जाकर कहा—“वह भी तुमको सलाम कह रहे हैं।”

बेगम ने जैसे डाँटते हुए कहा—“इतने जोर से तो न बोलो। मालूम है कि बाहर गैर औरतें बैठी हैं, वह क्या कहेंगी ? वह भी अपने दिल में कहेंगी कि कैसा बेशर्म मर्द है। ज़रा तो तुमको खयाल होना चाहिये। अपना नहीं तो कम से कम मेरा तो खयाल किया करो कि बाहर इस औरत की जो थोड़ी बहुत इज़्जत है उसमें बट्टा न लगे। एक उनको देखो सेक्रेट्री साहबा के शौहर को, आविर वह भी तो मर्द हैं। मैंने सलाम कहलाया तो उसका जवाब भी उन्होंने तुमसे कहलवाया है। और एक तुम हो कि चिल्ला रहे हो डबोड़ी में खड़े हुए।”

हम अचरज से बुत बने जो कुछ क्रिस्मत सुनवा रही थी, उन बेगम साहबा से, वह सब सुन रहे थे जिनसे हम खुद कभी इस तरह

की बातें किया करते थे। सच पूछिये तो हमारा यह ज्वल (सहनशीलता) क्राबिले-तारीफ़ था। जिस मर्द ने हमेशा हुकूमत की हो, जिसने कभी किसी की आधी बात न सुनी हो, जो हमेशा सरताज और मालिक बन कर रहा हो, जो सही मानों में मद हो, औरत न हो, जिससे हमेशा बीबी ने यह कहा हो कि मैं तुम्हारी मामूली लोन्डी हूँ, जिसकी नाराज़ी पर बीबी के पास मिवाय राने-धाने के कोई चारा ही न हो वह आज .खुद बीबी से ये बातें सुने। .खुदा की शान नज़र आ रही थी हमको और हम चुप थे। आग़िर बेगम माहवा ने ड्योढ़ी में खड़े-खड़े ही हमारी अच्छी तरह गत बनाने के बाद कहा—“खुदा के वास्ते अब ऐसी कोई बात न कर डालना कि मैं कहीं मुँह दिखाने के क्राबिल ही न रह जाऊँ। ट्रेनिंग की मुदत ख़त्म होने वाली है। अब हमको आज़ादी की ज़िन्दगी बितानी है। मेरा ख़याल है कि मेक्रेट्री साहवा के घरवाले इसीलिये आये हैं कि वह तुम्हारे तौर-तरीक़े देखकर सरकार में रिपोर्ट भिजवायें कि हमने इस देश के रहन-सहन का अपने को किस हद तक आदी बना लिया है। बाहर तो मेरे बारे में रिपोर्ट बहुत अच्छी है लेकिन .खुदा बचाये तुम अक़ल के कोरे मर्दों में। न जाने कहाँ लुटिया डुबो दो।”

बाहर से सेक्रेट्री माहवा की खनकती हुई आवाज़ आई—“सईदा बहन, यह क्या ड्योढ़ी में गुपचुप बातें हो रही हैं जो किसी तरह ख़त्म होने में ही नहीं आती। मालूम होता है कि हमारे भाई माहव ने दामन पकड़ रखवा है। और मेरा सलाम भी कह दिया था?”

बेगम ने ऊँची आवाज़ में कहा—“बहन, वह .खुद तुमको सलाम कह रहे हैं। मैं इतनी देर में यहाँ कट रही हूँ कि आग़िर तुम .खुद क्यों नहीं सलाम कह देते, लेकिन बेचारे शर्मिये ही जाते हैं हालांकि मैंने इनको समझा दिया है कि मेरे और बहन जमाल आग (सेक्रेट्री

खुदानख्वास्ता]

साहब) के तान्त्रिकान ऐसे ही हैं कि अगर तुम्हारी आवाज़ उनके कानों तक पहुँच भी जाय तो कोई हर्ज नहीं है मगर वह गूँगा की तरह खड़े इशारे कर रहे हैं ।”

जमाल आरा ने कहा—“ठीक है, मैं तो बहुत खुश हूँ कि भाई साहब ने इस देश के भले और घरेलू मर्दों के तरीक़ों और तहजीब (सभ्यता) को बहुत जल्द अपना लिया ।”

बेगम ने हमारी तरफ़ से, बिना हमारे कुछ कहे हुए कहा—“वह आपका शुक्रिया अदा कर रहे हैं और कह रहे हैं कि खुदा करे आपने मेरा हौमला बढ़ाने के लिये यह सब न कहा हो बल्कि सचमुच ही ऐसा ही । और यह शिकायत कर रहे हैं कि आपने अपने शौहर नामदार को ऐसा छिया कर रक्खा है कि इतने दिनों के बाद आज दर्शन हुए हैं ।”

जमाल आरा ने अपनी उसी दिलरुबा आवाज़ में कहा—“अरे वहन, उनसे कह दो कि जब तक गोद खाली है, जितना चाहें बढ़-चढ़ कर बात बना लें । मेरे शौहर की तरह जब बच्चों के भ्रमलों में फँसेंगे उस समय पता चलेगा कि फ़रमत किम चिड़िया का नाम है, और अब तो दोनों में मुलाक़ात हो ही चुकी है । अब भाई साहब से कह दो कि वह खुद ग़रीबख़ाने पर तशरीफ़ लाये किसी दिन ।”

बेगम ने हमारी तरफ़ से, बिना हमारे कहे कह दिया—“कह रहे हैं कि जरूर आऊंगा मगर इस ट्रेनिंग घर में तो निकल जाने दीजिये ।”

जमाल आरा ने कहा—“आखिर आप लोग बिला वजह ट्रेनिंगघर को जेल क्यों समझे हुए हैं । यहाँ तो राज्य के बहुत ही इज़्जतदार मेहमान ठहराये जाते हैं और आप लोगों के अलावा अब तक तो यहाँ सिर्फ़ वही अपने फ़न की माहिर् औरते बुला कर रखी जाती थीं जिनकी मदद की इस राज्य को जरूरत हुआ करती थी और जो

“नाजु किस्तान” के बाहर से आकर इस ट्रेनिंग घर में नाजु किस्तान के तौर-तरीक़े और यहाँ की सामाजिक शिक्षा हासिल करती थी। उनमें से अक्सर के साथ मर्द भी होते थे जिनको घरेलू और दूसरे मर्दाना कामों की तालीम दी जाती थी जिसमें कि वे नाजु किस्तान से बाहर के तौर-तरीक़े यहाँ न फैला सकें। आप लोगों के साथ तो हुक़ूमत ने बड़ी रिश्तायत की है कि बिना किसी फ़न (कला) की महारत के और वहाँ बाहर से बुलाये हुए आपको वहीं दर्जा दिया जा बुलाये हुए सरकारी मेहमानों को दिया जाता है। अब बहुत जल्द आप यहाँ की आज़ाद और जिम्मेदार जिन्दगी बिताने का हक़ हासिल कर लेंगी, और मिटाई ख़िलाइये तो एक खुशख़बरी और भी सुना दें।”

बेगम ने बेताब होकर कहा—“तुमको मेरी क्रमम जमाल आग बहन, खुशख़बरी सुना दो, फिर जितनी चाहे मिटाई खा लेना।”

जमाल आग ने कहा—“आज ही होम मिनिस्ट्री की एक चिट्ठी आई है और तुमको सीतापुर सूबे की राजधानी राधानगर में शहर कोतवालिनी बनाया गया है। पहली जनवरी को तुमको यहाँ की गवर्नरिन के सामने पेश किया जायगा जा तुम्हें ख़ानम बदादुरनी का ख़िताब देंगी।”

बेगम ने ख़ुशी से एक छुलांग बाहर जनाने की तरफ़ लगाई और हमने भाँक कर देखा कि वह मारे ख़ुशी के जाते ही जमाल आग से लिपट गई और हम यह सोचते हुए अपने महमान के पास वापस आ गये कि या ख़ुदा यह ख़ानम बदादुरनी क्या बला है? लेकिन फिर एकदम हमारी समझ में आ गया कि यह ‘ख़ानबदादुर’ की तरह की कोई चीज़ होगी।

चार

पहली जनवरी की सुबह हमारी इस ज़िन्दगी के एक और इन्कलाब का साथ लाई । आज ट्रेनिंग-घर में सुबह से ही चहल-पहल थी । दर-असल आज बेगम का 'गवर्नरिन' माहिवा के दरबार में जाकर अपने ओहदे का चार्ज भी लेना था और वह 'श्वानम बहादुरनी' का खिताब भी हासिल करने वाली थी । लेकिन ट्रेनिंग-घर में चहल-पहल इसलिये थी कि जमाल आरा ने इस खिताब की खुशी में और बेगम की विदाई के सिलसिले में एक पार्टी दी थी । बेगम ने हमको बता दिया था कि दो एक बेगमों के शौहर भी अन्दर मर्दाने में तुमसे मिलने और तुमको बधाई देने आयेंगे । इसलिये हमने भी घर में खूब इन्तज़ाम कर रक्खा था । अब हम कोई रंगरूट तो रहे नहीं थे कि इन्तज़ाम और मेहमान-दारी में घबरा जायें । अब तो एक से एक खाना हम बना लेते थे, एक से एक कपड़ा हम सी लेते थे । बेगम आजकल हमारे ही हाथ का बुना हुआ स्वेटर पहने घूम रही थीं और हम खुद अपना मिया हुआ कोट पहनते थे । बेगम के कपड़े अलबत्ता दर्जनों के कारखानों में सिलते थे, इसलिये कि वह ठहराई हर तरफ़ आने-जाने वाली । उनके जम्पर की सिलाई-कटाई में हाथ की जो सफ़ाई चाहिये थी वह अब तक हमारे हाथों में न आई थी । फिर भी अब हमारे इन्तज़ाम के ढंग से बेगम को इतमीनान था और हम खुश थे कि हमारी सरताज अपने इस अदना-गुलाम से अब खुश हैं ।

आज बेगम बहुत खुश थी और होना भी चाहिये था। उनको इतना बड़ा ओहदा और इतनी बड़ी इज्जत मिलने वाली थी। उनकी खुशी देख-देख कर हम भी फूले न समाते थे, इसलिये कि हमारी खुशी जिनके दम से थी वह खुश थी तो हम क्यों खुश न होते। दिल से दुआ निकल रही थी कि या अल्लाह ! तू मेरी सरताज को रहती दुनिया तक सलामत रख। यह अपने हाथों मेरी मिट्टी ठिकाने लगा दे तो मैं समझूँ कि मैं खुशनर्माव हूँ। आज मैंने पाँच वक़्त की नमाज़ के अलावा शुक्राने की नमाज़ भी पढ़ी थी। जी हाँ, अब मैं नमाज़ भी पढ़ने लगा था इसलिये कि खुदा को याद करने के लिये अब वक़्त मिल जाया करता था। अलवत्ता बेगम, जो पहले किसी वक़्त की नमाज़ न छोड़ती थीं, अब बड़ी मुश्किल से नमाज़ के लिये वक़्त निकाल सकती थीं। आज बेगम सुबह में ही गवर्नरिन साहिबा की पेशी में जाने की तैयारियाँ कर रही थी। सुबह उठते ही उन्होंने हाथ पैरों में मेहदी लगाई। आज के लिये वह दूँद कर निहायत क़ीमती लिपिस्टिक और निहायत आला दर्जे का सेन्ट लाई थीं। मगर हम हैरान थे कि हमको किसी रास लिबाम के बारे में कोई हिदायत नहीं दी है कि यह भी साड़ी निकाल देना, यह ब्लाउज हो, इस क्रिस्म का जूता हो, एंमे मोज़े हो। आखिर हमने आप ही उनके सोने के कमरे में जाकर पृच्छा—“आपने यह नहीं बताया कि कपड़े कौन से निकाल दूँ ?”

बेगम ने बड़े प्यार से हमको देखते हुए कहा—“नहीं डालिंग ! तुम कपड़े निकालने की तकलीफ़ न करो। मेरी वर्दी आती ही होगी। मैं वहीं पहन कर जा सकता हूँ।”

हमने कहा—“और ज़ेवर ?”

“मालूम नहीं मेरी वर्दी में कौन-कौन सा ज़ेवर शामिल होगा। फिर भी, वह भी वर्दी के साथ ही आयागा। सरकारी मामला है, घरेलू

खुदानखास्ता]

ज़ेवर तो मैं पहन ही नहीं सकती ।”

बेगम यह कह ही रही थी कि बाहर की नौकरानी नफ़ीसा ने आवाज़ दी—“खुदायग़श, यह वर्दी ले जाओ सरकार की और इस काग़ज़ पर दस्तख़त करा दो ।”

खुदायग़श ने दौड़ कर नफ़ीसा में दरवाज़े की आड़ ही में से एक सूटकेस ले लिया और एक काग़ज़ । हमने वह काग़ज़ बेगम के सामने पेश कर दिया । बेगम हाथों की मेंहदी छुड़ा रही थी । हमसे क़लम माँगते हुए कहा—“रसीद देना है वर्दी की । ज़रा सूटकेस खोल कर हर चीज़ मिला तो लो इस ‘लिस्ट’ में । मैं बोलती जाती हूँ एक-एक चीज़ ।”

हमने सूटकेस खोलकर कहा—“हाँ बोलिये ।”

बेगम ने सूची पढ़नी शुरू की—“सिल्क की साड़ी एक, ब्लाउज़ ब्रोक्रेड एक, बनियान सिल्क की एक, अंगिया एक, पेटीकोट सिल्क का एक, अंडरवियर सूती एक । मोड़े सिल्क के एक जोड़, हाई हील शू एक जोड़, पर्स एक ।”

हमने कहा —“हाँ, ठीक है सब । साड़ी बहुत ही अच्छी है ।”

बेगम ने कहा—“अच्छा अब पर्स के अन्दर की चीज़ें मिला लो—पौडर पफ़ एक, पौडर केस एक, लिपिस्टिक एक, काटेंज, कंधा एक, आइना एक, दस्तो रुमाल एक ।”

हमने कहा —“जी हाँ, यह भी ठीक है और सब मामान बहुत क़ीमती है ।”

बेगम ने कहा—“इसमें जो गहने ज़ेवरों का बक्स है उसे भी खोल कर ज़ेवर मिला लो । सोने की आठ चूड़ियाँ, सोने की अंगूठी हीरे के नगवाली एक, सोने की अंगूठी लाल नगवाली एक, सोने का जड़ाऊ

हार, हीरा चार दाना, लाल आठ दाना, टीका जड़ाऊ सरकारी निशान सहित एक, चांदी की पेटी मुनहरी मोहर सहित एक ।”

हमने कहा—“यह भी सब ठीक है । इतना बहुत सा ज़ेवर—यह सब वर्दी में शामिल है ?”

बेगम ने कहा—“हाँ हाँ, वर्दी ही में तो शामिल है, और नहीं तो क्या मैं बनवाती ? अच्छा और देखिये, पिस्तौल एक, कटार एक, कारतूस पिस्तौल के एक सौ, मीठी एक ।”

हमने कहा—“जी हाँ, यह भी सब ठीक है ।”

बेगम ने रसीद के कागज़ पर दस्तखत करते हुए कहा—“लीजिये, यह बाहर नफ़ीसा को भिजवा दीजिये और उसमें कह दीजिये कि मैं अभी नहाने आ रही हूँ, सामान ठीक रखें । और आप इस सूटकेस को ठीक से बन्द कर दीजिये ।”

हमने बेगम की सारी हिदायतों पर अमल किया और इस बीच में बेगम ने अपने हाथों और पैरों की मेंहदी छुड़ाकर नहाने की तैयारियां शुरू कर दीं । वह सूटकेस भी बाहर ही चला गया । जब बेगम बाहर जाने लगीं तो हमने बड़ी खुशामद में कहा—ज़रा वर्दी पहन कर जाने से पहले मुझे भी एक नज़र अपने को दिखा जाना ।”

बेगम ने बड़ी मुस्तेदी में कहा—“हाँ हाँ, ज़रूर । भला तुम ही न देखोगे तो कौन देखकर खुश होगा ?”

बेगम के जाने के बाद हमने उनका कमरा खुद ठीक किया और जल्दी-जल्दी उनके लिये नाश्ते का इन्तज़ाम कर दिया जिसमें कि वह यांही न चली जायें बिना कुछ खाये पिये । नाश्ता तैयार हो ही चुका था कि बेगम अपनी कोतवालिनी की वर्दी में जगमग-जगमग करती अन्दर आ गईं और हमने सचमुच उनको देखते ही एक बार तो यह सोचकर आँखें बन्द कर लीं कि कहीं हमारी नज़र न लग जाय और

खुदानखास्ता]

फिर प्रौरन बढ़कर वलैयां ले लीं और उन पर से कुछ चाँदी उतार कर मोहताजों को देने के लिये रख लीं। बेगम ने जल्दी-जल्दी नाश्ता किया।

फिर जल्दी-जल्दी लिपस्टिक से अपने गुलाबी हाँठों को और भी लाल बनाया और बाहर जाने लगीं तो हमने कहा—“बेगम, खुदा तुम्हारी हिकाजत करे और तुम्हें और तरक्की दे।”

बेगम ने एक जान लेने वाले अन्दाज़ में हमको देखा और कमर-पेटी में बँधे हुए रिवाल्वर या उस पेटी में लगी हुई नाजुक सी कटार से नहीं बल्कि निगाहों के तीर और अबरू के उस ख़ाज़र से, जो हर औरत की कुदरती बर्दा के हथियार हैं, हमको बेमौत मारती हुई एक छलावे की तरह बाहर जनाने में चली गईं जहाँ मोटर उनको गवर्नरिन साहिबा के दरबार में ले जाने को तैयार खड़ी थी।

बेगम के जाने के थोड़ी ही देर बाद सिद्दीक़ भाई यानी जमाल आरा साहबा के घरवाले आ गये और हमारे साथ घर के इन्तज़ाम में घरवालों की तरह लग गये। हमने पानदान उनको सौंप दिया कि लो भाई बाहर जनाने और मर्दाने के लिये पानों का इन्तज़ाम तुम्हारे ही ज़िम्मे है। लेकिन उन्होंने बताया कि यहाँ का जश्न (उत्सव) चूँकि खुद उनकी बेगम साहबा और उनके स्टाफ़ की तरफ़ से है इसलिये वह खुद पानों का इन्तज़ाम करके आये हैं। मर्द मेहमान आर्येंगे जरूर इमी घर में, लेकिन उनकी खातिर भी हमारी तरफ़ से नहीं बल्कि ट्रेनिंग-घर के स्टाफ़ की तरफ़ से होगी।”

हम लोग ये बातें कर ही रहे थे कि बाहर से आवाज़ आई—
“सवारी उतरवा लो।”

और सिद्दीक़ भाई ने झुकी तक जाकर स्वागत किया। डोली का पर्दा उठा तो फ़्लैट हैट लगाये, क्लीन शेव किये ख़ालिस अंग्रेज़ी ढंग के एक नौजवान निकले। भाई सिद्दीक़ ने बड़े जोश से उनका स्वागत

करते हुए उनका तआरुफ़ (परिचय) हमसे कराया—“आप हैं मि० रफ़ी-उद्दीन, खानम साहब सरवरी बेगम, इन्स्पेक्ट्रेस पुलिस के शौहर, और रफ़ी भाई, ये हैं खानम बहादुरनी सईदा खानम साहब के शौहर।”

रफ़ी साहब ने बड़े जोश में हाथ मिलाया और हम दोनों वानें करते हुए उस कमरे तक आये जहाँ बैठने का इन्तज़ाम था और जहाँ से पर्दे के साथ बाहर जनाने की मँग हम लोग कर सकते थे। अभी हम कमरे तक पहुँचे ही थे कि फिर आवाज़ आई—“भवारी उतरवा लो।”

सिद्दीक़ भाई फिर स्वागत के लिये दौड़े और इस धार डोली में एक साहब को लाये जो सिर्फ़ धोती और कुर्ते में थे। सिद्दीक़ भाई ने उनका तआरुफ़ करते हुए पहले हमारी तारीफ़ उनसे की और फिर हमसे कहा—“आप देवी बहादुरनी लाजवन्ती सक्सेना के पति श्री राज-किशोर हैं। आपकी श्रीमती जी यहाँ की बहुत मशहूर वकीलनी हैं और जल्द ही हाईकोर्ट की जजिन होने वाली हैं।”

उनके परिचय के बाद ही फिर किसी की सवारी आई। बाहर पर्दे माँगे गये, इसलिये कि सवारी मोटर में थी। पर्दे के बाद मोटर से जो सज्जन उतरे वह तुर्की टॉपी और शेरवानी में थे। सिद्दीक़ भाई ने बढ़ कर उनसे हाथ मिलाया और हमको उनसे मिलाते हुए पहले तो हमारी तारीफ़ की इसके बाद हमको बताया कि आप हैं सर मुहम्मद अमीन यानी लेडी आमना खानम फ़ाइनेन्स सेक्रेट्री के शौहर।

हमने ताज्जुब से कहा—“आप पहले साहब हैं जिनके नाम के साथ सर का ख़िताब है, नहीं तो मैंने यहाँ मर्दों के ख़िताब मुने ही नहीं।”

वह तो मुस्कुरा दिये पर सिद्दीक़ भाई ने कहा—“यहाँ ‘सर’ अपनी जगह पर कोई ख़िताब ही नहीं है। असल ख़िताब तो ‘लेडी’ है जो आपकी बेगम साहबा को मिला था, और यहाँ का तरीक़ा यह है कि

खुदानखास्ता]

जिस किसी औरत का 'लेडी' का खिताब मिलता है उसके पति को सर कहा जाता है ।" हम फौरन इस 'सर' का मतलब समझ गये कि जिम तरह हमारे यहाँ सर का बीबी लेडी होती है उसी तरह यहाँ लेडी का मियाँ सर होता है । साराश यह कि इसी तरह बहुत से खिताबधारी बावियों के मियाँ, बहुत सी ऊँचा आहवेदारनियों के शौहर, बहुत सी ताल्लुकदारनियों के घरवाले हमारे यहाँ जमा हो गये और उधर बाहर जनाने में प्रतिष्ठित महिलाएँ जमा होती रहीं जिनकी तादाद सैकड़ों के करीब थी । कोई महिला सिगरेट पी रही थी, किसी के हाथ में सिगार था जो उसी तरह बेंतुका सा मालूम हो रहा था जिस तरह औरतों का डंडा हाथ में लेकर टहलना । लेकिन बाहर जनाने में बहुत सी नाजूक-बदन औरतें बड़े मोटे-मोटे डंडे लिये हुए थीं । हमारी बेगम अपनी उसी बर्दी में खानम बहादुरनी का तमगा गले में पहने औरतों से मिल रही थीं या मिलाई जा रही थीं । आखिर तालियों की गूँज में एक सोफे से जमाल आरा यानी ट्रेनिंग-घर की मेक्रेटी साहबा उठीं और उन्होंने अपनी मीठी और रसीली आवाज में एक छोटा सा भाषण देकर हमारी बेगम की योग्यता और क्षमता को सराहते हुए कहा—

“मुझे गर्व है कि इस ट्रेनिंग-घर में आज से छः माह पहले आप एक नये गिरफ्तार क्रेन्टी की हैमियत में आई थीं जिनको पहले अपराधिनी के रूप में हर लेडी मेह आरा चीफ जजिन की अदालत में पेश किया गया था । लेकिन हर लेडीशिप ने आपके अन्दर छिपी हुई योग्यताओं को देखकर आपको इस ट्रेनिंगघर में मेहमान के रूप में भेजा और आज वह अपराधिनी इस राज्य की एक जिम्मेदार पदाधिकारिणी होकर, राज्य में एक सम्मानित खिताब हासिल करके अपनी आज्ञाद और जिम्मेदार जिन्दगी बिताने के लिये समाज में कदम रख रही है । मैं इनकी सफलता पर खुश हूँ मगर इनके इतने दिनों के साथ के बाद

इनकी जुदाई का जो सदमा मुझको है वह मेरी खुशी को दबाये देता है। मेरी एक आँख हँस रही है और एक आँख बहा रही है। लेकिन मैं खुदगर्जी से काम न लेते हुए अपने इस रज को इनकी खुशी पर कुरबान करके इनको खुशी से विदा करती हूँ।”

जमाल आग के इस भाषण के बाद वेगम ने भी एक जरा से भाषण में नाजु किस्तान सरकार की इस गुरीबनवाजी की तारीफ़ की और खुले शब्दों में खुद अपने देश को कोसते हुए कहा—“वह मेरा देश नहीं लेकिन उसके जहन्नुम होने से इन्कार नहीं किया जा सकता। यह परदेश में लिये जन्नत से कम नहीं और मैं इस जन्नत को छोड़कर फिर उस जहन्नुम की तरफ़ जाने को कभी तैयार नहीं हो सकती।”

वहाँ तो तालियाँ बजने लगीं और हम वेगम के मुँह से यह सुनकर कि वह अब कभी हमको इस कैद से छूटने न देंगी, निडाल होकर अपनी कुर्मी पर पड़े रह गये।

पाँच

राधानगर, जहाँ बेगम कोतवालिनी की हैसियत से तैनात हुई थीं, एक बड़ा अच्छा और खूबसूरत शहर था। बेगमगंज से किसी भी हालत में कम सुन्दर नहीं कहा जा सकता। हालाँकि बेगमगंज नाजुकिस्तान की राजधानी है और बेगमगंज में छः महीने तक रह कर हम वहाँ के लिये बड़ी दूरी तक अजनबी न रहे थे। खैर, हमारे लिये तो यहाँ भी कैद थी और वहाँ भी। लेकिन वहाँ सिर्दाऊ भाई के कारण ज़रा मन बहल जाता था। वह तो कहिये बेगमगंज से चलने के वक़्त अब्दुल करीम और खुदाबक्श दोनों घरेलू नौकर हमारे साथ ही आये थे और बाहर की नौकरानियों में नज़ीसा और गुलशन भी साथ आई थीं। इनके अलावा कोतवाली की सभी कारनिस्टिबलनियाँ, हवलदारनियाँ और थानेदारनियाँ हर वक़्त ख़िदमत के लिये मौजूद रहती थीं मगर घर में सिवाय इन दो नौकरों के और कोई न था। बेगम अपने सरकारी कामों के कारण घर में बहुत ही कम रहती थीं। आज इस जाँच में जा रही हैं तो कल उस तहक़ीक़ात में, आज शहर का गश्त है तो कल किमी राष्ट्रीय जलमे में शान्ति क़ायम रखने के लिये पुलिस पार्टी के साथ चली जा रही हैं। कभी मोटर पर रवानगी हो रही है तो कभी घोड़े पर। हमको ताज़्जुब तो यह था कि बेगम ने अपने को कैसा बदल लिया था। यह वही बेगम थीं जिनका पैर ज़रा ऊँचा-नीचा पड़ा और मोच आई। ज़रा सी कोई भारी चीज़ उठाई और कलाई में वरम आ

मया । ज़रा सी किसी में लड़ाई हुई और इनको धड़का उड़ा । किसी ने पटावा छुड़ाया और यह 'ऊइ' कह कर उछल पड़ी । कोई बरसाती कीड़ा इन पर आ बैठा और यह सारे आँगन में डुपट्टा भाड़ती फिर गद्दी है बदहवासी के साथ । रात को चूड़ों ने कोठरी में ज़रा खड़बड़ मचाई और इन्होंने अपने पलंग पर से आवाज़ दी, "आप सो रहे हैं ? मैंने कहा ज़रा होशियार हो जाइये, कुछ खटका मालूम होता है ।" एक बार तो बिल्ली ने दूध की पतीली जो गिराई तो उनकी घिग्घी बँध गई । और अब वही बेगम अच्छी घुड़सवारी करती थी, बड़ी अच्छी निशानेबाज़ थी, हर बात में चुस्त-चालाक । आधी रात को गश्त करने निकल जाती थी । कहीं से डाके की खबर आई और यह डकैतियों की गिरफ्तारी के लिये रवाना हो गई । कहीं से कुल की खबर आई और इन्होंने छपा मारा । मीलों पैदल चलवा लीजिये, दीवारें फँदवा लीजिये । फिर यह कि हर काम में तेज़ी । खैर, ये सब बातें तो बहुत अच्छी थीं अलबत्ता मिज़ाज बहुत खराब हो गया था । बात-बात पर गुस्सा आता था और गुस्से में आपे से बाहर हो जाया करती थी । बाहर तो अपना ग़ोश कायम करने के लिये गुस्सा दिखाना ज़रूरी भी था लेकिन जब घर में हम पर गुस्सा करती थीं तब बड़ी तकलीफ़ होती थी । क्या मज़ाल कि कोई बात उनकी ज़बान से निकले और वह फ़ौरन पूरी न हो जाय । किसी काम में ज़रा सी भी देर हो जाय, फिर देख लीजिये उनका गुस्सा । यह चीज़ फेंकी जा रही है, वह चीज़ तोड़ी जा रही है, चीख-चीख कर घर सर पर उठाये लेती हैं । एक-एक की शामत आ रही है । जो सामने पड़ गया उसी पर उबली पड़ती हैं । उनकी नमीं तो मशहूर थी । गुस्सा तो उनको आता ही न था । बल्कि हमारा ही गुस्सा हर तरफ़ मशहूर था । खुद हमने अपनी बेज़बान बेगम पर ऐसा-ऐसा गुस्सा किया था कि उनका दिल ही खूब जानता होगा । गुस्सा आ

खुदानख्वास्ता]

गया है और घर में एक क्रयामत मची है। हफ्तों रुठे हुए घर के बाहर पड़े हैं और वह बेचारी खुशामंद कर रही हैं, मना रही हैं, बाहर से बुलवा रही हैं, माफ़ियों पर माफ़ियाँ माँग रही हैं। खाना-पीना छोड़े हुए हैं, रातों की नींद हगम किये हुए हैं, दिन का आराम तज दिया है। और अब यही हाल उनका था। हमको उन पर भी ताज्जुब था और उनसे ज्यादा अपने पर कि हमारा गुस्ता क्या हुआ, और हम में यह सहनशीलता कहाँ से आ गई।

अब भला यह भी कोई गुस्से की बात थी। आप ने रात को यह कह दिया था कि सुबह उठकर मेरी जाजेंट की साड़ी में वह क्रीता टाँक देना जो बनारसी साड़ी में टँका हुआ है। सुबह उठकर, आदमी तो आदमी है, दिमाग में यह बात निकल गई और खुद आप भी भूल गईं। अच्छी खासी हँसती हुई सोकर उठीं। नाश्ता किया, चाय पी, भिगार-मेज़ पर बनाव-सिगार किया। अब एकदम जो मुझे साड़ी माँगी तो मुझे भी याद आया। पाँच तले की जमीन निकल गई। डरते-डरते मैंने कहा कि मैं क्रीता टाँकना भूल गया था, अभी टाँक देता हूँ, गलती हो गई मुझे। वस जनाव, न पूछिये। मालूम हुआ कि जैपे बारूद के किले में किसी ने दियामलाई दिखा दी। गुस्से में जो कुछ मुँह में आया कहती चली गई। मेज़ पर जितनी चीज़ें थीं सब उलट दीं। कंधा और शीशा आंगन में उछाल दिया गया, सेन्ट की शीशी दीवार में टकरा कर चूर-चूर हो गई, पौडर का डिब्बा नाली में जा गिरा, नेल पालिश का बक्स तख्त के नीचे गया। सारांश यह कि सिंगार-मेज़ का सारा सामान तितर-बितर होकर रह गया। हम सहमे हुए एक कोने में खड़े काँप रहे थे और वह आतिशबाजी की चखी की तरह छूटती ही चली जाती थी। आखिर उन्होंने बकते-बकते यहाँ तक कह दिया कि “तुमको मेरी परवाह नहीं है तो तुम भी मेरी जूती की नोक

पर हो। तुमने अपना दिमाग क्या खराब कर रक्खा है। मैं पूछती हूँ कि आखिर तुमको घमंड किस बात का है। मैं ही हूँ कि तुम्हारे साथ दिन-रात सर खपाती हूँ। कोई और औरत होती मेरी जगह तो एक मिनट तुम्हारे साथ निवाह न कर सकती। हजार बार कहा कि अब वह दिन गये जब तुम्हारी जबरदस्तियाँ चला करती थीं। अब शरीफ घरानों के मर्दों की तरह आदमी बन कर रहो, मल्लिका साखी, मगर मैं तो जैपे कुतिया हूँ, भूँका करता हूँ। तुम्हारे कान पर जूँ भी नहीं रंगती। दुनिया भर के मर्दों का मुघड़ापा देखती हूँ और आह करके रह जाती हूँ। क्या हैमियत है नज्मुन्निसा की। सवा सौ रुपये पाने वाली मामूली सी थानेदारिन है, मगर उसका घर जाकर देखो तो आँखें खुल जायें। आईना बना रक्खा है घर को। उसके शौहर ने अपने सुघड़ापे से, और एक तुम हो कि कल मेरे हरे रंग के जम्पर में सफ़ेद धागे से बटन टाँक दिया। जी तो चाहा था कि जम्पर लाकर तुम्हारे मुँह पर मार दूँ लेकिन खून के घूँट पीकर रह गई। अगर तुम यह चाहते हो कि मैं इस घर में आग लगा दूँ तो साफ़-साफ़ कह दो कि बीबी, तुम्हारे नसीब में इस घर का आराम नहीं है। कमम लेलां जो फिर उधर का रुख भी करूँ। अब आज से मेरे किसी काम में तुमने जो हाथ लगाया तो मुझसे बुरी कोई न होगी। तुम्हारा जो जी चाहें करो, जो मदद मुझसे हो सकेगी वह करती रहूँगी, मगर अब इस घर से मुझे कोई मतलब नहीं है।” और यह सब ज़बानी ही नहीं कहा गया बल्कि सचमुच वे बाहर ज़नाने ही में रहने लगीं। हमने मार्कीनाम लिख-लिख कर भेजे, सब फाड़ दिये गये। नौकरों से कहलवाया तो उनको डाँट पड़ी, खाना भेजा तो वापस कर दिया गया। पान तक कुबूल न किये। इधर घर में हम भूखे-प्यासे पड़े हुए थे और सचमुच खाते भी कैसे क्योंकि जब वही हमसे खफ़ा थीं जिनमें हमारी ज़िन्दगी

खुदानस्वास्ता]

थी। जब वही रूठ गई जिनके दम से हमारी दाढ़ी मुँडती थी, जब बड़ी नाराज़ थीं जो हमारी मलिका थीं, तो हम किस दिल से कुछ ग्वाते-पीते। दिन-रात मुँह लपेटे पड़े रोया करते थे अपने नसीब को। खुदाबग़्श और अब्दुल करीम दोनो समझाते थे कि सरकार खुदा का शुक्र अदा कीजिये, मर्द कमबख्त की किस्मत में ही यह लिखा है कि वह इसी तरह औरतों की जा-बेजा बात सुने और सहन करे। अब बेगम माहवा तो बाहर अच्छी तरह खा-पी रही हैं और आप पड़े सूख रहे हैं। आग़िर कब तक इस तरह हलकान होंगे। रो रोकर आपने यह हाल बना रक्खा है। खुदा न करे आप बीमार पड़े तो और मुसीबत है। लेकिन नौकरों के इस समझाने-बुझाने के बावजूद भी हमारा दिल रो रहा था और हम समय के इस इन्क़लाब को देख रहे थे कि यह बड़ी बेगम हैं जो हमको एक वक़्त भी भूखा-प्यासा न देख सकती थीं और अब इनको ख़बर है कि हम पड़े हुए सूख रहे हैं, हमारी आँखों के आँसू अब तक नहीं रुके हैं और हमारा दिल खून हो चुका है मगर उनको ज़रा भी परवाह नहीं थी। खुद उनके खाने-पीने का सामान बाहर ज़नाने में ही हो जाता था और घर से जैसे सचमुच उनका कोई मतलब ही न था। आग़िर हम कहाँ तक सहन करते, नतीजा यह हुआ कि बीमार पड़ गये। खैर, शुक है कि बीमारी की ख़बर सुनकर और एकाध थानेदारिनी की खुशामद से आप अन्दर तशरीफ़ लाईं तो हम बुखार बेहद तेज़ होने के बावजूद पहले तो भावावेश में लड़-खड़ाते हुए ताज़ीम के लिये उठे और फिर ज़ब्त न हो सका तो उनके क़दमों पर गिर पड़े। बेगम ने बड़ी मुश्किल से हमको उठाकर बिठाया। मगर हमने उनसे यही कहा कि जब तक आप दिल से मुझे माफ़ न कर देंगी मैं न कुछ खाऊँगा न दवा पियूँगा। अगर आपने ही मुझसे मुँह मोड़ लिया है तो मुझको भी जिन्दगी से मुँह मोड़ लेने दीजिये।

इतने दिनों के भूखे फिर बुखार की तेज़ी, कमजोरी अलग नतीजा यह हुआ कि इस उठने की वजह से एकदम कुल्लू ग़श सा आ गया और फिर हमको ख़बर नहीं कि क्या हुआ। बहुत देर के बाद आँख खुली तो मालूम हुआ कि हम दर तरफ़ से एक चादर में लिपटे हुए पड़े हैं। सिर्फ़ हमारा एक बाजू चादर के बाहर है जिसमें डाक्टरनी इन्जेक्शन लगा रही है। हमने चादर उलटनी चाही तो बेगम ने ध्वरा कर कहा—“अरे अरे, डाक्टरनी माहवा बेठी है।” और हमने फ़ौरन अपने को और भी चादर में लपेट लिया।

डाक्टरनी ने कहा—“अब यह ठीक हो जायेंगे। दर अमल आम कमजोरी के अलावा दिल बहुत कमजोर मालूम होता है। मैं एक दवा लिख रही हूँ। यह दीजिये और फ़ौरन इनको फलों का रस दिलवाइये। देखने में तो कोई मर्दानी बीमारी मालूम नहीं होती कि आप मर्द डाक्टर को बुलाये। मेरा ख़याल है कि इसी दवा में ठीक हो जायेंगे। कल सुबह टेलीफ़ोन पर हाल कहलवा दीजियेगा। इनको ताक़त बढ़ाने वाली ख़ूराक की बड़ी ज़रूरत है। इस तरफ़ से बेपरवाही न बरती जाय। फलों का रस, दूध, मक्खन वगैरह इनको ख़ूब खिलाइये। अच्छा, अब मैं चलती हूँ। आदाब अर्ज़ी।”

डाक्टरनी के जाने के बाद हम पटों से निकले तो देखा कि हमारे बिस्तर से कुर्सी मिलाये हुए बेगम सर भुकाये बेठी हैं। अब्दुल करीम और खुदाबख़्श हमारे लिये फलों का रस निकाल रहे थे। हमने बहुत ही कमजोर आवाज़ में कहा—“तुम लोग उधर जाकर काम करो।”

और जब वह दोनों चले गये तो हमने अपने हाथ में बेगम का हाथ लेकर कहा—“आपने माफ़ कर दिया मुझे या ...।”

बेगम ने बड़े प्यार से कहा—“मैं खुद शर्मिन्दा हूँ।”

खुदानखास्ता]

हमने आँख में आँसू भर कर कहा —“यह न कहिये, यह मेरा हिस्सा है। मेरी सरताज, मैं आपका गुलाम हूँ। आपको शर्मिन्दा होने की जरूरत नहीं। मुझे माफ़ कर दीजिये।”

बेगम ने हमारा सर सहलाते हुए कहा —“मैं खुश हूँ कि तुम मेरे इस सलूक के बाद भी मुझसे यह कह रहे हो। अब आगे मैं गुस्सा न करूँगी। हालाँकि यह तो साँचो कि मैं तुम पर गुस्सा न करूँगी तो किस पर करूँगी और तुम ही न सहोगे मेरा गुस्सा तो और कौन सहेगा?”

हमने कहा —“मगर मैं शिकायत तो नहीं कर रहा हूँ। आप मेरी मलिका हैं। मुझे तो भिदाय आपकी खुशी के और कुछ नहीं चाहिये। इन्सान हूँ, गलती हो ही जाती है। अपनी गलती की सजा भुगतनी ही पड़ती है। लेकिन इसके बाद अगर आप माफ़ कर दिया करें तो मुझे कोई शिकायत नहीं।”

बेगम ने कहा —“अच्छा खैर, अब इस जिक्र को छोड़ो। मैंने माफ़ किया, मेरे खुदा ने माफ़ किया। तुम भी तो आखिर माफ़ कर दिया करते थे मुझे।”

हमने कहा —“इस्माँलिये तो और भी गलती होने का डर है कि ज़िन्दगी भर की पड़ी हुई आदतें छूटने-छूटने ही तो छूट सकती हैं। आप खुद इन्साफ़ काजिये कि मैंने अपनी पिछली ज़िन्दगी को भुलाने की कितनी कोशिश की है। एक दो बातें तो हर एक भूल सकता है मगर यहाँ तो कायापलट ही है। मालूम होता है जैसे दुनिया क़लाबाज़ी खा गई है। ज़िन्दगी की ज़िन्दगी ही एकदम बदल कर रह गई है। फिर भी मैं कोशिश करता हूँ कि उस ज़िन्दगी को बिल्कुल ही भूल जाऊँ।”

बेगम ने कहा —“बेशक तुमने कोशिश की है। लेकिन इस कोशिश

में तुम मुझसे ज़्यादा कामियाब नहीं हो। हालांकि तुम्हारी दुनिया में औरतों को कम-समझ और बेवकूफ़ कहा जाता है, वह किसी ज़िम्मेदारी को निभाने के योग्य नहीं समझी जातीं मगर अब तुम देख रहे हो कि मैं ज़िम्मेदारी को किस तरह निभा रही हूँ। मेरी ही तरह की दूसरी औरतें राज्य का सारा इन्तज़ाम सँभाल रही हैं। हमारी इस दुनिया में तुम्हारी दुनिया से कहीं ज़्यादा अमन-शान्ति है। वेशमीं और बद-चलनी भी यहाँ न होने के बराबर है। पुलिस और फ़ौज तक का सारा काम औरतें ही चलाती हैं। रेलें औरतें चलाती हैं, हवाई जहाज़ औरतें उड़ाती हैं। माराश यह कि दुनिया के सारे कारबार औरतें ही तो करती हैं जिनको तुम्हारी दुनिया में बिल्कुल बेकार और निकम्मा समझा जाता है।”

हमने कहा—“द्वंद्व, उम दुनिया का अब क्यों ताना दे रही हो। न वह दुनिया रही और न उम दुनिया के काग़ज़ाने। अब तो दुनिया ही बदल गई है इसलिये हमको भी बदलना ही पड़ेगा, और बदल रहे हैं। तुमने तेज़ी के साथ अपने को इसलिये बदल लिया है कि तुमको वह अधिकार मिल गये हैं जो तुम्हारे ख़्वाब-ख़याल में भी न होंगे और मेरे लिये तो यह इन्क़लाब मुसीबत ही मुसीबत है।”

बेगम ने बेपरवाही से कहा—“क्यों मुसीबत क्यों हैं? न कोई ज़िम्मेदारी है न कोई फ़िक्र। घर के राजा बने बैठे रहो। अच्छे से अच्छा खाओ, अच्छे से अच्छा पहनो। आज मैं तुम्हारे लिये बिजली का सेफ़्टी ग़ैज़ ला दूँगी। कहो, अब तो खुश हो?”

हमने ठंडी साँस भर कर कहा—“दिल की खुशी चाहिये मुझे मेरी मलिका। मैं सिर्फ़ आपकी मुहब्बत का भुग्वा हूँ।”

ख़ुदाबख़्श फलों का रस निकाल कर ले आया। बेगम ने तुरन्त

खुदानखास्ता]

उठकर उस रस में ग्लूकोज अपने हाथ से मिला दिया और अपने ही हाथ से हमको रस पिलाती रहीं ।

फिर नौकर को हिदायत की कि मुर्गी के चूड़े (बच्चे) में मँगाये देती हूँ । उनका सूप थोड़ी देर के बाद माहव को मिलना चाहिये और फलों का रस हर वक़्त तैयार रहे । जिस वक़्त माँगें, फ़ौरन दिया जाय । हमको रस पिलाकर बेगम ने अपने कमरे में जाकर जल्दी-जल्दी वर्दी पहनी और वर्दी पहन कर कलाई की घड़ी देखती घबराती हुई बाहर आई और हमसे यह कहती निकल गई कि मुझे एक राजनीतिक सभा की मनाही के लिये फ़ौरन चूड़ीबारा पहुँचना है ।

बेगम के जाने के बाद खुदाबख़्श और अब्दुल करीम ने आकर हमको फिर घेर लिया । तीन दिन के बाद हमको फलों का रस मिला था । लगता था जैसे नशा मा छ़ा रहा हूँ । और वे लोग अपनी उड़ा रहे थे कि औरतों का यही हाल है । चुड़िया को मार कर गोबर सुँघाना तो कोई औरत में सीखे ।

छः

वेगम ने एक दिन हमको बताया कि एक थानेदारिनी के लड़के की शादी है। लड़की अच्छी न्वासी मिल गई है। ग्रेजुएट होने के अलावा हाल ही में वह मंसिफ़िन के पद के लिये चुनी गई हैं। थानेदारिनी यह चाहती हैं कि तुम भी शादी के दिन उनके यहाँ चले जाओ। उनके शौहर भी बहुत-बहुत अनुरोध कर चुके हैं। मैं उनसे वायदा कर चुकी हूँ इसलिये तुम चले जाना। अब तक तुमने भी यहाँ की शादियाँ न देखी होंगी। कल सुबह उनके यहाँ में सवारी आयेगी। थानेदारिनी कह गई हैं। तुम तैयार रहना।

दूसरे दिन जब हम थानेदारिनी के यहाँ पहुँचे तो उनके पति, उनके मसुर और उनके पिता ने हमारा ज्योर्दी में स्वागत किया। यों तां सारे घर में मेहमान भरे हुए थे लेकिन हम कोतवालिनी साहब के पति थे इसलिये हमारी आवभगत ज्यादा थी और हमको ख़ास तौर से उसी कमरे में ले जाकर बिठाया गया जहाँ दूल्हा माँके बैठा हुआ था। हमको देखकर वह बेचारा और भी शरमा गया और उसने घुटने के ऊपर हाथ रख कर अपना मुँह छिपा लिया। हमारे लिये यह बड़ा अजीब दृश्य था कि लड़का माँके बैठे और इस तरह शर्मिये। थानेदारिनी के पति ने पान बनाकर थाली में हमारे सामने रखे और एक नौकर को हुक्म दिया कि कोतवाल साहब को पंखा झलता रहे। हम शायद कोतवालिनी साहब के पति होने के नाते कोतवाल साहब

खुदानखवास्ता]

कहलाये थे। अब हमने भी थानेदारिनी के पति से कहा—थानेदार साहब ! यह तकल्लुक छोड़ कर आप लड़के से कहिये कि वह ढंग में बैठे। इस तरह सर भुकाये-भुकाये गर्दन में दर्द होने लगेगा।”

थानेदार साहब ने हँसकर कहा—“जी नहीं, इनको इसकी आदत होनी चाहिये। आज तो खैर अपने घर में हैं, अब इनको पराये घर जाना है। न जाने कैसे लोंग हो। लड़के जात में अगर शर्म-हया ही न हो तो किस काम का लड़का। मगर खुदा का शुक्र है कि मेरे दोनों लड़के बड़े शर्मांल हैं। खैर, छोटों की तो अभी उम्र ही क्या है। बारहवाँ साल है। लेकिन इसी उम्र में उसने अपने बड़े भाई के दहेज की एक-एक चीज खुद सी है। मारे जोड़े इसी के हाथ के सिले हुए हैं, और आप की दुआ में घर का सारा इन्तजाम वही करता है। सीने काढ़ने के अलावा खाने-पकाने में भी बड़ा तेज है।”

हमने कहा—“वाह वाह, बहुत अच्छा है। लेकिन इन साहबजादे कां, जब तक ये अपने घर पर हैं, थोड़ा बहुत आराम तो मिल जाना चाहिये। अगर ये मेरी बजत में इस तरह बैठे हो तो इनको बता दीजिये कि मैं इनके मायके ही का हूँ।”

थानेदार साहब ने कहा—“जी हाँ, वह तो जानता है कि आप कौतवाल साहब हैं, लेकिन आज तो वह हर एक में शर्मियेगा, चाहे कोई मायके का हो या ससुराल का। आज तो आज, इसका तो यह हाल है कि एक हफ्ते में इसी काने में बिल्कुल इसी तरह बैठा है। अब तो खैर, बरात आने का वक़्त करीब है, इनको नहला धुलाकर दूल्हा बनाया जायगा। अब भला ये क्या सर उठायेगे।”

हमने घड़ी देखते हुए कहा—“किस वक़्त आयेगी बरात। चार बजे सुना था, और अब तीन बजने वाले हैं।”

थानेदार साहब ने एक दम चौंक कर कहा—“अरे, तीन ? ओफ्रोह, अबतो सचमुच जल्द ही नहलाना चाहिये ।”

यह कहकर वह बौखलाए हुए कमरे के बाहर चले गये और थोड़ी ही देर में एक और साहब ने आकर दूल्हा को गोद में उठाकर उस कमरे से मिले हुए नहानघर में पहुँचा दिया और उनका नहान शुरू हो गया ।

नहाने से छुट्टी पाने के बाद एक शोर सा मच गया कि दूल्हा के कपड़े लाओ । और एक थाल में दूल्हा के कपड़े लाये गये और उसी नहानघर में दूल्हा को कपड़े पहना कर बाहर लाया गया । अभी दूल्हा को लाया ही गया था कि बाहर से ढोल ताशों की आवाज आने लगी और सय मर्द दरवाजों और खिड़कियों से भाँक-भाँक कर बरात का तमाशा देखने लगे । हमको भी थानेदार साहब ने एक खिड़की के पास लाकर खड़ा कर दिया । बरात का जलूस वैसा ही था जैसे जलूस हमने हजारों देखे होंगे । बस फर्क इतना था कि उस जलूस भर में एक भी मर्द का कहीं पता न था । बाजा बजाने वाली भी औरतें थीं और गाड़ियाँ हँकाने वाली भी औरतें । दुल्हन का हाथी तक औरत ही चला रही थी । बरात का स्वागत थानेदारिनी साहबा ने किया और सब बरातिनें जगमगाती हुई साड़ियों, शलवारों, गारारों और चूड़ीदार पाजामों में और उन्हीं के जोड़ के दुपट्टों, कुर्तों व ब्लाउजों में उतरतीं और दुल्हन को उतारा गया जो लाल जरबस्त की साड़ी में लिपटी, सर पर सेहरा बाँधे, मुँह पर रुमाल रखे हुए धीरे-धीरे आगे बढ़ी और सास को अदब में सलाम किया । फिर महिफल के बीच से उस कारचोबी शामियाने के नीचे आ गई जो दुल्हन के लिए खास तौर पर मजाया गया था ।

इसके बाद एक बड़ी बी ने क्राजी की तरह निकाह पढ़ाया । पहले

दुल्हन से दूल्हा को अपने पति के रूप में स्वीकार करने की शपथ ली गई फिर अन्दर मर्दाने में आकर दूल्हा से स्वीकृति ली गई। सारी रस्में उसी तरह पूरी की गईं जैसे हमारे देश में होती हैं। फर्क यही था कि वहाँ लड़की जब दुल्हन बनती है तो एक जानदार गठरी बनकर रह जाती है, उसका चेहरा लम्बे घूँघट में छिपा रहता है, वह किसी से बात नहीं करती, सारी रस्में दूल्हा पूरी आज्ञादी से अदा करता है। पर यहाँ दूल्हा, दुल्हन की तरह पदों में बैठा था। 'हाँ' 'हूँ' के सिवा कोई बात नहीं करता था। सारी रस्में दुल्हन ने अदा कीं। और जब दुल्हन अपने पति को विदा कराकर ले जाने लगी तो दूल्हा के बाप, चचा, मामा और भाइयों ने इस तरह फूट-फूट कर रोना शुरू किया कि हम तो अपने यहाँ की औरतों को भूल गये। और दूल्हा का रोना सुनकर तो सचमुच कनेजा मुँह को आता था। बार-बार ग़श पर ग़श आ रहा था। आखिर जब मर्द लोग दूल्हा को विदा कर चुके तब थानेदारिनी साहबा आईं। पहले तो उन्होंने मर्दों को डाँट-डपट कर चुप कराया लेकिन आखिर में न रहा गया तो आप भी रो पड़ीं। बेटे के पास आकर सर पर हाथ फेरते हुए कहा—“बेटा ! अब मेरी लाज तुम्हारे हाथ है। तुम अब अपने घर जा रहें हो लेकिन मैं उसी समय तक तुमसे खुश हूँ जब तक कि तुम अपनी बीबी के फरमावरदार (आज्ञापालक) रहोगे। आज मैं उनकी खुशी तुम्हारी खुशी है और उनको ही खुश रखकर अपना लोक-परलोक दोनों को सँवार सकते हो।” यह कह कर रुमाल से आँसू पोछती हुई थानेदारिनी साहबा हट गई और कहारिनें दूल्हा की पालकी उठा कर ले गई। विदाई के बाद रात गये हम भी घर आ गये।

सात

हमारी ज़िन्दगी दिन पर दिन सुखद होती जा रही थी। इसकी स्वास वजह यह थी कि अब हम करीब-करीब इस बरेलू ज़िन्दगी के आदी हो चुके थे। बाहर जाने का अब कभी खयाल ही न आता था। बेगम का मिज़ाज भी कुछ दिनों से अच्छा था। राधानगर में अनेक घरानों से मेल-जोल भी बढ़ गया था और सबसे बड़ी बात यह हुई थी कि बेगमगंज के ट्रेनिंग घर से सेक्रेट्री साहबा यानी जमाल आरा का तबादला भी राधानगर में हो गया था और वह राधानगर में डिप्टी कलक्टरनी होकर आ गई थी और उनके साथ सिद्दीक भाई भी आ गये थे। जमाल आरा बेगमगंज से आकर हमारे ही घर ठहरी थीं और उस समय तक के लिये ठहरी थीं जब तक कि कोई अच्छा बँगला न मिल जाय। सिद्दीक भाई के कारण घर में काफी चहल-पहल हो गई थी। उनके बच्चों से, खुदा उन्हें जीता रखे, घर भर गया था। हम जमाल आरा से और सिद्दीक भाई बेगम से पूर्ववत् पर्दा करते थे। इसीलिये सिद्दीक भाई के कारण बेगम भी घर में कभी-कभी ही आती थीं, ज़्यादातर बाहर ही जमाल आरा वहन के साथ रहती थीं। आज न आने क्या बात थी कि उन्होंने ड्योर्दी से आवाज़ दी और बोलीं—“मैं अन्दर आना चाहती हूँ। सिद्दीक भाई से कहो ज़रा आड़ में हो जायें।”

सिद्दीक भाई आप ही लपक कर कमरे में घुस गये तो बेगम ने आते ही कहा—“ज़रा मेरा डुपट्टा चुन दो। जमाल कह रही हैं कि सिनेमा

खुदानखास्ता]

चलो । मैं उनके साथ जा रही हूँ ।”

हमने कहा—“कभी हमको भी दिखा देतीं सिनेमा ।”

बेगम ने कुछ सोचते हुए कहा—“ठहरो, सिद्दीक भाई वाली से पूछ लूँ कि वे अपने चहेते को भी ले जा सकती हैं या नहीं ।”

सिद्दीक भाई ने दरवाज़े पर थपकी दी और हमने घूम कर देखा तो उन्होंने इशारे से बुलाकर चुपके से कहा—“उनसे मेरा नाम लेकर न कहें नहीं तो बेकार लाखों बाते मुनाकर रख देंगी ।”

बेगम ने पूछा—“क्या कह रहे हैं ?”

हमने कहा—“कह रहे हैं कि बहन से कह दो कि मेरा नाम लेकर उनसे न कहें नहीं तो लाखों बाते मुनाकर रख देंगी मुझे ।”

बेगम ने कहा—“उस चुड़ैल की क्या मजाल है कि कुछ कहे । अच्छा, मैं अभी आती हूँ । तुम डुपट्टा तो चुन दो तब तक ।”

बेगम तो यह कह कर बाहर चली गई और हमने जल्दी से डुपट्टा निकाल कर चुनना शुरू कर दिया कि इतने में वह फिर आकर ड्योड़ी से बोली—“मैं आ सकती हूँ अन्दर ।”

हमने कहा—“हाँ हाँ, आ जाओ न । वह तो अन्दर ही घुसे बैठे हैं ।”

बेगम ने कहा—“तुम दोनों भी जल्दी से तैयार हो जाओ । मैं तब तक मोटर निकलवाती हूँ ।”

यह कह कर वह तो डुपट्टा लिये हुए बाहर चली गई और हम दोनों जल्दी-जल्दी तैयार होने लगे । तभी नज़ीसा ने बाहर से आवाज़ दी कि “सरकार बुला रही हैं साहब लोगों को । मोटर तैयार है ।”

हम लोगों ने कपड़े तो पहन ही रखे थे, जल्दी से बुर्का ओढ़ कर बाहर आ गये । जमाल आरा बहन ने हम दोनों को देखते ही कहा—

“आइये, आइये। आप दोनों चलिये मोटर पर बैठिये, हम दोनों भी आ रहे हैं।”

बेगम ने कहा—“तो साथ ही क्यों नहीं चलतीं। घर वाले के साथ जाते शर्म आती है?”

जमाल आरा ने सिर्दीक भाई को सम्बोधित करने हुए कहा—
“जनाब, यह कोट का दामन बुक्रे में कर लीजिये तो अच्छा है।”

बेगम ने हमसे कहा—“और आप भी मुँह ज़रा बुक्रे के अन्दर ही रक्खें तो अच्छा है।”

जमाल आरा ने कहा—“इन दोनों को मर्दाने दर्जे में बिठाओगी न?”

बेगम ने कहा—“जी नहीं, बन्दी मर्दाने दर्जे की कायल नहीं। मैं तो अपने पास ही बिठाऊँगी।”

जमाल आरा ने कहा—“अच्छा खैर, तुम इधर आ जाओ मेरे साथ, मैं खुद मोटर ड्राइव कर लूँगी। रहीमन, तुम्हारे जाने की ज़रूरत नहीं। तुम ज़रा पर्दा टीक कर दो, उड़ने न पाये।”

बेगम ने मोटर स्टार्ट कर दी और कई बाज़ारों में होती हुई दस मिनट के अन्दर ही “नूरजहाँ टाकीज़” पहुँच गईं। वह शहर कोतवालिनी थी। उनको टिकट खरीदने की ज़रूरत नहीं थी। सिनेमा हाउस की मैनेजरनी साहबा पहले से ही गेट पर खड़ी इन्तज़ार कर रही थीं। उनको देखते ही आंग बढ़ी। सिनेमा के दरवाज़े पर खड़ी सिपाहिन ने सैल्यूट किया और बेगम ने जमाल आरा से कहा—“अब मर्दों को भी उतरवाओ।”

अब हम दोनों भी बुक्रे में लिपटे हुए उतरे तो बेगम ने चुपके से कहा “टाई अन्दर करो बुक्रे के।”

हमने धीरे से कहा—“हवा के मागे उड़ ही जाता है बुक्रे।”

खुदानखास्ता]

बेगम ने आदिस्ता से कहा—“अच्छा, अब हजार औरतों के बीच अपनी आवाज़ तो न निकालो। न किसी की शर्म न दया। इन मर्दों की आँखों का पानी तो जैसे मर ही गया है।”

इतने में मैनेजरनी साहबा ने कहा—“चलिये सरकार।”

और आगे-आगे बेगम, बीच में हम दोनों मर्द और हमारे पीछे जमाल आरा बहन हाल के अन्दर पहुँच कर एक ‘बाक्स’ में बैठ गये। उस समय तक किसी और बुद्धों का पता भी न था हाल भर में। हम लोगों को बैठ थोड़ी ही देर हुई थी कि बेगम ने जमाल आरा बहन से कहा—“जमाल, देखो ज़रा उन बेगम साहबा को। जब से हम लोग आये हैं इनकी नज़रें जैसे इन बुद्धों पर जम कर रह गई हैं।”

जमाल आरा ने कहा—“जी हाँ, तरह-तरह से छव दिखा रही हैं।”

बेगम ने कहा—“और उस प्याज़ी साड़ी वाली औरत को देखो, कैसा घूर रही है इस तरह। जी चाहता है आँखें फोड़ दूँ कमबख्त की।”

जमाल आरा ने कहा—“देख रही है तो देखने दो। आप ही थक जायगी देखते-देखते।”

बेगम ने कहा—“नहीं, मैं पूछती हूँ कि ये तमाशा देखने आती है यहाँ या शरीफ़ घराने के पर्दानशीन मर्दों को घूरने आती है। इन कमबख्तों के तो जैसे बाप-भाई होते ही नहीं।”

इतने में मर्दाना टर्जें में कुछ गड़बड़ शुरू हुई और अनेक मर्दों की तेज़-तेज़ आवाज़ें आने लगीं :—

मर्द नं० एक—“तू क्या समझा है अपने को?”

मर्द नं० दो—“और तू क्या समझा है अपने को?”

मर्द नं० एक—“बुलाऊँ मैं अपने यहाँ की औरतों को?”

मर्द नं० दो—“अरे तो मुझे भी अकेला न समझना। मेरे यहाँ की औरतें भी मौजूद हैं।”

मर्द न० एक—“तो तुम इस जगह से नहीं हटोगे ?”

मर्द न० दो—“क़यामत तक न हटेंगे, और अगर हिम्मत है तो ब्रह्म कर देख लो ।”

मर्द न० एक—“अच्छा हट तो सही ।”

मर्द न० दो—“श्वबरदार जो हाथ लगाया मरे ।”

बेगम ने कहा—“सुन रही हों जमाल ? इसीलिये तां में मदों को मर्दाने क्लास में बिठाने की कायल नहीं हूँ । ये लोग दो घड़ी भी निचले थोड़े ही बैठ सकते हैं । बग़ैर लड़ाई भगड़े के इनका काम चल ही नहीं सकता ।”

जमाल आरा ने कहा—“जा नहीं, सब मर्द ऐसे थोड़े ही होते हैं । खुदा न करे हमारे मर्द ऐसे भगड़ालू हो जायें । ज़िन्दगी ही मुश्किल हो जाय । ये तो न जाने किन निचले वर्ग की औरतों के यहाँ से आये होंगे ।”

बेगम ने कहा—“बैर, यह भी सही । पर यह बताओ कि मेरा यह तरीक़ा ठीक है कि नहीं कि अपने मदों को अपने साथ ही रखना चाहिये । इन नीच लोगों की तो हवा लगना भी ज़हर है ।”

इतने में मिनेमा हाल में अंधेरा छा गया और पदों पर तमाशे का नाम आया—‘नामुराद दूल्हा’—तुरन्त ही दूसरा नाम आया—कहानी, फरीदा बानो, मम्बाद नज्मा । गाने लीलावती और चन्द्रा, पट—कथा लेखन आशा देवी । फ़ोटोग्राफ़ी पद्मावती और शीरी । फिर नाम आया—निर्देशिका—मोती बाई गिडबानी । और इसके बाद खेल शुरू हुआ । इस खेल में यही दिखाया गया था कि एक दुल्हन कां, जब वह बड़े नव्वले दूल्हा को ब्याह कर लाई, तब लड़के की एक निराश उम्मीदवार लड़की का खत मिला कि तुम जिस लड़के को ब्याह कर लाई हो वह दरअसल मुझसे मुहब्बत करता है और अपने माता-पिता

खुदानसवास्ता]

की जबर्दस्ती और कुछ मर्दाना शील और संकोच के कारण उसकी शादी तुम्हारे साथ हो रही है और वह चुप है। लेकिन तुम्हारा जीवन कभी सुखी न रह सकेगा। न वह तुमसे प्रेम कर सकता है और न तुम उसके दिल से मेरी मुहब्बत छुड़ा सकती हो। लड़की यह स्वतः पाकर बिना अपने दूल्हा से कुछ कहे-सुने उससे विरक्त हो जाती है और उसके पास जाती तक नहीं। लड़का बेचारा नया-नया दूल्हा— न शर्म को छोड़ सकता है न उसकी समझ में अपनी स्वामिनी का यह व्यवहार आता है। इधर यह लड़का दूल्हा बना चुपचाप अपने भाग्य पर आँसू बहाता है उधर लड़की जिन्दगी से बेजार है। एकएक लड़की बीमार पड़ जाती है और सारी डाक्टरनियाँ जवाब दे देती हैं। सिर्फ एक डाक्टरनी बताती है कि इसकी जिन्दगी सिर्फ इस तरह बच सकती है कि कोई और अपनी जिन्दगी को स्वतः में डाल कर अपने शरीर का आधा खून इसके शरीर में पहुँचाने के लिये दे दे। यह सुनते ही लड़का डाक्टरनी से प्रार्थना करता है कि मेरी पत्नी के लिये मेरे होते किसी और का खून लिया गया तो मैं जान दे दूँगा। लड़की जब यह सुनती है तो उसे आश्चर्य होता है। वह अकेले में लड़के से पूछती है कि तुम आखिर मेरे लिये इतना बड़ा त्याग क्यों कर रहे हो, तुमको क्या जरूरत है कि तुम मेरे लिये अपनी जिन्दगी स्वतः में डालो। लड़का इस बात का जवाब देता है कि मेरी जिन्दगी का दूसरा मकसद ही क्या है कि मैं आप पर क़ुरबान हो जाऊँ। एक ना.जुकिस्तानी लड़के का धर्म भी यही है और उसकी तमन्ना भी अगर कुछ हो सकती है तो वह यह कि अपनी स्वामिनी, अपनी देवी पर अपना सब कुछ क़ुरबान कर दे। लड़की उसको बताती है कि तुमको तो किसी और से प्रेम है। इसका जवाब लड़का यह देता है कि ना.जुकिस्तानी लड़का विवाह के बाद ही प्रेम से परिचित होता है। उससे पहले प्रेम से बड़ा कलंक

उसके लिये और कुछ नहीं होता। अब लड़की उसके सामने वह स्वतः पेश कर देती है। जब लड़का उसको यह बताता है कि अगर उस औरत के पाम मेरा कोई स्वतः हो या यह पत्र लिखने वाली लड़की तीन-चार मेरे जैम नौजवानों में मुझको पहचान ले तो मुझे जो भी दंड दिया जाय मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा। इसके बाद लड़का सारी कहानी सुनाता है कि किम तरह उस लड़की ने अपने विवाह का प्रस्ताव मेरी माँ के सामने रक्खा। और जब मेरी माँ ने उसका प्रस्ताव ठुकराकर आपके साथ मेरा विवाह कर दिया तो अब यह इस तरह बदला ले रही है। लड़की यह सुनकर एक दम चौंकती है। उसको मालूम होता है कि वह कितने बड़े भ्रम का शिकार थी और उसने अकारण ही स्वयं अपने को भी इतना कष्ट दिया और उस बेजबान, घर में बैठने वाले अधाँग को भी सताया। वह अपने सच्चे और सीधे पति का हाथ पकड़ कर कहती है कि तुम मेरे जीवन साथी बन चुके हो। जब मैंने तुमको भूल से अपनी मौत समझा था तो मैं मर रही थी। मगर अब तुम जिन्दगी साबित हुए तो मुझको जिन्दा रहने के लिये सिर्फ तुम्हारे प्रेम और तुम्हारी वफादारी की जरूरत है, तुम्हारे खून की नहीं। लड़की दिन पर दिन सँभलने लगती है और लड़का एक वफादार, आज्ञापालक पति की तरह दिन-रात उसकी सेवा में लगा रहता है। डाक्टरनी रोज उसको इंजेक्शन देती है जिससे वह सँभलती जाती है। लेकिन लड़का दिन पर दिन निढाल हो रहा है। आखिर जब लड़का एक-दम चारपाई से लग जाता है तब एकाएक डाक्टरनी से उसको मालूम होता है कि तुमको रोज इसी के खून का इंजेक्शन दिया जाता है जिससे तुम बच गई हो और उसकी जिन्दगी अब खतरे में है। लड़की पागलों की भाँति डाक्टरनी से आग्रह करने लगती है कि मैं अपना देवता समान पति तुमसे लूँगी इत्यादि-इत्यादि। अन्त में लड़का भी बच जाता है और

खुदानखास्ता]

दोनों आनन्दपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगते हैं। अन्तिम दृश्य में उन दोनों को एक फूलों से लदी हुई कश्ती में तैरता हुआ दिखाया गया है जिस पर दोनों एक दोगाना गा रहे हैं।

इस खेल को हमने तो ख़ैर पसन्द नहीं किया लेकिन बेगम और जमाल आरा बहन बहुत प्रभावित दीखती थीं। आख़िर सिनेमा हाल से निकलने से पहले ही बेगम ने कहा—“यह खेल सचमुच इस क़ाबिल है कि मर्दों को ज़्यादा से ज़्यादा दफ़े दिखाया जाय। मैं कोशिश करूँगी कि अबकी रविवार को इसका एक ग़ालिस मर्दाना ‘शो’ हो।”

जमाल आरा बहन ने भी इसका समर्थन किया और वह उसी खेल के एक गाने की धुन में सीटी बजाती हुई हम लोगों को लेकर सिनेमा हाल से निकल आईं।

आठ

पुलिस का बड़ा असर होता है। नाम होना चाहिये पुलिस का, फिर चाहे वह मर्दाना हो या जनाना। और कोतवाल का पद तो आप जानते हैं कि शहर के लिये क्या दर्जा रखता है। भला यह कैसे सम्भव था कि कोतवालिनी साहवा चाहें और जमाल आरा बहन को अच्छा मा घर न मिले। कोतवाली के पास ही एक अच्छी सी कोठी उनको मिल गई और वेगम की मदद से उन्होंने अपने घर को फर्नीचर आदि से सजा लिया और सिद्दीक भाई को लेकर चली गई और हमने कहा कि—

‘ फिर वही कुंजे-क़क़स फिर वही सैयाद का घर ’

मगर एक बात थी कि अब वेगम ने भी हमको कम से कम इतनी आजादी तो दे ही रखी थी कि जब जी चाहता था शाम को सिद्दीक भाई के पास चले जाते थे या वह हमारे पास चले आते थे। लगभग रोजाना ही मुलाक़ात होती थी। आज सिद्दीक भाई रोज़ में पहले ही यानी तीन ही बजे आ गये। वेगम उस वक़्त बाहर ही थी और जमाल आरा बहन ने उनको इजाज़त दे दी थी कि हमारे नौकरों के सामने आ सकते हैं इसलिये वे बेधड़क चलते चल आये। हमने उनको बेवक़्त देखकर कहा—“खैरियत तो है, यह आज इम वक़्त कैसे आ गये?”

कहने लगे—“मुशायरी में चलोगे?”

हमने ताज्जुब से कहा—“मुशायरी? कैसी मुशायरी?”

खुदानखास्ता]

कहने लगे—“आज यहाँ एक बहुत बड़ी मुशायरी है। सारे नाजुकिस्तान की बड़ी-बड़ी शायरा आ रही हैं। हमारी बेगम भी जा रही हैं और तुम्हारी बेगम भी जायेगी। वहाँ पदों का बहुत अच्छा इन्तजाम है। मर्दाना दर्जा बहुत अच्छा है। मैंने अपनी बेगम की खुशामद करके इजाजत ले ली है, अब तुम अपनी बेगम से पूछो।”

हमको भी उस मुशायरी के देखने का शौक हुआ और हमने बेगम को एक पर्चा लिखकर भेजा कि दो मिनट के लिये अन्दर आ सकती हों तो आजायें। कुछ खुदा राजी था और कुछ हमारे सितारे अच्छे थे कि पर्चा मिलते ही उन्होंने ड्योढ़ी से आवाज दी—“कहिये, बन्दी हाज़िर है।”

सिद्दीक भाई लपक कर आड़ में हो गये तो हमने कहा—“आ जाइये।”

बेगम ने आते ही मुस्कराकर कहा—‘मैं समझ गई हूँ जिसके लिये याद किया गया है। यह जमाल आरा का मर्दुआ मेरे मियाँ को भी हाथ से बेहाथ करके रहेगा। मुशायरी की खूब लेकर आये होंगे तुमको बड़काने।’

हमने कहा “समझीं तो आप खूब, मगर मैं यह कहता हूँ कि अगर इसमें कोई हर्ज न हो और आपके लिये नामुनासिब न हो तो मेरा भी दिल चाहता है मुशायरी देखने के लिये।”

बेगम ने बड़े विनम्र स्वर से कहा—“बहुत अच्छा सरकार, तशरीफ़ ले जाइयेगा। खाना ज़रा जल्दी हो जाय, इसके बाद सब साथ ही चलेंगे। मैं जमाल को यहीं बुलाये लेती हूँ। वह भी साथ ही खाना खा लेंगी।”

हमने खुश होकर कहा—“हाँ, यह ठीक है, आप जमाल बहन को फ़ौगन बुलालें।”

बेगम मुस्कराती हुई बाहर चली गई और सिद्दीक भाई अन्दर से गाते हुए निकले—

“मेरी सजनी भई कोतवालिनी, अब डर काहे का”

हमने कहा—“अच्छा, यह नीयत है ? मेरी कोतवालिनी पर दांत लगाये हैं आपने ?”

सिद्दीक भाई ने दांतों के नीचे उंगली दबाकर कहा—“तौबा है, सचमुच खयाल ही न रहा कि कोतवालिनी के कोतवाल तो यहाँ खुद ही मौजूद हैं। मैं तो यों ही मारे खुशी के एक गाना गाने लगा था। नहीं भई, तुम्हारी कोतवालिनी तुमको सुबारक रहे, मेरी गरीबामऊ डिप्टी कलक्टरनी मेरे लिये बहुत है।”

हमने कहा—“राजा तां बड़ी जल्दी हो गई ? मैं तो समझा था कि हजारों बातें सुनाकर रख देंगे कि बड़ा शौक सवार हुआ है। बड़े सैलानी होकर रह गये हैं। अच्छा, अब खाने में जल्दी करनी चाहिये। किस वक़्त से है यह मुशायरी ?”

सिद्दीक भाई ने कहा—“नौ बजे का वक़्त दैनिक ‘सहेली’ में छपा था।”

हमने कहा—“लां, तां अब वक़्त ही कितना है। साढ़े सात तो बज ही रहे हैं। मैं ज़रा याबचोंखाने में जाकर देखू कि कितनी देर है खाने में। तुम तब तक इन दोनों डिवियों में पान बनाकर रखो।”

आठ बजे के करीब बाहर जनाने से खाने की माँग आई और हमने फ़ौरन खाना भिजवाकर अन्दर मर्दाने में भी खाने से फ़ुरसत करली और ठीक पौने नौ बजे मुशायरी के लिये मोटर पर खाना हो गये। मुशायरी में पहुँचकर हम दोनों को मर्दाने दर्जे में पहुँचा दिया गया और बेगम जमाल बहन के साथ औरतो में बैठ गई। हाल में

सुदानख्वास्ता]

हजारों औरतों का मजमा था । मंच पर बीस-पचीस महिलाएँ बैठी थीं । सिद्दीक भाई ने हमको कुछ—एक के नाम भी बताये कि यह अमुक शायरा हैं और यह अमुक शायरा हैं । मंच के बिल्कुल ऊपर बिजली के चमकते अक्षरों में तरह का मिसरा लटक रहा था :—

‘जालिम तेरी मूँछों में तक्रदीर के चक्कर हैं’

थोड़ी ही देर बाद माइक्रोफोन के सामने एक अथेइ अवस्था की महिला ने आकर कहा—“आदरणीय बहनों ! मैं अपना फ़र्ज समझती हूँ कि सबसे पहले उन प्रतिष्ठित महिलाओं को धन्यवाद दूँ जो समस्त नाजुकिस्तान से हमारी दावत पर इस मुशायरी में शरीक होने के लिये हर तरह का कष्ट उठाकर यहाँ पधारी हैं । दरअसल नाजुकिस्तान के इतिहास में यह साहित्यिक समारोह हमेशा याद रहेगा और जब इतिहास लेखिकाएँ हमारा इतिहास लिखेंगी, उस वक़्त यह साहित्यिक कारनामा भी नज़रअन्दाज़ न कर सकेंगी । मैं मुशायरी की संयोजिकाओं और ‘अंजुमन हुस्नेअदब’ की तरफ़ से नाजुकिस्तान की सबसे बड़ी शायरा और उस्तानी जनाबा कटार साहबा की भी आभारी हूँ जो इस बुढ़ापे में हर मुशायरी में शिरकत छोड़ देने के बावजूद हमारे निमंत्रण को अस्वीकार न कर सकीं । मैं प्रस्ताव करती हूँ कि इस मुशायरी की सदारत आप ही करें ।”

एक दूसरी महिला ने कटार साहबा की साहित्य-सेवाओं पर प्रकाश डालने के बाद उक्त प्रस्ताव का समर्थन किया और तालियों की गूँज में एक बड़ी बी को, जो सचमुच बहुत ही बूढ़ी थीं, दो खियाँ पकड़ कर मंच पर लाई और माइक्रोफोन उनके सामने कर दिया गया ।

यीं तो ये बड़ी बी पर आवाज़ बड़ी करारी थी । अपने गले में पड़े हार उतार कर एक ओर रखे और फिर बोलीं—

“बहनो,

आपने मुझे जो इज़्जत बख्शी है उसका शुक्रिया। किसी सामूहिक इसरार से इन्कार करने के लिये जिस हिम्मत और साहस की जरूरत होती है वह इस बुढ़िया को कहाँ से मिले। जी नहीं चाहता लेकिन आपका हुक्म भी नहीं टाल सकती। मेरी उम्र अब उस मंज़िल पर पहुँच चुकी है कि अगर ज़िम्मेदारी का यह बोझ ही बहाना बन जाय तो मुझे आशा है कि आप बहनें मुझे माफ़ कर देंगी। अब मैं मुशायरी की कार्यवाही शुरू करती हूँ।”

इस छोंटे से भाषण के बाद मुशायरी शुरू हो गई। पहले छोटी-छोटी लड़कियाँ ने अपनी-अपनी उस्तानियाँ से इजाज़त ले लेकर तरह-तरीकों में गज़लें सुनाईं। आवाज़ें सब की अच्छी, पढ़ने के तरीक़ों एक से एक मनोहर, लेकिन शायरी सबकी अजीब तरह की। हमारे लिये तो तरह का मिसरा ही अजीब था—

‘ज़ालिम तरी मूँछों में तक्रदार के चक्र हैं’

लेकिन अब जो पूरी गज़लें सुनीं तो रंग ही कुछ और था। गज़लों में मर्दाना हुस्न की सराहना की गई थी। निज़ाकत के बजाय तन्दुरुस्ती की तारीफ़ें थीं, जुल्म और ग़ैब की जगह मूँछों की चर्चा थी। हमने अब तक शायरों का वह कलाम पढ़ा था जिसमें माशूक़ का बूटा सा क्रुद हो या माशूक़ सर्व क्रुद (सरो के पेड़ के समान लम्बा) हो लेकिन दोनों हालतों में उसकी कमर को लापता होना चाहिये या बिल्कुल ही न हो तो और भी अच्छा है। ये मूँछों वाले शेर ज़िन्दगी में पहली

*तरह का मिसरा एक पंक्ति होती है, उसी तुरफ़ में सब शायर गज़लें कहते हैं। ऐसे मुशायरे को तरही मुशायरा कहते हैं।

खुदानखास्ता]

बार मुने थे और सारी उपमाएँ और अलंकार अजीब व गरीब थे। किसी ने कहा कि मेरा प्रेमी हिमालय से भी बड़ा है, किसी ने कहा कि मेरा आशिक्र फ़ौलाद से भी ज़्यादा सख्त है, कोई अपने आशिक्र को हाथी की तरह मोटा और ताक़तवर देखना चाहती थी तो कोई अपने प्रेमी को रस्तम को भी हराने वाला जाहिर कर रही थी। और मुशायरी थी कि 'वाह वाह,' 'क्या कहने हैं' 'मुकरर इरशाद' के नारों से गूँजी हुई थी। आख़िर माइक्रोफ़ोन पर एलान हुआ "जनाब बोतल साहबा" और सारा हाल तालियों से गूँज उठा। सिद्दीक़ भाई ने हमारे कान में कहा—“अब सुनो, यह नाज़ुकिस्तान की सबसे लोकप्रिय शायरा हैं। बे इन्तहा शराब पीती हैं। मगर ऐसा कहती हैं कम्बख़्त कि मैं क्या कहूँ। पढ़ती भी ख़ूब हैं और कहती भी ख़ूब हैं।”

हमने देखा कि एक उजाड़ सी औरत, न सर में कंधी, न लिबास की कोई परवाह। साड़ी का आँचल किसी तरफ़ जा रहा है तो खुद किसी तरफ़ जा रही हैं। लड़खड़ाती हुई मंच पर आईं। सुनने-वालियों ने आगे खिसकना शुरू किया। किसी तरफ़ से आवाज़ आई “शराबिन सुनाइये, शराबिन।” किसी कोने से नारा बुलन्द हुआ, “ए मर्दे-सितमगार सुनाइये” लेकिन महफ़िल में ख़ामोशी छाते ही बोतल साहबा ने माइक्रोफ़ोन पर कहा—“तरह में कुछ शेर सुनिये। मैं तरह में शेर नहीं कहती, मगर मुझे यह बता देना है कि शायरा किसी की घरबन्द नहीं। वह कहना न चाहे यह दूसरी बात है, नहीं तो उसे मजबूर नहीं किया सकता।” यह कहकर वह कुछ गुनगुनाई, और इधर सिद्दीक़ भाई ने नोट बुक और पेन्सिल सँभाली। बोतल साहबा ने झूमकर सचमुच निहायत मस्त और मधुर आवाज़ में यह मतला पढ़ा :—

“मैं राइ का एक दाना परबत वो मरासर हैं

मैं इससे भी कमतर हूँ वो उससे भी बढ़कर हैं”

मुशायरी एक दम गूँज उठी। औरतों ने एक क्रयामत मचा दी। बार-बार मतला* पड़वाया जा रहा था। हमने देखा कि बेगम भी भूम-भूम कर 'वाह वाह' का शोर मचा रही थीं और सिद्दीक भाई की बेगम साहबा तो जैसे आपे से बाहर थीं। हृदय यह है कि खुद कटार साहबा, मुशायरी की सभानेत्री दिल खोल कर दाद दे रही थीं। हाँ, हम जरूर इस मतले को अजीब मसखरापन समझ रहे थे। लेकिन यह कुछ हमारी नासमझी ही थी इसलिये कि मर्दाने दर्जें का हर मर्द और बाहर तमाम औरतें भूम रही थीं। आखिर कई बार यह मतला पढ़ने के बाद बोलत साहबा ने दूसरा शेर पढ़ा :—

“यह खूबिये-क्रयामत है, यह ज़बे-मुहब्बत है
राज़ी जो न होते थे अब ख़ुद वो मेर सर है।”

न पूछिये। मालूम हुआ कि जैसे किसी ने ऐटम बम फेंक दिया। मुशायरी उड़कर रह गई। औरतें खड़ी हो-हो गईं। खुद हमारी बेगम साहबा ने पहले तो जाँघ पर हाथ मारे और इसके बाद हाथ जोड़ कर कहा—“सरकार, एक बार और पढ़ दीजिये, यह शेर नहीं क्रयामत है।”

बोलत साहबा ने मुस्करा कर पान की बहने वाली राल साड़ी के आँचल से बेपरवाही के साथ पोंछी, बालों की एक लट चेहरे से हटाई और बार-बार यह शेर पढ़ने के बाद अपनी ग़ज़ल के बाक़ी शेर भी उसी क्रयामत के शोर और 'वाह-वाह' के बीच सुनाये और अन्त में मक़ता पढ़ा :—

*ग़ज़ल की वे पहली दो पंक्तियाँ या शेर ज़िमकी दोनों पंक्तियाँ तुकान्त हों।

“‘बोतल’ तेरी मदहोशी मैं खूब सनभती हूँ
तू उनके लिये बोतल और तेरे वो सागर हैं।”

बोतल साहबा की ग़ज़ल ने मुशायरी को जगा दिया। उनकी ग़ज़ल ख़तम होमे के बाद औरतों ने बड़ा शोर मचाया कि “कुछ और कुछ और” मगर वह लड़खड़ाती डगमगाती मंच से उतर गईं। ख़याल यह था कि अब किसी शायरा का रंग न जमेगा, चुनान्वे यही हुआ कि फिर बहुत सी शायरा मंच पर गईं और रूखी-फीकी ग़ज़लें पढ़कर चली आईं। हद यह है कि एक भारी-भरकम महिला, जिनके बारे में सिद्दीक़ भाई ने बताया था कि यह भी बहुत बड़ी उस्तानी हैं, और जिनका उपनाम ‘पारा’ था, अपनी ठोस मगर ठस ग़ज़ल पढ़कर वापस आ गईं। इसी तरह बहुत सी शायरा आईं लेकिन ‘बोतल’ साहबा जो रंग जमा गईं वह किसी से भी हलका न किया जा सका। अन्त में ‘कटार’ साहबा ने अपनी ग़ज़ल पढ़ने के लिये गला साफ़ किया तो सिद्दीक़ भाई ने कहा—“इनकी ग़ज़ल तो बस तबरूक (प्रसाद) होगी। बहुत पुराने रंग में कहती हैं। वही दक्रियानूमी बंदिशें हांगी और वही अम्माँ हब्बा के वक़्त के ख़यालात।”

कटार साहबा ने चश्मा साफ़ करके नाक की कुंगी पर लगाया और ग़ज़ल शुरू कर दी। उनकी ग़ज़ल सचमुच योही सी थी और पढ़ तो इस तरह रही थीं जैसे नुस्खा लिखा रही हैं अपनी किसी रोगिणी के लिये। उनके इस शेर को सिद्दीक़ भाई ने नोट बुक पर लिखा :—

“मूँछें है तेरी ज़ालिम या दिल के लिये नश्वर
क्रांतिल न कहूँ क्योंकि कुछ ऐसे ही तेवर हैं।”

‘कटार’ साहबा की ग़ज़ल के बाद मुशायरी ख़तम हो गई और एक

[खुदानखास्ता

बबरदस्त शोर और हड़बोंग के साथ औरतें एक पर एक सवार हाल से निकलने लगीं । कुछ औरतें बोटल साहबा को घेर कर खड़ी हो गईं । उनमें हमारी बेगम साहबा भी थीं । आग़िर बड़ी मुश्किल से रात के तीन बजे बेगम हम लोगों को लेकर घर पहुँचीं ।

नौ

अब तक तो जिन्दगी जैसी कुछ भी थी, बहरहाल शान्तिपूर्ण जरूर थी। जो चीज पहले बहुत परेशान किये हुए थी यानी घरों की क़ैद और एक दम आज़ादी छीन कर बिल्कुल मजबूर और गुलाम बना देना, उसके तो हम क़रीब-क़रीब आदी हो चुके थे। यही क़ैद अब जिन्दगी बन चुकी थी और यही जिन्दगी अपने साथ कुछ न कुछ आनन्ददायक चीज़ें भी लिये हुए हमारे सामने थी, लेकिन अब एक बात कुछ दिनों से ऐसी पैदा हो गई थी कि हम दिल ही दिल में कुढ़ रहे थे और रात-दिन खुदा से दुआ करते थे कि हमको इस मुसीबत से बचा ले। बेगम को अब ताश खेलने और बाज़ी लगाकर ताश खेलने की आदत पड़ती जा रही थी। एक तो वह एक ऐसे क्लब की मेम्बर थीं जहाँ जुआ खेलने के एक सौ एक तरीक़े मौजूद थे दूसरे बहुत सी जुआरियों की संगत ने उनको तबाह कर रखा था। रुपया पानी की तरह इस लत के पीछे बहाया जा रहा था और हाल यह था कि अब मुश्किल से महीने में दो--एक रात को सही वक़्त पर घर आती थीं। कभी एक बजे आईं, कभी दो बजे और कभी सारी-सारी रात गायब। फिर अंधेर यह था कि इस अभागे जुए की लत के अलावा उन्होंने झूठ बोलना भी शुरू कर दिया था। कभी घर आकर यह न बतातीं कि जुआखाने में रुपया और समय दोनों बरबाद कर रही थीं, बल्कि हमेशा देर में आने का बहाना यही होता कि गश्त पर थी, यहाँ

भगड़ा हो गया था, वहाँ बलवा हो गया था। यह सरकारी काम था, वह सरकारी ड्यूटी थी। एक दिन हो, दो दिन हो तो कोई यकीन भी करले। अब तो तीनों दिन उनका यही नियम हो गया था कि रात के बारह एक बजे के पहले कभी न आती थीं। शुरू-शुरू में तो हम चुप रहे पर आखिर कहाँ तक रहते। अन्त में हमने पहले तो उनसे खुशामद की, गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ाकर समझाया पर अब उनको यह समझाना भी बुरा लगने लगा था और रात को देर में आने पर जहाँ हमने उनको टोका वह आपे में बाहर हो जाया करती थीं। हम यह बात उन्हें बताना न चाहते थे कि हमें इन सब बातों की खबर है। इसलिये कि यह जाहिर होने के बाद जो थोड़ी बहुत शर्म और संकोच बाक़ी था वह भी दूर हो जाता और कोई ताज्जुब न था कि फिर हमारा ही घर ताश खेलने वालियों का अड्डा बन कर रह जाता। अब तक सब कुछ था मगर बेगम चोरी के साथ सीना जोरी से काम नहीं ले रही थीं, हालाँकि अगर वह हमारे सर पर ही अपना यह अड्डा जमा देतीं तो हम उनका कर ही क्या सकते थे। मर्द का क्या बस चल सकता है सिवाय इसके कि वह अपनी आग में खुद ही जला करे। जलते, कुढ़ते और रह जाते पर इससे भी इनकार नहीं कि उनके रोज के मफ़ेद भूट भी अच्छे न लगते थे। अब तो उनको जैसे घर में कोई मतलब ही न था और न हमसे कोई दिलचस्पी। पहले हमेशा वह यह किया करती थीं कि तीसरे पहर को हवा खाने के लिये निकल जातीं। किसी महेली के यहाँ जायें या जहाँ भी जायें, रात को नौ-दस बजे तक आ जाती थीं। वापसी में कभी हमारे लिये मोज़े लिये चली आ रही हैं, कभी मफ़लर, कभी टाई, कभी कोई चीज़, कभी कोई चीज़। पर अब तो यह हाल था कि सेफ़्टी रेज़र के ब्लेडों तक के लिये अनेक बार तक्राज करने पड़ते थे और जवाब यह मिलता था कि नफ़ीसा से मँगालो, गुलशन ले आयगी।

सुदानखवास्ता]

हालाँकि नक़ासा पहले भी थी, गुलशन पहले भी बाहर का काम करती थी पर हमारा काम इन नौकरानियों पर कभी न टलता था। सारांश यह कि उनके ये बदले हुए तेवर हम देखते थे और मन ही मन में जला करते थे। इधर हमारे जासूस भी लगे हुए थे जो रोज़ की खबरें लाकर हमको देते थे कि आज बेगम साहबा वहाँ खेल रही थीं, आज उनके घर जुए की फड़ जमा थी। वास्तव में यह मनहूस खबर सबसे पहले हमको सिद्दीक़ भाई ने सुनाई थी; वल्कि उनकी बेगम ने हमसे कइलवाया था कि आज-कल यह हो रहा है,। रंग बेढव है। यदि फ़ौरन खबर न ली गई और आदी हो गई वह जुए की तब फिर पानी सिर में ऊँचा हो जायगा। मगर हम बेचारे घर के बैठने वाले मर्द, निर्बल जाति, सिवाय खुशामद के और कर ही क्या सकते थे और वहाँ खुशामद से काम चलता न दिखता था। खैर, यहाँ तक भी ग़नीमत थी। लेकिन आज शाम को जब बेगम जा चुकीं तब सिद्दीक़ भाई की डोली आकर लगी और उन्होंने निहायत परेशानी के साथ कहा—“भाई, वो तुम्हारी बहन मरे साथ आई हैं और तुमसे कुछ बातें करना चाहती हैं।”

हमने परेशान होकर कहा—“खैरियत तो है?”

सिद्दीक़ भाई ने कहा—“अब वही तुमको बतायेंगी। तुम सामने वाले कमरे में चले जाओ, मैं उनको अन्दर ही बुलाये लेता हूँ।”

हम सामने वाले कमरे में हट गये तो सिद्दीक़ भाई ने जमाल आरा बहन को अन्दर ही बुला लिया। हमने अन्दर से झाँक कर देखा तो वह भी परेशान सी नज़र आ रही थी। दरवाज़े के पास ही कुर्सी धिक्काकर बैठ गई और दरवाज़े के खुले हुए पट से लगकर सिद्दीक़ भाई खड़े हो गये तो जमाल आरा बहन ने कहना शुरू किया “भाई साहब, मैं आज आप को यह बताने आई हूँ कि आपकी बेगम साहबा अब

क्राबू से बाहर हो चुकी हैं और मुझे जो डर था वह भी आखिरकार सब निकला। मैं इसी वक़्त से डर रही थी कि इस ऊँचे पैमाने पर जुआ खेलने के लिये वह आखिर रुपया कहाँ से लायेंगी। तनवाह जाहे कितनी ही हो पर जुआ खेलने के लिये तो कुबेर का खज़ाना भी थोड़ा हो सकता है। गुरु-गुरु में उन्होंने आपको चकमा दिया पर जैसे-जैसे बाज़ियाँ बढ़ती गईं उतना ही रुपया उनके लिये कम पड़ता गया। खुदा जाने कितनी महाजनियों की कर्जदार हैं, न जाने कितनी मंहलियों का उधार चढ़ चुका है और खुदा जाने कितना रुपया मैंने चुपके-चुपके अदा कर दिया है पर आज जो बात मुझे मालूम हुई है वह बेहद अफ़सोसनाक है।”

हमने सिद्दीक़ भाई से कहा—“पूछो तो मही कि क्या बात?”

सिद्दीक़ भाई ने उनसे कहा—“आखिर तुम साफ़ बता क्यों नहीं देती इनको। ये बेचारे भी तो जान जायें कि क्या हो रहा है?”

जमाल बहन ने चुपके से कहा—“रिशवत लेनी शुरू कर दी है। आज ही एक क़त्ल की वारदात में बहुत बड़ी रक़म रिशवत के तौर पर वसूल की है और शम्सुन्निसा के घर पर जमी हैं। खुदा न करे अगर यह हराम उनके मुँह लग गया तब समझ लीजिये कि अन्धेर हो जायेगा। नौकरी भी जायगी और ज़िल्लत और बदनामी जो कुछ भी हो कम है।”

अब हमसे न रहा गया और हमने मारी शर्म और मंकोच को त्याग कर पहली बार जमाल आरा बहन से सीधे बात की “तो फिर आप ही बताइये बहन कि मैं इसका क्या इलाज करूँ। यह मेरी एक नहीं सुनती बल्कि अगर मैं कभी टोक दूँ तो आस्मान सर पर उठा लेती है, आपसे बाहर हो जाती है। उनके गुस्से में तो खुदा बचाये।”

सुदानरूवास्ता]

जमाल आरा बहन ने कहा—“मुझसे जहाँ तक हो सका मैं आपको समझा चुकी पर उन पर कोई असर ही नहीं होता। अब तक सरकार में नेकनाम थी। उम्मीद थी कि बहुत जल्द तरक्की कर जायेंगी पर क्या आप यह समझते हैं कि इन बातों की खबर ऊपर तक नहीं जायगी? वही चुड़ैलें, जो उनके साथ वारे-न्यारे किया करती हैं, एक-एक की हजार-हजार ऊपर जाकर लगाती होंगी। और अगर सुदानरूवास्ता इस रिशवत की खबर ऊपर तक हो गई तो फौरन जाँच शुरू हो जायगी और नौकरी के लाले पड़ जायेंगे। मैं तो खुद हैरान हूँ कि आखिर आपको किस तरह समझाऊँ?”

हमने कहा—“अच्छा, यह नहीं हो सकता कि आपकी कोशिशों में उनका तबादला यहाँ से हो जाय?”

जमाल आरा बहन ने कहा—“अगर तबादला हो भी गया तो फायदा क्या होगा। पड़ी हुई आदत थोड़े ही छूट जायगी। जहाँ जायँगी, अपने लिये एक गिरावट ढूँढ़ लेंगी। फिर तो यह होगा कि आपको खबर भी न हुआ करेगी। यहाँ तो मैं मौजूद हूँ। एक-एक खबर पहुँचाती रहती हूँ। फिर कौन यह मुखबिरी करने आयेगी?”

हमने बड़ी खुशामद से कहा—“बहन, खुदा के लिये इस बार को उजड़ने और आपको तबाह होने से बचाने के लिये कोई तरकीब तो निकालिये।”

जमाल आरा बहन ने कहा—“मैं तो कोशिश कर ही रही हूँ। मौका ढूँढ़ कर फिर समझाने की कोशिश करूँगी। लेकिन आप भी एक बार पूरा जोर लगाकर समझाने की कोशिश कीजिये। शायद कुछ समझ में आजाय।”

हम चुप हो रहे, और चुप न होते तो करते ही क्या। हमारे बस

में आखिर था ही क्या । जमाल आरा वहन और सिद्दीक भाई के जाने के बाद भी हम देर तक इसी फ़िक्र में रहे कि आखिर क्या होने वाला है । लेटने की कोशिश की मगर बिस्तर में जैसे काँटे बिछे हुए थे । इधर-उधर करवटें बदलकर उठ बैठे और परेशानी की हालत में आँगन में टहलना शुरू कर दिया । हम इतने परेशान शायद उम्र भर में कभी न हुए होंगे जितने आज परेशान थे । खुदा जाने हम कितनी देर आँगन में टहलते रहे कि आखिर ड्योड़ी पर नफ़ीसा ने आवाज़ दी—
“खुदाबन्श ! दरवाज़ा खोलो, बेगम साहबा आई हैं ।”

खुदाबन्श के बजाय हमने खुद दरवाज़ा खोला तो बेगम बड़ी ही ख़ुश और ख़राब हालत में घर में दाख़िल हुई और हमको देखकर आश्चर्य से कहा—“अरे, आप अब तक सोये नहीं हैं? खाने-पाने वाले हैं?”

हमने कहा—“नींद नहीं आ रही थी ।”

“नींद नहीं आ रही थी ? आखिर क्यों ?”

“डर लगता है हमको ।”

“डर ?” बेगम ने आश्चर्य से पूछा —“डर आखिर किस बात का ? खुदाबन्श है, करीम है, बाहर गुलशन है, नफ़ीसा है और फिर पहरे की सिपाहिन है ।”

हमने कहा—“घर के अन्दर मर्द ही मर्द तो हैं और वक़्त ऐसा आ लमा है कि कल ही शकुन्तला बजाजिन के यहाँ क़त्ल हो गया है । उसके प्रति को हमीदा ने मार कर सारा घर मूस लिया ।”

बेगम का चेहरा एक दम ज़र्द पड़ गया । कमज़ोर आवाज़ में बोलीं—
“ग़लत है । हमीदा ने उसको क़त्ल नहीं किया है । ख़बरदार जो अब हमीदा का नाम भी लिया । घर में बैठे-बैठे तुम मर्द लोग अजीब-अजीब क़िस्से गढ़ा करते हो ।”

सुदानसुवास्ता]

हमने कहा—“हमीदा ने क़त्ल नहीं किया तो फिर किस बात की रिशवत आप तक पहुँचाई गई थी ? और आपको शर्म नहीं आई उस सुबर के बराबर हराम चीज़ को कुबूल करते हुए । अब चाहे आप मुझे मार ही डालें मगर आज मैं आप से पूरी बात करके रहूँगा । अब तक मैं बहुत चुप रहा ।”

बेगम ने गुस्से से काँप कर कहा—“कुछ पागल तो नहीं हो गये हो । कमरे में चल कर बातें करो ।”

हमने कमरे में आकर कहा—“आप यह समझती हैं कि आप का रोज़ देर से घर में आकर बहानेबाज़ियाँ करना बहुत कामियाब गुर है । मुझे न तो यह ख़बर है कि जुए का बाज़ार गर्म है, न मैं शम्सुद्दिमा चुड़ैल को जानता हूँ, न मुझे मेहर अफ़रोज़ के यहाँ के जुए का कोई पता है और न मुझे उन सारे क़ज़ों के बारे में कुछ मालूम है जो आपने इस कमबख़्त जुए की वजह से अपने ऊपर लाद रखे हैं । और तो और, आज यह ख़बर भी आ गई कि आपने रिशवत जैसी हराम चीज़ भी कुबूल करली ।”

बेगम ने गुस्से से काँप कर कहा—“जब मैं इतनी ही बुरी हूँ, जब तुमको मुझसे इतनी ही शिकायतें हैं, जब मुझमें ऐसे ही कीड़े पड़े हुए हैं तो तुम आख़िर क्यों मुझ कमबख़्त का साथ दे रहे हो । अगर तुम अलग होना चाहते हो तो मैं इसके लिये भी तैयार हूँ ।”

हमने जल्दी से बेगम के मुँह पर हाथ रखते हुए कहा—“बस, जबान काबू में रखना । मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूँ । तुम्हारी ही भलाई के लिये तुमसे कहता हूँ, और यह जान कर कहता हूँ कि अब भी कुछ नहीं गया है । अगर तुम संभलना चाहती हो तो आज भी संभल सकती हो । तुम मुझसे कहो तो मैं तुम्हारी ही कमाई का इसी घर से इतना

रुपया निकाल कर दे दूँ कि तुम सारा कर्जा पाट दो। तुम क्या आखिर इस लाख के घर को खाक करना चाहती हो। नौकरी अलग खतरे में पड़कर रह गई है, बदनामी अलग हो रही है, तन्दुरुस्ती अलग खराब कर रही हो। यह रात-रात भर की जगाई आखिर कब तक तन्दुरुस्ती पर असर न करेगी। मैं तो आज तुमसे अपनी ही जान की कुसम लेकर रहूँगा कि तुम या तो इस बुरी लत में तौया करलो नहीं तो मैं तुमको बन्दूक लाकर देता हूँ। मुझे पहले गोली में उड़ा दो, इसके बाद तुमको एग्नितियार है, जो चाहो करती फिरो।”

पता नहीं उस वक्त हमारी क्रिस्मत कितनी अच्छी थी कि बेगम ने गुस्सा होने के बजाय नमी में कहा—“अच्छा यह बताओ कि ये खबर तुम तक किमने पहुँचाई?”

हमने कहा—“जिसने भी पहुँचाई हो, पर वह भी तुम्हारा दुश्मन नहीं हो सकता। तुम को क्या पता कि ये खबर पा-पाकर मैंने तुम्हारे सुधार की खुदाबन्द ताला में कैसी-कैसी दुआएँ की हैं और मुझे यकीन है कि उसने मेरी दुआएँ जरूर सुनी होंगी और मेरी अच्छी बेगम फिर उसी तरह पाकवाज बन जायेंगी जैसे वह कितरतन (स्वभावतः) हैं।”

उसकी शान के कुरवान कि बेगम ने एक बार हमको गौर में देखा, फिर आँखों में आँसू भर कर बोली—“मैं सचमुच हद में गुजर चुकी थी। तुमने मुझे बड़े अच्छे वक्त पर फिफोड़ दिया। तुमको जितनी खबरें मिली हैं सब ठीक हैं। मगर इस वक्त मैं तुमसे वायदा करती हूँ कि आगे तुम ये खबरें कभी न सुनाओगे। मैं अहद (प्रतिज्ञा) करती हूँ कि किसी तरह का जुआ कभी न खेलूँगी।”

हमने बढ़कर बेगम का हाथ अपने हाथ में लेकर चूम लिया और भावावेश में कहा—“मेरी सरताज, मेरी मलिका, तुमने मुझको

खुदानखास्ता]

झरीट लिया, तुमने मेरे दामन में मुह माँगी भीख डाल दी। .खुदाबन्द करीम तुमका रहती दुनिया तक सलामत रखे।”

बेगम ने हमका गले में लगा लिया और हमको सचमुच यह महसूस होने लगा जैसे सचमुच अन्दर ही अन्दर सुलगने वाली आग ठंडी पड़ गई है।

दस

बेगम आज कल छुट्टी पर थीं। छुट्टी इतिहासक्रिया या खुदा-नख्वास्ता बीमारी की नहीं थी, बल्कि बड़ी मुखारक छुट्टी पर थीं। वही छुट्टी जो नाजु किस्तान में सवा चार महीने की पूरी तन्त्राह के साथ दी जाती है यानी खुदा की मेहरबानी से उन्हें छटा महीना खत्म होकर सातवाँ महीना लग चुका था। चुनान्चे अब उनका सारा वक्त घर ही में बीतता था, अलबत्ता उनकी दिलचस्पी के लिये हमने सिद्दीक भाई की खुशामद करके उनको इस बात पर राजी कर लिया था कि वह अपनी बेगम साहवा की एक तरह से ड्यूटी लगा दें कि वह अपनी फुरसत के वक्त का ज्यादा हिस्सा हमारी बेगम ही के पास गुजारा करें। चुनान्चे जमाल आरा बहन तो खैर ज्यादातर बेगम के पास रहती ही थीं, उनके अलावा उनकी और सहेलियाँ भी बराबर उनका हाल पूछने के लिये आती-जाती रहती थीं। और उनकी जगह पर काम करने वाली कोतवालिनी साहवा भी उनके पास ही रहती थीं। इधर घर में हम और सिद्दीक भाई बच्चों के कपड़े सीने में लग जाते थे। कभी गद्दे, कभी छोटी-छोटी रजईयाँ, कभी लँगोट और कभी कुतें वगैरह तैयार करने में लगे रहते थे। जच्चाघर का सारा सामान पूरा करने के लिये हमको पग-पग पर सिद्दीक भाई की जरूरत थी, इसलिये कि इस सिलसिले में हम बिलकुल ही कोरे थे। खुदा जीता-जागता दिखाये, यह पहला ही बच्चा होने वाला था और सिद्दीक भाई तीन बच्चों वाले थे। वह तो इस

खुदानख्वास्ता]

मैदान के सिद्ध-हस्त खिलार्डी ठहरे, इसलिये उनकी ही मलाह से घुड़ी के नुस्से बँधवाये, गाँद और साँठौरे का सामान मँगाया, अल्लुवानी की तरकीबें पूछीं, जच्चा के लिये मुर्गी के चूँजे ढूँढ़-ढूँढ़ कर जुटाये और इसी तरह सातवाँ महीना भी कुशलतापूर्वक बीत गया। मिद्दीक भाई ने बताया था कि सातवें महीने में विशेष सावधानी की जरूरत है। अकेली-दुकली न रहने पायें बेगम, कहीं ऊँचा-नीचा पैर न पड़ जाय, कहीं डर न जायें। हम रोज़ाना न जाने क्या-क्या दुआ-दरुद पढ़-पढ़कर फूंकते रहते थे। उनकी मर्जी के खिलाफ़ कोई बात न होने देंतें, उनको आज से बहुत पहले से बन्कियाँ कहिये कि शुरू से ही मिचली की बहुत शिकायत थी। पान, गोश्त और इसी तरह कुछ और चीज़ों में नज़रत सी होकर रह गई थी। छिपा कर सोंधी मिट्टी खाने की लत भी पड़ गई थी। इन सारी बातों पर नज़र रखनी पड़ती थी। कोशिश करते थे कि जहाँ तक हो सके वह फल और दूध का इस्तेमाल ज़्यादा करें। शुरू-शुरू में तो बेहद कमज़ोर हो गई थीं लेकिन अब तो खुदा की मेहरबानी से बेहद तन्दुरुस्त मालूम होता था। आग़िर किसी न किसी तरह वह दिन भी आ गया जिसका इन्तज़ार था। या तो हमारा हिसाब ग़लत था या बेगम जल्दबाज़ थीं और उनसे अधिक जल्दबाज़ था उनका होने वाला बच्चा। आग़िरकार रात को दो बजे में दर्द शुरू हुआ और उसी वक़्त टेलीफ़ोन करके बड़े अस्पताल की डाक्टरनी को ख़बर दी गई। वह दो नर्सों के साथ फ़ौरन आ गई और सुबह आठ बजे नफ़ीसा ने आवाज़ देकर यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि बच्चा हुई है। हमने खुदावरण के हाथ नफ़ीसा को पाँच रुपये भिजवा दिये।

नाज़ुकिस्तान में लड़का पैदा होने पर एक तरह की बेपरवाही सँभरती जाती है। लेकिन लड़की पैदा हो तो मालूम होता है कि हर तरफ़

से खुशी उबल रही हैं। चुनांचे हमारे यहाँ भी यही हुआ कि थोड़ी ही देर में घर में डोम आ धमके और दरवाज़े पर शोहदिनों ने चिल्ली-पुकार शुरू कर दी कि “जच्चा-बच्चा सलामत रहें।” सिद्दीक भाई सबको इनाम-बख्शिशा देने के इन्चार्ज थे। उन्हीं के हाथ में खर्च था और वहाँ उचित ढंग से खर्च भी कर सकते थे। हमको तो बस यह फ़िक्र थी कि बार-बार बेगम की और बच्ची की ख़ैरियत पूछते रहें। आग़िर बड़ी मुश्किल से डाक्टरजी ने इजाज़त दी कि साहब लोग जो आना चाहते हैं वह मित्र पाँच मिनट के लिये बच्ची को देख जायें। चुनांचे हम और सिद्दीक भाई दौड़े उस कमरे की तरफ़ जो जच्चाघर बनाया गया था। सिद्दीक भाई तो दरवाज़े तक जाकर रुक गये पर हम बेगम के पास गये जो चुपचाप लट्टी मुस्करा रही थी। हमने जाते ही उनके सर पर हाथ फेरकर पूछा—“अब कैसी तबियत है?”

बेगम ने बच्ची की तरफ़ इशारा करते हुए कहा—“अपनी माहब-जादी में पूछो, मुझसे क्या पूछ रहे हो?”

हमने बच्ची को देखा। मालूम होता था कि गद्दे पर एक चाँद का टुकड़ा पड़ा है। हमने बढ़कर गद्दा उठाकर बच्ची को ग़ौर से देखा और फिर बेगम को दिखाते हुए कहा—“सचमुच तुम्हारी बच्ची मालूम होती है।”

बेगम ने कहा—“और तुम्हारी तो जैसे हैं ही नहीं।”

हमको एकाएक खयाल आया कि सिद्दीक भाई बच्ची को देखने के लिये दरवाज़े से लगे खड़े हैं। और हम फ़ौरन गद्दे सहित बच्ची को लेकर बढ़े उनकी तरफ़। सिद्दीक भाई ने गद्दा लेकर बच्ची के हाथ में सौ रुपये का नोट रख दिया। हमने कहा—“वाह, यह क्या हरकत है?”

सिद्दीक भाई ने कहा—“तो तुमसे क्या मतलब? मैं अपनी बच्ची को दे रहा हूँ, तुम कौन होते हो रोकने वाले?”

खुदानखास्ता]

हमने बेगम के पास जाकर कहा—‘सुन रही हो? यह नहीं मानते सिद्दीक भाई। सौ रुपये का नोट उसके हाथ में पकड़ा दिया है।’

बेगम ने कमजोर आवाज में कहा—‘रहने दो देखा जायगा।’

इतनी देर में दो-तीन बार डाक्टरनी दरवाजा थपथपा चुकी थीं। हम दोनों वहाँ से चले आये और ज़ाखाने में फिर औरतों का राज हो गया। इधर हम दोनों ने आकर इनाम-बख्शिश, दान-मैरात के भण्डों में अपने को फँसा लिया। खुदाबख्श और करीम दोनों रुठ गये कि हमको साहबजादी को क्यों न दिखाया। जब आप लोग थे, हमको भी बता दिया होता तो हम भी देख लेते। उनसे लाख-लाख कहा कि अगर तुम लोग दरवाजे के पास जाकर नज़ीसा या गुलशन से कहो, तो वह तुमको दिखा देंगी। मगर खुदाबख्श तो हमेशा का ढीठ है, मगर करीम का मारे शर्म के बुरा हाल था कि वहाँ पचासों तो औरतें भरी हुई हैं, मैं कैसे जा सकता हूँ दरवाजे के करीब। अगर किसी ने आवाज सुन ली मेरी तो क्या कहेंगी दिल में कि कैसा बेशर्म मर्द है। सिद्दीक भाई ने कहा—‘हाँ हाँ, तुम सचमुच न जाओ। यह कोई नहीं समझेंगी कि यह मियाँ खुदाबख्श हैं या मियाँ करीम। सब यहाँ कहेंगी कि कोतवालिनी साहबा के यहाँ के मर्द कैसे बेशर्म हैं।’

बच्चा के जन्म दिन से लेकर छुट्टी के दिन तक घर में खासी चहल-पहल रही। छुट्टी भी बड़ी धूम-धाम से मनाई गई। अनेक थानेदारनियाँ बधावा लेकर आईं और जमाल आरा बहन ने तो कमाल ही कर दिया। इतने बड़े जुलूस के साथ बधावा लेकर आईं कि सारे शहर ने यह जुलूस देखा होगा। मात-आट क्रिस्म के तो बाजे थे, फिर बच्चे के कपड़े, ज़ेवर, चाँदी के चट्टे-बट्टे, सोने के भुंभुने, पालना, प्रम्बलेटर और बड़ी ही अच्छी जाति की बकरियाँ भी थीं। मालूम यह हुआ कि ये बकरियाँ बच्चे को दूध पिलाने के लिये छुट्टी में साथ जाती हैं। हमने

इस तकलीफ़देह तकल्लुफ़ के खिलाफ़ बहुत शोर मचाया। लेकिन सिद्दीक़ भाई ने घर में हमको और जमाल आरा बहन ने बाहर बेगम को डाँट-डपट कर चुप कराया। उन दोनों मियाँ बीबी को सचमुच बड़ी खुशी थी। अगर अपने सगे होते तो शायद वह भी इतने ही खुश होते। छट्टी के बाद छोटा नहान और बड़ा चिल्ला भी सकुशल हो गया और बड़े चिल्ले के बाद अब समझिये कि बेगम का काम जिस क्रूर था वह ख़तम हो चुका था और अब यहाँ से हमारी ज़िम्मेदारी शुरू होती थी। बेगम ने बड़े चिल्ले के दूसरे ही दिन अपनी नौकरी का चार्ज ले लिया और बच्ची के पालन पोषण के ज़िम्मेदार अब हम हो गये। इस मिलसिले में भी हमको सिद्दीक़ भाई के मशविरों की क्रूर-क्रूर पर ज़रूरत होती थी। लेकिन जिसने भी कहा है बिलकुल सच कहा है कि मुश्किल दरअसल खुद मुश्किल नहीं होती बल्कि उसका ख़याल मुश्किल होता है। नहीं तो वह तो जब आ पड़ती है, फ़ौरन आसानी में बदल जाती है। चुनांचे थोड़े ही दिनों में बच्ची की नियमित रूप से देख-भाल हम करने लगे। जिसको इस कल्पना मात्र से कँपकँपी आ जाती थी कि बच्चे पालना पड़ेंगे, उसे अब मां बनकर बच्ची को पालना पड़ रहा था। बच्ची के दूध के समय हमने नियत कर लिये थे। सुबह उठते ही मां के पास ले जाकर दूध पिलवा लेते थे। फिर जब बेगम तैयार होकर बाहर जाने लगती थीं, दूध पिलवा लेते थे। बीच में एक बार वह बाहर से खुद आ जाया करती थीं दूध पिलाने। फिर तीसरे पहर और इसी तरह बँधे हुए वक़्तों पर दिन-रात में छः बार दूध दिया जाता था। रात को भी बच्ची हमारे ही पास रहती थी। शुरू-शुरू में दो बार और फिर रात को एक ही बार बेगम को दूध पिलाने की तकलीफ़ देते थे। रह गई बाक़ी देख-भाल, उससे बेगम को कोई मतलब न था। हम ही उसको नन्हे से टब में नहलाने थे, जिस्म पर पाउडर

खुदानखास्ता]

लगते थे, ग्लीसरॉन से जवान साफ़ करते थे, ग्राइप वाटर देते थे । रात को रोये तो थपकते थे, सहलाते थे, चुमकारते थे और अपनी नींद उसके आराम पर तजे हुए थे । वह जैसे-जैसे बढ़ती जा रही थी, उसकी जरूरत भी बढ़ रही थी, मसलन अब हमको उसके लिये स्वेटर बुनना पड़ते थे, फ्राकें बनाना पड़ती थीं और दिन-रात उसमे बातें करना पड़ती थीं । बड़ी ही अजीब क्रिस्म की बातें, बे सिर-पैर की, जैसे—आगूँ गट्टे चेवी मारे ठट्टे । वह रो रही है और हम कंधे मे लगाये टहल-टहल कर गा रहे हैं :—

“अपनी ब्रिटिया का मैं रोने न दूँगा
आये सौदागर गुड़िया ले दूँगा ।”

उसको पैरों पर आँधाकर भुज्जू भोट कर रहे हैं :—

“भुज्जू भोट, मम्मा सोटे
सुमानी ने कहा सोने के होटे”

और साहबबादी जरा हँस दीं तां जैसे सारी क़ामत वसूल हो गई । वह मोना चाहती है और हम लोरियाँ गा रहे हैं :

“आजा री निर्दिया तू आ क्यां न जा
वेबी को मेरी सुला क्यां न जा ।”

आज उनको क्रब्ज है और हम पेट बजा-बजा कर उभार का अन्दाजा कर रहे हैं । हाँग मल रहे हैं पेट पर । आज उनको सर्दी की शिकायत हो गई है और हम कुकराँदे की पत्ती का अक्रॉ निकाल कर उनको पिला रहे हैं । आज उनकी पसली चल रही है और हम बारा-सिंघा घिसते फिर रहे हैं, क़ैरूती ढूँढते फिरते हैं । कभी पैरों पर बिठाये सिस्कार रहे हैं, कभी गोद में लिये चुमकार रहे हैं । कभी उनको

उछल रहे हैं और कभी उनको लिये खुद उछल रहे हैं। बेगम को उनकी खबर नहीं, बल्कि पहले तो दूध के सिलमिले में पाबन्दी भी थी लेकिन धीरे-धीरे उनकी सरकारी मसरूफियत बढ़ती गई और अन्त में हमको ऊपर के दूध पर बच्ची को लगाना पड़ा। सांगंश यह कि अब बच्ची को बेगम में कोई वास्ता ही न रहा और वह मोलह आने हमारे जिम्मे होकर रह गई। हमको खुद ताज्जुब है कि हमको उसे रखना, उनकी देख-भाल करना और उसकी जरूरतों को समझना किस तरह आ गया। अलबत्ता एक बार जब उसने बुरी तरह रोना शुरू किया और हम पेट के दर्द के सारे इलाज कर चुके और वह चुप न हुई तो सिद्दीक भाई को फिर बुलाना पड़ा और उन्होंने आते ही बताया कि तुमने असावधानी से इसे उठाकर इसकी हँसुली उगवाड़ दी है। आखिर उन घेबाने ने हँसुली बिटाई। इसके बाद कई बार मोढ़े उखाड़े और खुद ही बिटाये। हँसुली भी एकाध बार और उगवाड़ी लेकिन हमने आप ही बिटाली। खैर, यह जमाना तो किसी न किसी तरह गुज़र गया। जब उसके दाँत निकलने को हुए तब उसकी हालत बहुत खराब हो गई। ऊपर के दाँतों में आँखें खूब दुखी और नीचे के दाँतों में तो दस्तों ने उनको बिल्कुल लथपथ कर दिया। अच्छी-मामी गोल-मटोल डबल गोठी जैसी लौंडिया सूख कर काँटा हो गई। लेकिन सिद्दीक भाई के चुटकुलों में कुछ ही दिन में फिर ठीक होना शुरू हो गई। हाँ, हमारे लिये अब न दिन का आगम था न रात की नींद। बेगम बड़े मझे से थोड़े बेचकर सोया करती थी और हम सारी-सारी रात गद्दे बदलने में, लंगोट बाँधने और खोलने में, थपकियाँ देने और चुमकारने में, लोरियाँ सुनाने और बहलाने में गुज़ार देते थे। शायद बाप की इन्हीं सेवाओं के कारण नाजुकिस्तान में मशहूर था कि बाप के पैरो तले जन्नत है। माँ के दूध और बाप की सेवा का हक बिल्कुल बराबर था। माँ बच्चे

सुदानखास्ता]

को यह कहकर धमकाती थी कि दूध न बकूँगा और बाप यह कह सकता था कि खिदमत न बकूँगा। लेकिन फिर भी वंश चलता था मां के नाम से। सारे अदालती और सरकारी कागजात में बाप के नाम के खाने में मां का नाम लिखा जाता था। खैर, हम इन सेवाओं से खुश थे। हमारी बच्ची जिसका नाम अक्रीफे (मूँडन) के दिन 'शौकिया' रख दिया गया था, बड़ी ही दिलचस्प बच्ची बन गई थी। बैठने के अलावा कुछ-कुछ रेंगने भी लगी थी। हम उसके सामने बहुत से खिलौने डेर कर दिया करते थे। वह बैठी खेला करती थी और हम कुछ न कुछ सीते-पिरोते रहते थे। अब तो वह बच्ची हमको खुद अपना खिलौना महसूस होने लगी थी। बेगम के बाहर जाने के बाद उसी बच्ची से हम दिल बहलाते थे और दिन का पता न चलता था कि कब शुरू होकर कब खत्म हो गया। खुदा रक्खे बड़ी ही हँसमुख बच्ची थी। रोना तो जैसे जानती ही न थी जब तक कि उसे कोई तकलीफ न हो। लेकिन अब घर के बाक़ी कामों में हिस्सा लेते हुए हमको ज़रा मुश्किल महसूस होती थी। फिर भी वे काम भी करना ही पड़ते थे। अब काम करने का यह ढंग हो गया था कि बच्ची गोद में सो रही है और हम बेगम के माँगने पर बाहर भेजने के लिये ख़ासदान में पान बना-बनाकर रख रहे हैं। उसको कंधे से लगाये हुए हैं और बेगम के लिये खाना भी निकालते जाते हैं। वह कलेजे से चिमटी हुई है और हम मशीन पर बैठे बेगम की साड़ी में फ़ोता टाँक रहे हैं। कभी-कभी बेगम भी साहबज़ादी का दुलार किया करती थीं। मगर बस इस तरह कि बाहर से आईं, गोद में लिया, चुमकारा "अरी तू बड़ी शरीर है, बिलकुल अपने बाप की तरह। मां की परछाईं भी पड़ती तो पाक हो जाती।"

हम कहते—“और क्या, अच्छा पूछ लो, किसकी बेटी है?”

बेगम कहती—“हमारी शौकी किसकी बेटी है ?”

वह बड़ा सा मुँह खोल कर कहती—“आबू ।”

और हम खुश हो जाते । बेगम भी शिष्टतावश पहले तो हँस देतीं और फिर लौंडिया को एक तरफ़ लिटाकर कहतीं “अरे अरे, बड़ा गुज़ब किया इसने, पेशाब कर दिया ।”

लीजिये दुलार इत्तम । लौंडिया फिर हमारे पास और वह गुसलखाने में ।

— — —

ग्यारह

आजकल बेगम बहुत अधिक व्यस्त थीं। देश में एक कानून तोड़ने वाली पार्टी पैदा हो गई थी जिसने बड़े जोर शोर से 'मर्द राज' का आन्दोलन शुरू कर दिया था और सरकार की ओर से इस आन्दोलन को विद्रोहात्मक कहकर कुचलने का पूरा प्रयास किया जा रहा था। इस आन्दोलन की सबसे बड़ी नेत्री मोहिनी देवी थीं। आजकल सारे अम्बबार इसी आन्दोलन के पक्ष या विरोध में भरे होते थे। हमारी समझ में नहीं आता था कि आखिर इस आन्दोलन का उद्देश्य क्या है और सरकार ने इस आन्दोलन को विद्रोहात्मक क्यों कह दिया है। आखिर एक दिन जब उसी आन्दोलन के सिलसिले में एक जलमे में बेगम गोली चलवाकर और गिरफ्तारियाँ करके रात को घर आई तो हमने उनसे पूछा—“आखिर यह तूफान है क्या और इन विद्रोहिनियों का मकसद क्या है ?”

बेगम ने कहा—“तुम्हारी समझ में न आयेंगी। ये राजनीतिक बातें हैं।”

हमने बुरा मान कर कहा—“बताने से सब कुछ समझ में आ सकता है। मगर आप तो कोई बात बताना ही नहीं चाहती।”

बेगम ने वहीं उतारते हुए कहा—“अरे साहब, यह पार्टी हुकूमत का तख्ता उलटना चाहती है। इन्कलाबी पार्टी है, एकदम से काया पलट चाहती है। इस आन्दोलन की सरगना मोहिनी देवी का मकसद

मह है कि जिस तरह यहाँ औरतो का राज है उसी तरह मर्दों का राज होने चाहिये और औरतो को मर्दों की तरह घर में घुस कर बैठना चाहिये। वह कहती हैं कि मर्द औरतो के अच्छे रक्षक, देश के अच्छे शासक, फौज के अच्छे सिपाही और हर मैदान में औरत से अच्छे साबित हो सकते हैं और औरते सारे घरेलू मामलों में मर्द से अच्छी शरवालियाँ साबित हो सकती हैं।”

हमने कहा—“कहती तो ठीक है बेचारी।” बेगम ने कहा—“यह कहोगे तो मैं अभी तुमको गिरफ्तार कर लूँगी। आज ही जलसे में पचास के करीब मर्द भी गिरफ्तार हुए हैं। इस आन्दोलन का एक नतीजा यह भी हो रहा है कि घरों में बैठने वाले मर्द बाहर निकल रहे हैं। बेवकूफ तो बेवकूफ। वे यह समझते हैं कि यह मूर्खतापूर्ण आन्दोलन सचमुच कामियाब हो सकता है और नाज़ किस्तान में मर्दों का राज कायम हो सकता है। खैर, मर्दों से तो कोई ताज्जुब नहीं, इसलिए कि बेचारे नासमझ होते हैं, जो उनको समझा दिया गया, समझ लेते हैं। लेकिन ताज्जुब तो होता है उन औरतों पर जो मर्द राज के नागे लगाती हैं। आखिर वह क्या समझकर इस आन्दोलन में शामिल हुई हैं?”

हमने कहा—“आज दैनिक ‘सहेली’ में कोई खलीफ़ुन्निसा बेगम सादबा हैं, उनका बहुत ज़बरदस्त बयान छपा है।”

बेगम ने कहा—“अच्छा? मैंने नहीं देखा। कहाँ हैं अस्त्रबार, ज़रा लाओ तो सही।”

हमने कहा—“अब खाना खा लेती। इसके बाद अस्त्रबार भी देख लेना। सारा दिन होगया। योही ज़रा सा नाश्ता किये हुए निकली हो।”

बेगम ने कहा—“मैं खाना खाती हूँ। तुम ज़रा वह बयान पढ़कर

खुदानख्वास्ता]

सुना दो। वह बड़ा जरूरी बयान है। मुझे तो इन बेगम साहबा के किसी बयान का इन्तज़ार ही था।”

बेगम खाने पर बैठ गई और हमने दैनिक ‘महली’ लाकर खली-क़ुलिसा बेगम का बयान पढ़ना शुरू किया:—

“सच बोलती हूँ भूट की आदत नहीं मुझे”

मुझसे कहा जा रहा है और बड़े इस्तेमाल से कहा जा रहा है कि मैं मर्दराज आन्दोलन के बारे में अपनी राय जाहिर करूँ। एक तरफ़ ज़बान बन्द रखने के क़ानून और सरकार की वहशियाना सख्ती है। मगर यह ताक़त ख़ुदा ने सिर्फ़ सच ही को प्रदान की है कि वह सूली के तख़्त पर भी सच ही रहता है। इसलिये सरकार की यह कोशिश कि वह तलवार दिखा कर सच्चाई को डरा देगी, सिवाय घबराहट और पागलपन के और कुछ नहीं। मर्द राज के समर्थन में जो ठोस दलीले हैं उनका जवाब अगर ताक़त के बजाय इस्तेमाल से न किया जाता तो समझने और समझाने का मौक़ा भी पैदा हो सकता था। बहुत मुमकिन था कि औरतों के राज के समर्थन में भी कुछ पहलू निकलते और अगर सरकार को अपने मौजूदा निज़ाम पर ऐसा ही भरोसा था तो उसको चाहिये था कि मर्दराज आन्दोलन को कुचलने की कोशिश के बजाय मौजूदा निज़ाम के समर्थन के लिये हमको दलीलों में क़ायल करती। लेकिन दलीलों का जवाब ताक़त से देना अपने में खुद हार मानने का इक़रार करना है। और इसके मानी सिवाय इसके और कुछ नहीं कि सरकार बौद्धिक रूप से हमको क़ायल करने में असमर्थ रहकर अपनी ताक़त के जरिये ख़ामोश करना चाहती है। बहुत मुमकिन है कि सरकार का यह व्यवहार कुछ देर के लिये लोगों की ज़बान बन्द करने में सफल हो जाय लेकिन वह इस ज़रूरे को

हमेशा के लिये जगा देगा कि सरकार के पास सच्चाई को दवाने के लिये पुलिस के डंडों और फौज की तोपों व बन्दूकों के सिवाय कोई उचित जवाब न था। अगर मैं यह कहूँ तो ग़लत नहीं होगा कि इस आन्दोलन को बढ़ाने, इस आन्दोलन की सच्चाई को जाहिर करने और इस आन्दोलन में जन-भाधारण में हमदर्दी पैदा करने के लिये सरकार का यह विरोधी रुख ही वास्तव में दोस्ताना रुख है और उसके डमी रुख से इस देश में इस आन्दोलन की जड़ें मजबूत होंगी। शायद सरकार को इसकी खबर नहीं है कि किसी राष्ट्रीय आन्दोलन में सहीद होने वालियाँ मरती नहीं बल्कि बोई जाती हैं। वे मिट्टी में मिलकर अपनी ही जैसी हजारों देश-मेविकाएँ इस तरह पैदा कर देती हैं जिस तरह एक बीज ज़मीन में जाकर हजारों फल और फूल दे देता है। हमारा राष्ट्रीय आन्दोलन हमारे क़ौमी नारों में कहीं ज़्यादा हुकूमत की तलवार की भनकारों में जाग रहा है और जागेगा।

‘मर्दराज’ का समर्थन मैं कर रही हूँ। मैं औरत हूँ, मेरे माने में एक औरत का दिल है और उसी दिल से यह सच्चाई उमड़ कर मेरी क़लम की ज़वान पर आ रही है कि मर्द का राज्य प्रकृति की इच्छा के सर्वथा अनुकूल है। कोई कमजोर किसी शहजोर का रक्षक नहीं हो सकता। औरत और मर्द की शारीरिक बनावट ही उस दावे का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि औरत घर में बैठ कर मर्द के दिल पर राज करने के लिये बनाई गई है और मर्द ज़िन्दगी से लड़ने और ज़िन्दगी की मुश्किलों का मुक़ाबला करने के लिये दुनिया में आया है। हमको नाज़ुकिस्तान में हर तरह की आज़ादी हासिल है मगर हमारे दिलों को इन्मीनान नहीं है। हमको इस तृप्ति के बावजूद एक तृष्णा का अनुभव होता है। वास्तव में वह कमी है प्रेम की, मुहब्बत की; वह कमी है नाज़र-दारियों की; वह कमी है नाज़ व अन्दाज़ की जो औरत के जन्मजात

खुदानखास्ता]

अधिकार हैं। औरत अपनी प्रकृति से ही प्यासी होती है मर्द की ओर से की जाने वाली पूजा की, मर्द की तरफ़ से आग्रह और अपनी ओर से आग्रह को तीव्र बनाने के इनकार की। वह चाहती है, वह साकार नाज हो और मर्द उसका नाजबरदार, मर्द उस पर और वह मर्द के दिल पर हुक्मत करे। नाजुकिस्तान ने छिल्ली आजादी और नुमायशी हुक्मत तो हासिल करली पर औरत की इन प्राकृतिक माँगों को नेस्त-नाबूद कर दिया है। फिर भी आग़िर कहाँ तक काग़ज़ की नाव चले, अब उसके डूबने का वक़्त आ चुका है और प्रकृति की इच्छा के खिलाफ़ सरकार ने जो व्यवस्था बना रखी है, वह बहुत जल्द बिखरने वाली है। हम कुछ दिखावे के अधिकारों के बदले अपनी प्राकृतिक माँगों को नज़रन्दाज़ नहीं कर सकते।”

बेगम ने बड़े ग़ौर से इस बयान को सुना और खाना खाती रहीं। जब हमने बयान पढ़कर ख़त्म किया तो बेगम ने बड़े चिन्तित स्वर में कहा—“बड़ा ज़हरीला बयान है। हो सकता है कि मुझे आज ही ख़लीफ़ा बेगम की गिरफ़्तारी का हुक्म मिल जाय और ‘सहेली’ अख़बार के दफ़्तर पर भी छापा मारना पड़े। यह आन्दोलन रंग लाकर रहेगा। सुना है कि बेगमगंज में तो कर्षू आईर तक लगाया जा चुका है।”

बेगम ये बातें कर ही रही थीं कि बाहर से बड़े जोर के नारों की आवाज़ आने लगी—“इन्क़लाब जिन्दाबाद”, “मर्दराज जिन्दाबाद” “मोहनी देवी जिन्दाबाद” “ख़लीफ़ा बेगम जिन्दाबाद” “गोलियों चलाने वालियों का नाश हो” “पुलिस पर भाड़ू फ़िरे” “सरकार का मुर्दा निकले।” बेगम ने तुरन्त कोठे पर चढ़कर हमको आवाज़ दी और हम भी कोठे पर आ गये जहाँ से सब कुछ साफ़ नज़र आ रहा था। कोतवाली के फाटक पर हज़ारों औरतों की भीड़ थी, जो एक

भंडा लिये खड़ी नार लगा रहा थी। भंडे पर कुछ भाड़ू सी बनी हुई थी। हमने बेगम से पूछा—“यह भंडे पर भाड़ू सी क्या बनी है?”

बेगम ने मुस्कराकर कहा—“यह भाड़ू नहीं मूँछ है। इसका मतलब है कि यह इन्कलाबी पार्टी मूँछ राज चाहती है, यानी मर्दराज।”

बेगम हमको समझा ही रही थी कि उस मजमे ने कोतवाली के सामने ही एक जलमे का रूप धारण कर लिया और एक नवयुवती ने एक ऊँची जगह पर खड़े होकर ये जोशीली कविता पढ़नी शुरू कर दी :—

जान देने आये हैं हम सर कटाने आये हैं
हम कफ़न बाँधे हुए हैं जिम्मे सर पर लाये हैं।
ज़िन्दगी का नाच होगा गोलियों की मार में
चूड़ियाँ खनकेंगी अब तलवार की भनकार में।
हम हुक्मत को भी अब नाकों चने चबवायेंगे
वह हमें रेंदेंगी और हम लहलहाते जायेंगे।
मौत ही को ज़िन्दगी अपनी बनाना है हमें
गोलियाँ सीनों पे खाकर मुस्कराना है हमें।
औरतों के हाथ ही अब औरतों की लाज है
इम्तहाँ का वक़्त सुन लो, औरतों, तुम आज है।
औरतों के सर पे बेढंगा सा है मदों का ताज
हमको मदों के लिये लेना पड़ेगा मर्दराज।

इस कविता के बाद फिर “मर्दराज ज़िन्दाबाद, इन्कलाब ज़िन्दाबाद, मोहनी देवी ज़िन्दाबाद, खलीकुन्निसा ज़िन्दाबाद, पुलिस पर भाड़ू फिरे, सरकार का मुर्दा निकले, गोलियाँ चलाने वालियों का नाश

खुदानखास्ता]

हो ” के नारे लगने लगे और एक दूसरी महिला ने बड़े जोशीले भाषण में आज के जत्से में गोली चलाने पर पुलिस को और बेगम का नाम लेकर उनको, बहुत ही सख्त-सुख्त कहा और बेगम खड़ी मुस्कराती रहीं। आखिर जब भाषण करने वाली ने अपने जोश में यह कहा:—

“औरतो !

तुम्हारी ग़ैरत कहाँ है ? तुम्हारा इन्तक़ाम का जज़्बा कहाँ सो रहा है ? तुम्हारी बहनों को पुलिस ने जिम बेरहमी के साथ गोलियों का निशाना बनाया, उसका बदला लेने का वक़्त यहाँ है। तुमको अगर मारना नहीं आता तो मरना क्या भूल रही हो.....।”

इस भाषण को अधूरा छोड़ कर बेगम नीचे उतर आई और पहले तो टेलीफ़ोन पर किसी से बातें करती रहीं, इसके बाद जल्दी-जल्दी वर्दी पहनकर रिवाल्वर भरा और बाहर निकल गई। यहाँ डर के मारे हमारा बुरा हाल था। सोच रहे थे कि न जाने क्या होने वाला है। हम फिर कोठे पर चढ़ गये। बेगम ने बाहर जाकर पहरा और भी कड़ा कर दिया और मजमे को छूट जाने की बराबर सलाह दे रही थीं पर मजमा कोतवाली पर हमला करने के भयानक इरादे से एकत्र हुआ था। इतने में घुड़सवार पुलिस का एक बहुत बड़ा दल आ पहुँचा और सवार-नियो ने मजमे को दूर तक हटा दिया। परन्तु भाँड़ भंग न हो सकी। आखिर बेगम ने हवाई फ़ायर करने का हुक्म दिया जिसका नतीजा कुछ अच्छा निकला। हर तरफ़ से ‘ऊई ऊई’ कह कर भागने वालियों को आवाज़ें आने लगीं। कुछ बाक़ी रह गई थीं। उनमें वह भाषण देने वाली और कविता पढ़ने वाली भी थी। उन दोनों को गिरफ़्तार करने के बाद शेष भीड़ को सवारनियों ने तितर-बितर कर दिया। सारी रात कोतवाली पर ज़बरदस्त पहरा रहा। बेगम भी रात भर वर्दी पहने

[खुदानखुवास्ता]

अपनी कार पर शहर का गश्त करती रहीं और सारी रात जाग कर बितादी। इधर घर में हमको मारे डर के नींद न आ सकी कि खुदा जाने कब कोतवाली पर हमला हो जाय। लेकिन रात सकुशल बीत गई।

बारह

एक तरफ तो नाजुकिस्तान में इस आन्दोलन का जोर था, सारे देश में जैसे आग भी लगी हुई थी, जेलों में जगह न रही थी और दूसरी तरफ मुर्मावत यह थी कि नाजुकिस्तान विधान सभा के चुनाव सर पर थे। एक तूफान मचा था बल्कि बेगम का तो खयाल था कि मर्दराज का आन्दोलन इसी चुनाव की वजह से है। मर्दराज आन्दोलन के टिकट पर उम्मीदवारनियाँ खड़ी होंगी और चुनाव लड़ेंगी। आज-कल अखबारों में भी इसी तरह का प्रचार हो रहा था। दैनिक 'सहेली' की सम्पादिका स्वयं मर्दराज दल की थी। और उनका अखबार मर्दराज आन्दोलन का सबसे बड़ा वकाल था। पूर्ण मर्दराज की मंजिल तो खैर अभी दूर थी लेकिन मर्दराज दल की इस वक़्त सबसे बड़ी कोशिश यह थी कि विधान सभा में उसका बहुमत रहे जिसमें कि तलाक़ अधिकार, बेपर्दगी का अधिकार, नागरिक अधिकार आदि मर्दों को भी दिला सके और स्वयं विधान सभा में मर्दों के लिये कुछ सीटें सुरक्षित हो सकें। लेकिन सरकार की तरफ से पूरी कोशिश हो रही थी कि मर्द को इनमें से एक भी अधिकार न मिलने पायें। यदि मर्द को कोई एक भी अधिकार मिल गया तो वह सरकार और इस सारे निज़ाम का तख्ता उलट कर रख देगा। सरकार के इशारे पर कुछ और संस्थाएँ भी पैदा हो गई थीं जैसे 'पुरुष पर्दा रक्षक दल' जिसका उद्देश्य यह था कि चाहे कुछ भी हो, मर्द का पर्दा हर हालत में कायम रहे और उन सारे

आन्दोलनों का मुकाबिला किया जाय जो मर्द की आजादी और बेपर्दगी का आन्दोलन लेकर उठी हैं। यह पार्टी सीधी मर्दराज पार्टी से टकर लेने के लिये उठी थी और चुनाव में अपनी उम्मीदवारनियाँ भी खड़ी कर रही थी। एक तीसरी पार्टी 'आल नाजु किस्तान इन्डीपेन्डेंट लीग' के नाम से संगठित हुई थी। इस पार्टी का उद्देश्य यह था कि वर्तमान राष्ट्रनेत्री अपने पद पर किसी प्रकार बनी रहें। यह लीग वास्तव में उन्हीं के रुपये के सहारे से मैदान में आई थी लेकिन सर्वसाधारण का विचार था कि इस बार उनका अपने पद पर बना रहना सम्भव नहीं है इसलिये कि मर्दराज दल का बहुमत हुआ तो राष्ट्रनेत्री भी उसी दल की कोई महिला होंगी और अगर पुरुष पदी रक्षक दल को कामयाबी हुई तो भी उसका बहुमत होना मुश्किल होगा। मारांश यह कि मारे देश में चुनाव की आग लगी हुई थी। राधानगर में मर्दराज दल के टिकट पर खलीक़ुन्निसा बेगम खड़ी हुई थी। पुरुष पदी रक्षक दल की ओर से अस्तर ज़माना बेगम उम्मीदवार थी और आल नाजु किस्तान इन्डीपेन्डेंट लीग के टिकट पर सरदारिनी साहबा जगत कौर खड़ी हुई थी। दैनिक 'सहेली' में खलीक़ुन्निसा बेगम साहबा के समर्थन में रोज़ाना कालम के कालम स्याह नज़र आते थे। और एक दूसरे स्थानीय दैनिक 'सुरैया' में अस्तर ज़माना बेगम साहबा का समर्थन बड़े जोर-शोर से हो रहा था। इन्डीपेन्डेंट लीग का कोई अख़बार न था, लेकिन यह दल भी काफ़ी जोर बाँधे हुए था। हमको ये सारी ख़बरे कुछ अख़बारों से और कुछ बेगम की ज़बानी मालूम होती रहती थी। शहर में बहुत बड़े-बड़े जलमे हो रहे थे और हर जलमे में भगड़ा होने की हर वक़्त आशंका रहती थी। इसलिये कि बेगम के कथनानुसार सारी बोलने वालीयाँ एक दूसरे के डुपट्टे उछालने की फ़िक्र में रहती थीं और विरोधी दल यह कोशिश करते थे कि जलसा ख़राब हो जाय। अख़िर

खुदानरुवास्ता।

वही हुआ जो बेगम कह रही थीं यानी एक दिन पुरुष पर्दा रक्तक दल के जलसे में एक बोलने वाली ने खलीकुन्निसा पर कुछ व्यक्तिगत हमले शुरू कर दिये कि उनका मकसद तो यह है कि ऐयाशियों और बदमाशियों के दरवाजे खुल जायें। मर्द पर्दे के बाहर आ जायें और उनका पहलू गर्माने के लिये उनके साथ असेम्बली और पार्लियामेन्ट में बैठें। अगर उनको ऐसा ही शौक है और वह ऐसी ही आपे से बाहर हैं तो दुराचार के द्वार आज भी बन्द नहीं हैं। सिर्फ उचित और अनुचित का फर्क है। पर वह चाहती हैं कि अनुचित ऐयाशी के लिये रास्ता साफ हो जाय। हालाँकि इसका नतीजा इसके सिवाय और कुछ नहीं हो सकता कि हमारे पर्दानशीन मर्दों का नैतिक पतन हो जायगा। यह मर्दराज आन्दोलन यदि थोड़ा भी सफल हुआ तो सारे देश में बेशर्मी और बेहयाई का वह तूफान आयेगा कि भली औरतों के लिये सिवाय मर जाने के, जान दे-देने और आत्म-हत्या कर लेने के दूसरा कोई उपाय न रहेगा। समझ में नहीं आता कि उनका स्वाभिमान और आत्मसम्मान यह कैसे स्वीकार कर लेगा कि उनके घर के मर्द न सिर्फ अन्तःपुर में बाहर आजायें बल्कि परस्त्रियों के साथ-साथ विधान सभा में जाकर बैठें। तेल और आग के मेल का जो नतीजा हो सकता है वह जाहिर है। लेकिन मर्दराज आन्दोलन की समर्थक शौक्रीन और रंगीन मिजाज औरतें अपने भोग-विलास पर अपनी इज्जत को भी तिलांजलि देने का फ़ैसला कर चुकी हैं। वे भले बेटों दामादों को घरों से बाहर खींच लेना और अपनी बगल गर्म करना चाहती हैं। इस प्रकार का भाषण देने के बाद खलीकुन्निसा बेगम का नाम लेकर कहा गया कि आखिर वह खुद अपने घर के मर्दों को, अपने बेटों और दामादों को बाहर निकाल कर औरतों के सामने क्यों नहीं करती।

यह सुनना था कि मर्जर राज आन्दोलन की समर्थक औरतें सहन न कर सकीं और एक तरफ़ से 'चुप रहो, चुप रहो, बैठ जाओ, बैठ जाओ' का शोर मच गया। फिर 'खलीफ़ुन्निसा बेगम जिन्दाबाद' 'मर्दराज जिन्दाबाद' के नारे लगाये गये। इधर से इन नारों का जवाब दिया गया, 'मर्दराज नाश हो' 'मर्द का पर्दा या औरतों की मौत' 'खलीफ़ुन्निसा हूब मरे' 'मोहनी देवा मुर्दाबाद।'

अन्त में डेलेवाजी हुई। दोनों तरफ़ की औरतों में भोटम-भोट्टा हुई और अन्त में पुलिस को हस्ताक्षेप करके शान्ति स्थापित करनी पड़ी। मर्दराज दल को वहाँ से हटाया गया तो उसकी समर्थक औरतों ने एक दूसरे पार्क में तुरन्त सभा की और पुलिस तथा सरकार के इस पक्षपात की निन्दा की गई जो वह पुरुष पर्दा रक्षक दल के साथ सचमुच कर रही थी। जलमे में बड़ा जोश था। अन्त में स्वयं खलीफ़ुन्निसा बेगम ने एक सुलभ हुआ भाषण देकर उपस्थित स्त्रियों को समझाया कि इस समय अगर आपने सरकार या पुलिस से टकराने की चेष्टा की तो सरकार का असली उद्देश्य पूरा हो जायगा। वह आपको जेलों में भेजकर अपना मनमाना चुनाव लड़ना चाहती है और हमको यह बता देना है कि देश में साधारण स्त्रियाँ सरकार के साथ नहीं हैं बल्कि हमारे साथ हैं। मुझे उन टोडी बच्चियों से कोई शिकायत नहीं है। वे तो ग्रामोफ़ोन हैं और उन पर रिकार्ड सरकार का बज रहा है। जो भाषण सुनकर आप सब नाराज हुई हैं उसमें मुझ पर व्यक्तिगत आक्षेप थे। लेकिन आक्षेप तो आपको देश और जाति के लिये—अपने उद्देश्य और अपने लक्ष्य के लिये ठंडे दिल से सुनना ही पड़ेंगे। बल्कि यही आक्षेप जनमत को हमारे पक्ष में कर देगा। मैं आप सब से अपील करती हूँ कि आप खामोशी से अपने काम में लगी रहिये।

खलीफ़ुन्निसा बेगम के इस भाषण के बाद सभी स्त्रियाँ छुट गईं

खुदानखवास्ता]

और पुलिस कानिस्ट्रिबलनियों को अपनी बन्दूकों से निराश होकर वे कारतूस निकालने पड़े जो वे भर चुकी थीं ।

इस तरह के जलसे होते रहे, जुलूस उठते रहे, अश्वारों के पजे काले होते रहे । सचमुच एक ने दूसरे की खूब कलाई खोली । दैनिक 'सुरैया' ने लिखा कि खली कुत्रिसा बेगम मर्दों के साथ नाचती हैं । दैनिक 'सहेली' ने लिखा कि खली कुत्रिसा बेगम नहीं बल्कि अख्तर जमानी बेगम के हरम में चार मर्द हैं ।

हमने चौंक कर बेगम से पूछा—“क्या सचमुच अख्तर जमानी बेगम के हरम में चार मर्द हैं ?

बेगम ने बेपरवाही से कहा—“हाँ, हैं तो जरूर उनके चार शौहर । मगर इस में हर्ज ही क्या है, चार तो जायज हैं ।

हमने दंग होकर कहा—“यानी एक औरत चार शौहर कर सकती है ?

बेगम ने कहा—“क्यों, इसमें आपको कोई एतराज है ? मेरी तरफ से कोई अन्देशा न कीजिये । मेरा इरादा फ़िलहाल बिलकुल नहीं है कि तुम्हारे सर पर कोई सौता लाऊँ । लेकिन यहां तो अनगिनत ऐसी औरतें मिलेंगी जिनके दो, तीन या चार शौहर हैं । किसी ने संतान के लिये दूसरी शादी कर ली है तो किसी ने जायदाद के लिये और किसी ने यों ही ।”

हमने कहा—“साहब, यह चीज निहायत ग़लत है । और दो-चार मर्द यह जानते हैं कि उनकी बीवी के तीन शौहर और हैं ?”

बेगम ने कहा—“क्यों, जानते क्यों नहीं हैं । अलबत्ता एक दूसरे से जलते बहुत हैं । जलने का माद्दा तो मर्द में होता ही है । वह सौते को बरदाश्त ही नहीं कर सकता । बीवी का एक शौहर दूसरे शौहर के खून का प्यासा होता है ।”

हमने कहा—“और बेगम साहबा मे कोई कुछ नहीं कहता कि यह क्या हरकत है ?”

बेगम ने कहा—“तुमने तो अभी से मर्दराज शुरू कर दिया । गोया अब मर्दों में इतनी हिम्मत हो गई है कि वह अपनी मलिका, अपनी सरताज मे यह पूछें कि तुमने दूसरी शादी क्यों की ? यहाँ के बहुत से मर्द तो खुद अपनी बीवियों मे कह देते हैं कि अगर मुझमे तुम्हारे यहाँ बच्चा नहीं है तो तुम जहाँ चाहो शादी कर सकते हो ।”

नाजुकिस्तान आकर और इतने दिनों यहाँ रहने के बाद यो तो हम इस जिन्दगी के आदी हो चुके थे मगर बेगम की जबानी यहाँ के इस रिवाज को सुनकर हाथों के तोते उड़ गये, पैरों तले में जमीन निकल गई । एक औरत के एक से ज्यादा शौहर की तो कल्पना भी हम न कर सकते थे । सच पूछिये तो आज पहली बार जी चाहा कि किसी तरह हमको पर मिल जायें और हम यहाँ में उड़ जायें किसी तरफ़ । नाजुकिस्तान में वहशत और नफ़रत सी होने लगी । और बेगम के जाने के बाद भी हम देर तक सोचते रहे कि अगर खुदा न करे हमारी बेगम ने कभी दूसरी शादी का इरादा कर लिया तो हम इस बेशर्मी और बेइज्जती को क्योंकर बरदाश्त कर सकेंगे । इस सिलसिले में हमारी बेचैनी का अन्दाज़ा इसी से हो सकता है कि खुदाबख़्श और अब्दुल करीम तक से यह सवाल कर बैठे—

“क्यों खुदाबख़्श, क्या यहाँ एक औरत कई-कई शादियाँ कर सकती है ?”

खुदाबख़्श तो खैर एक ठंडी साँस भर कर रोआँसा हो गया लेकिन अब्दुल करीम ने कहा—“जी हाँ, एक औरत चार तक शादियाँ कर सकती है । इनकी ही बीवी ने दूसरी शादी करली है ।”

खुदानरूवास्ता]

हमने हैरत से कहा—“खुदाबख्श की बीवी ने? क्या वाकई इनकी बीवी का इनके अलावा कोई और शौहर भी है?”

अब्दुल करीम ने कहा—“इनके अलावा एक छोड़ दो और हैं?”

खुदाबख्श ने कहा—“खैर, दूसरे से शादी तो अब तक नहीं की है। योंही डाल लिया है उसको। लेकिन एक के साथ तो निकाह हो चुका है बल्कि दो बच्चे भी हैं उससे।”

हमने कहा—“और तुम यह बरदाश्त करते हो? यानी इसके बावजूद कहते हो कि वह कम्बख्त तुम्हारी बीवी है?”

खुदाबख्श ने कहा—“ना सरकार ना। उनको कम्बख्त न कहिये। वह तो औरतजात हैं। उनको दक है एक छोड़ चार शादियाँ करने का। मेरे लिये तो यही बहुत है कि खुदा उनको सलामत रखे। उनके दम से मैं सुहागी हूँ। अलबत्ता क्रयामत के दिन मैं इस बेइन्साफ़ी पर जरूर उनका दामन पकड़ूंगा कि उन्होंने दूसरा मर्द लाकर मुझे बिल्कुल भुला ही दिया है। उसके लिये सब कुछ है, मेरे लिये कुछ भी नहीं है। जिस घर में राजा बनकर रहा वहाँ मुझसे खुद अपने सौते की गुलामी न हो सकी। बीवी ने मुझको मेरे मायके भेज दिया और फिर ग़बर न ली।”

अब्दुल करीम ने कहा—“मैं इसको बराबर समझता हूँ सरकार कि तू रोटी कपड़े का दावा करदे अपनी बीवी पर, मगर यह तो है गधा। अच्छी-व्यासी, खाती-पीती है सरकार। इसकी बीवी सौ रुपये महीने की पुलिस में नौकर है।”

खुदाबख्श ने कहा—“पुलिस में नहीं, फ़ौज में सूबेदारिनी है। मैं भी सोचता हूँ हुआ कि रोटी कपड़े का दावा किया तो कचहरी-अदालत में बदनामी किसकी होगी, अपनी बीवी की। उनकी बेइज़्जती किसकी बेइज़्जती है, मेरी। दूसरे एक वफ़ादार मियाँ का फ़र्ज़ क्या है?

यही तो कि जिसमें उसकी मलिका खुश उसी में वह भी खुश । सरकार, वक़्त पड़ गया है कि आपके यहाँ विदमत कर रहा हूँ, वरना तक्रदीर ख़राब न होती और उनकी नज़रें मुझसे न फिर जातीं तो मैं खुद घर के बाहर क़दम न निकालता । मेरी माँ तो आज चाहती हैं कि तलाक़ लेले, मगर मैंने सबसे साफ़ कह दिया है कि एक भले मर्द का निकाह बस एक मर्तबा होता है । क़ाज़ी निकाह पढ़ाता है और मौत उसे तोड़ती है । वह जिस तरह ब्याह कर लाई थीं उसी तरह अगर अपने हाथ से मिट्टी भी ठिकाने लगादे तो इससे बढ़ कर मेरी खुशकिस्मती और क्या हो सकता है । लेकिन अब तो मालूम होता है जैसे क्रिस्मत में यह भी नहीं है ।”

इस बीच अब्दुल करीम किसी काम से उठकर गया तो हमने खुदाबख़्श से कहा—“इस अब्दुल करीम की बीबी तो ठीक है ?”

खुदाबख़्श ने चुपके से कहा—“इसकी शादी कहाँ हुई है सरकार । जिस औरत के पास यह आज-कल है वह इसे भगाकर लाई है, इसकी समुराल से और खुद इसकी असली बीबी तो इसकी खोज में चाकू लिये घूमा करती है कि कहीं मिल जाय करीम तो इसकी नाक काट ले । मगर सरकार, इस कमबख़्त को भी न जाने क्या सूझी थी । अच्छी-भली बीबी को छोड़-छाड़ उस बदमाश औरत के साथ भाग निकला, जो दिन-रात तो नशे में चूर रहती है । इसकी एक-एक चीज़ बेचकर पी गई, मगर यह बेवक़ूफ़ है कि उस पर लट्टू है ।”

इस बात-चीत से आज फिर इतने दिनों के बाद हमको यह मालूम हुआ कि जैसे हम किसी ख़्वाब की दुनिया में पहुँच गये हैं और यह सब ख़्वाब है ।

— — —

तेरह

एक दिन बेगम ने बाहर में आकर हमको अलग ले जाकर कहा—
“और भी कुछ मुना है ? यह जो आपके नौकर हैं अब्दुल करीम, इनकी
कहीं से एक बीवी पैदा हो गई हैं और वह मेरे पास आई हैं कि मैं
उनके शौहर को उनके हवाले कर दूँ ।”

हमने कहा—“हाँ, मुझे खुदाबख्श से मालूम हो चुका है कि यह
कमबख्त अपनी बीवी को छोड़कर किसी और बदमाश औरत के साथ
भाग आया है ।”

बेगम ने कहा—“मगर तुमने मुझे खबर न की । ऐसे मर्द को तो
घर में रक्खा ही नहीं जा सकता जो इस हद तक आवारा हो चुका हो
कि एक बीवी के होते हुए दूसरी औरतों के साथ भागा-भाग फिरे ।”

हमने कहा—“मगर पहले जाँच तो कर लो । हो सकता है कि
उसकी बीवी की ही कुछ ज्यादाती हो ।”

बेगम ने कहा—“क्या कहना है आपका ? बीवी की ज्यादाती क्या
हो सकती है ? यह खुद ही बदमाश है । और फर्ज़ कर लो कि ज्यादाती
भी सही, तो क्या किसी और औरत के साथ भाग आना जायज़ कहा जा
सकता है ?”

हमने कहा—“फिर अब क्या करोगी ? अगर वह ले गई अपने
मियाँ को तो हमारे यहाँ का एक पुराना नौकर गया । नये नौकर जरा

मुश्किल से मतलब के होते हैं। और आजकल नौकर मिलने में जो मुसीबत हो रही है वह तुम जानती हो।”

बेगम ने कहा—“अर्जी वह तो इस फ़िक्र में फिर रही थी कि यह हज़रत मिलें तो इनकी नाक मूँछें काट ले। वह तो कहिये कि उसको समझा बुझाकर मैंने बहुत कुछ धीमा कर दिया है और वह इसपर राज़ी हो गई है कि अगर आप उसको उस औरत के पंजे से छुड़ा दें जो उसको भगा लाई है तो शौक़ से अपने यहाँ नौकर रख सकते हैं, पर वह उससे मिलना ज़रूर चाहती है। मैं भी यह चाहती हूँ कि सचमुच उसको उसकी बीवी के हवाले कर दिया जाय। वह थोड़ा बहुत मार-पीट कर उसे फिर हमारे हवाले कर देगा। और उस शराबिन को तो मैं आज ही गिरफ़्तार कराती हूँ। ज़रा तुम अब्दुल करीम को कुछ कहे बग़ैर मेरे पास बुला लाओ।”

हमने जाकर करीम से कहा—“आओ, तुमको सरकार बुलाती हैं।”

उमे क्या पता था कि क्यों बुलाया गया है। जल्दी से उसने साफ़ा बांधा, मूँछों को दुस्त किया और हमारे साथ आकर बड़े ही अदब से बेगम के सामने खड़ा हो गया। बेगम ने जैसे अनायास ही पूछा हो, “करीम, तुम्हारी बीवी कहाँ है आजकल? मुना है कि उसने बड़ी ही ज्यादती शुरू कर दी है शराब की।”

करीम ने कहा—“जी हाँ सरकार, मैं क्या कहूँ। मेरी तो सुनती ही नहीं। दिन रात शराब है और वह है।”

बेगम ने पूछा—“और वह रहती कहाँ हैं?”

“मैं क्या जानूँ सरकार। कभी किसी कलवारिन की दूकान पर मिलती है, कभी किसी भट्ठी पर।”

हमने कहा—“और अब तो वह इनमें भी कह रही है कि यहाँ

खुदानख्वास्ता]

कहाँ पड़े हो। तुमको इससे भी अच्छी जगह रखवा दूँ।”

करीम ने कहा—“वैर, यह बात मैं उसकी मानने वाला नहीं।”

बेगम ने कहा—“उस कमबख्त का यह इरादा मालूम होता है कि तुमसे कमवाये और खुद मझे उड़ाये।”

इस बात पर करीम ने लजाकर गर्दन झुका ली। बेगम ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा—“मैं उसको बुलाकर समझाना चाहती हूँ कि अगर वह भर्त्ता औरतों की तरह रहना चाहे तो उसको यहीं रक्खा जा सकता है। लेकिन नशा पानी उससे क्यों छूटने लगा।”

करीम ने कहा—“अगर सरकार उसको बुलाकर डरायें धमकायें तो शायद सीधा राह पर आ जाय। वह इस वक़्त भी मुझसे वह सब रुपये छोन ले गई है जो बेबी के जन्म के सिलसिले में मुझको इनाम में मिले थे। अब चमेली बाग़ के ताड़ोवन में होगी।”

बेगम ने कहा—“अच्छा, तुम जाओ। मैं इसका इन्तज़ाम करूँगी।”

करीम के जाने के बाद हमने कहा—“क्या सचमुच उसको बुलाओगी?”

बेगम ने कहा—“उसको तो बुलाकर मैं वह मार मारूँगी कि सारा नशा हिरन हो जायगा। अब ज़रा तमाशा देखना तुम।”

यह कहकर बेगम तो बाहर चली गई और हम अपने काम में लग गये। शौक्रिया की फ़ाक में फूल बनाने थे। वही लेकर बैठ गये। थोड़ी देर के बाद बेगम ने घर में आकर कहा—“वह आपके करीम की आशिके-ज़ार भूमती भामती तशरीफ़ लाई हैं। तुम ज़रा हट जाओ। मैं उसे करीम ही के सामने बुलाती हूँ।”

हम कमरे में जाकर बाहर का तमाशा देखने लगे। बेगम ने बाहर जाकर उस शराबिन को बुलाया और अन्दर ले आई। फिर करीम को बुलाकर कहा—“लजिये यह आ गई है आपकी बेगम साहिबा ! यह कितने रुपये लेकर गई थी तुमसे ?”

करीम ने कहा—“पाँच रुपये सरकार। और मुझमें क्रम ख़ाकर गई थी कि शराब न पियूँगी।

बेगम ने डाँटकर कहा—“क्यों री, सुन रही है तू ?”

शराबिन ने कहा—“ठीक है सरकार, जो चोरकी सजा वह मेरी।

अच्छी पी ली शराब पी ली

जैसी पाई शराब पी ली।

और हुज़ूर, एक शेर और याद आता है कि

तुम हो मए-गुल रंग

मैं हूँ लबे-जू हो।

और इसके बाद.....इसके बाद.....मगर सरकार, बड़ी महँगी होती जा रही है दारू भी। भला गरीब औरतें काहे को पी सकेंगी।”

बेगम ने एक कानिस्टिबिलनी को बुलाकर हुक्म दिया कि इसके ऊपर एक मशक पानी डाल दो। सारा नशा हिरन हो जायगा।

शराबिन ने कहा—“सरकार, पानी नहीं, एक मशक शराब डलवा दीजिये तो नशा हिरन नहीं नील गाय हो जायगा।.....नील बैल हो जायगा बल्कि नील हाथी हो जायगा। नील कंठा गरारी बल्कि नील-भुमका गरारी, अरे हाँ भुमका गरारी।”

अब जो कानिस्टिबिलनी ने पानी की मशक उन महाशया के सरपर एकदम से डाली है तो गड़बड़ा गई। मालूम होता था जैसे दूब रही हैं

खुदानखास्ता]

पानी पड़ जाने के बाद । सचमुच कुछ दिमाग ठिकाने आया । बेगम को देखकर एकदम सलाम किया ।

बेगम ने कहा—“क्यों ले गई थी तू उसके रुपये ?”

वह औरत बोली—“श्वता हुई सरकार । दारू पीने के लिये पैसे नहीं थे मेरे पास ।”

बेगम ने कहा—“यह कौन है तेरी अब्दुल करीम, सच-सच बता । नहीं तो अभी हंटरबाजी शुरू करता हूँ ।”

उस औरत ने कहा—“मैं बतलाऊँ सरकार ?”

बेगम ने डाँटकर कहा—“चुप रह, मैं तुझसे नहीं पूछती । अब्दुल करीम, तू बता ।”

करीम ने थूक निगलते हुए कुछ अटक-अटककर कहा—“औरत है हु.जूर मेरी ।”

बेगम ने कहा—औरत क्या चीज होती है । यह तेरी बांवी है या नहीं ?”

करीम ने कहा—“बांवी हाँ तो है । मेरा मतलब यह है सरकार कि मैं.....बल्कि यह बीवी हाँ तो है ।”

बेगम ने कानिस्ट्रिबलनी को हुक्म दिया—“लाओ उस औरत को फौरन ।”

करीम ने खिसकने की कोशिश ही की थी कि बेगम ने एक हंटर रसीद किया, “श्वबरदार जो यहाँ से भागने की कोशिश की ।” बेगम ने कहा—“भारते-भारते चरसा गिरा दूँगी तेरा, हरामखोर, दगाबाज । अच्छा तो बताओ यह आदमी तेरा कौन है.....ए शराबिन ! मैं तुझसे पूछ रही हूँ ।”

वह औरत अब भी कुछ नशे में थी । उसने सँभल कर कहा—“जी हाँ हु.जूर, ठीक कहता है यह ?”

बेगम ने कहा—“ठीक कहता है ?”

उसने कहा—“जो कुछ भी यह कहता है, ठीक ही कहता है ।”

बेगम ने एक हाथ रसीद किया तो वह तिलमिला कर रह गई ।

बेगम ने डाँटकर कहा—“कौन है यह मर्द तेरा ?”

उस औरत ने कहा—“मर्द है मेरा हुजूर, मियाँ यानी शौहर ।”

बेगम ने कहा—“निकाह हुआ था तेरा इसके साथ ?

उस औरत ने कहा—“जी, वह क्या नाम कि... ..खूब याद आया सरकार.....जी हाँ हुआ था ।”

बेगम ने कहा—“और अगर न हुआ हो तो ।”

उस औरत ने कहा—“तो सरकार, न यह मेरी बीवी न मैं इसका मियाँ ।”

बेगम ने कहा—“देखो इस हंटर को अच्छी तरह देख लो । अगर यह साबित हो गया कि तुम दोनों बग़ैर निकाह के एक दूसरे के साथ मियाँ बीवी की तरह रहते हो, या इस शर्क की कोई बीवी निकल आई तो तुम्हारी ख़ैर नहीं । चमड़ी उधेड़ कर भुसा भरवा देंगी । क्या समझी ?”

उस औरत ने करीम से कहा—“अरे अब बोलता क्या नहीं, क्या इरादा है ?”

करीम ने कहा—“सरकार ! मैं तो सच ही कहूँगा । मेरा इसके साथ निकाह नहीं हुआ है । यह मुझको भगा लाई थी मेरी समुराल से ।”

बेगम ने उस औरत से कहा—“क्यों ? सुन लिया, इसने क्या कहा है ? अब बोल ।”

उस औरत ने कहा—“अब सरकार मैं क्या बोल सकती हूँ । आप मलिका हैं ।”

इतने में कानिस्टिबिलनी के साथ एक और औरत आई जिसे देखकर करीम ने फिर भागने का इरादा ही किया था कि बेगम ने एक और

खुदानखास्ता]

हटर रसाद किया और कार्निस्टबिलनी से कहा—“खबरदार, यह आदमी भागने न पाये। क्यों करीम, पहचानता है इसको?”

करीम ने गर्दन झुकाली तो बेगम ने फिर डाँटा—“मैं क्या पूछ रही हूँ? जवाब देता है या पढ़ फिर हटर।”

करीम ने कहा—“मेरी बीबी है यह।”

बेगम ने उस नई औरत से पूछा—“यहाँ है तुम्हारा शौहर?”

उस औरत ने कहा—“जी हाँ सरकार, मैं सरकार के पाँव पड़ूँ, इसको तो अब मेरे हवाले कर दीजिये। मैं इसकी नाक मूँछ काटकर दिल की लगी को बुझा लूँ। जैसे इस हरामखोर कमाने ने मेरी इज्जत पर पानी फेरा है, मैं भी इसकी ज़िन्दगी बरबाद कर दूँ।”

बेगम ने कहा—“और यह है वह बदमाश औरत जो तुम्हारे शौहर को भगा कर लाई है। इसको तो मैं अभी बड़े घर की सैर कराती हूँ।”

करीम की अमली बीबी ने कहा—“सरकार, इस सजा से मेरी प्यास न बुझेगी। मैं तो यह कहती हूँ कि इसे भी मुझे मौँप दीजिये। फिर मैं इसको मज़ा चखाऊँ दूसरों की इज्जत लेने का।”

बेगम ने शराबिन से कहा—“क्यों, अब क्या कहती है? कर दूँ इसके सिपुर्द तुम्हें?”

शराबिन बोली—“सरकार को इख्तियार है। मेरी ख़ता है और मैं हर सज़ा के लिये तैयार हूँ। दिल से मजबूर थी। इस कमबख़्त दिल ने मुझे धोखा दिया। मैं करीम पर शादी से बहुत पहले मरती थी। इसकी माँ ने मेरे साथ इसकी शादी नहीं की और इनका रुपया देखकर इनके साथ ब्याह भी कर दिया और चटपट गौना भी हो गया। मगर मेरी मुहब्बत फिर भी न गई। मैंने इसे भूल जाने के लिये शराब शुरू कर दी और अच्छी खासी शराबिन होकर रह गई। मगर शराब के नशे में भी मुहब्बत का होश हमेशा रहता था। आखिर मैंने वह

किया जिसका नतीजा आज भुगत रही हूँ। मैं हुजूर से सच कहती हूँ कि चाहे मेरी बोटी-बोटी काट डाली जाय मगर करीम से जो मुहब्बत मुझे है वह मेरे दिल में नहीं जा सकती और न करीम ही मुझको भूल सकता है।”

बेगम ने करीम से कहा—“क्यों, ठीक कह रही है यह? तू इसकी मुहब्बत भूल नहीं सकता?”

करीम ने कहा—“पागल है सरकार यह। मुझे दम-दिलासा देकर भगा लाई और मुझे यह दिन देखना पड़ा। मुझे इससे अगर कुछ मुहब्बत थी भी तो वह अब नफ़रत में बदल गई है।”

बेगम ने कहा—“तो मैं भेज दूँ इसे जेल में और तू रहेगा अपनी बीबी के साथ?”

करीम ने रोते हुए कहा—“मैं अब इनके क़ाबिल नहीं रहा सरकार। फिर भी अगर मुझे इस क़ाबिल समझेंगी तो मैं इनके पाँव धोकर पिछूँगा।”

बेगम ने करीम की असली बीबी से कहा—“अच्छा, अब तुम मेरे कहने से इसे माफ़ कर दो। इसकी ज़िम्मेदार मैं हूँ और इन बेगम साहबा को मैं आज ही ठिकाने लगाये देती हूँ।”

उस औरत ने सर झुका लिया। बेगम शराबिन को और उस औरत को लेकर बाहर चली गई और करीम रोते हुए बावर्चीख़ाने की तरफ़ चले गये।

— — —

चौदह

सिद्दीक़ भाई ने अपने एक दोस्त की दावत की थी और हमको भी बुलाया था। इन सज्जन का नाम गोपीनाथ था और ये राधानगर रेडियो स्टेशन पर मदों के प्रोग्राम के इंचार्ज थे। बड़े ही शिष्ट और मिलनसार, पढ़े लिखे और बड़ी सूझ-बूझ के मर्द थे। मदों में ऐसे बहुत कम मिलते हैं जो इतने योग्य भी हों और जीविका भी कमाते हों। नाज़ुकिस्तान के क़ानून के अनुसार पर्दा तो ख़ैर उनको भी करना पड़ता था परन्तु यही उनका और भी कमाल था कि पर्दे में रहते हुए भी इतनी शिक्षा प्राप्त कर ली और सरकारी नौकरी भी करने लगे। उन सज्जन की बात-चात बड़ी ही दिलचस्प थी। हम दोनों से बड़ा आग्रह करते रहे कि हम किसी दिन मदों के प्रोग्राम में आयें और रेडियो स्टेशन की सैर करें। सिद्दीक़ भाई को तो जमाल आराबहन ने अनुमति दे दी पर हमें डर था कि कहीं बेगम इनकार न कर दें।

लेकिन बेगम को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने भी खुशी से इजाज़त दे दी बल्कि यह भी कहा कि रेडियो स्टेशन पर पर्दे का पूरा इन्तज़ाम है। दूसरे स्वयं उनकी बहुत सी सहेलियाँ भी रेडियो के स्टाफ़ में थीं। कुछ से तो उनकी बहुत ही घनिष्ठता थी। बेगम ने कहा—
“मैं खुद तुम्हारे साथ चलूँगी और खुद सैर करा दूँगी। आख़िर एक दिन जब रेडियो स्टेशन पर मदों का प्रोग्राम था, हम और सिद्दीक़

भाई, बेगम और जमाल आरा बहन के साथ रेडियो स्टेशन पहुँच गये । हम दोनों तो स्टूडियो में पहुँच गये जहाँ मर्दों का प्रोग्राम होने वाला था और बेगम व जमाल बहन अपनी सखियाँ के साथ बाहर ही रह गईं । उस समय हमारे स्टूडियो में, जहाँ पर्दे वाले मर्द थे, औरतें नहीं आ सकती थीं । सिर्फ गोपीनाथ जी रेडियो स्टेशन की तरफ से यहाँ के निरीक्षक थे । इस प्रोग्राम में जितने हिस्सा लेने वाले थे वह पर्दे का इतना इन्तजाम होने पर भी बुर्कों में लिपटे हुए बैठे थे । इसलिये कि गोपी जी को कह दिया गया था कि एकाध गाने की चीज में साजिन्दियाँ भी स्टूडियो में आयेंगी, जिन भाइयों को पर्दा करना हो, पर्दा कर लें । उस प्रोग्राम में उस्ताद गौहर अली खाँ का पक्का गाना हुआ । खूब-खूब गाया । मर्द होकर पक्का गाना गाने का यह अभ्यास बड़े आश्चर्य की बात थी । मजा आ गया । पक्के गाने के बाद इस प्रोग्राम के 'दोस्त' यानी गोपी जी ने मर्दों के लिये कुछ चुटकुले और कुछ काम की बातें माइक्रोफोन पर बताईं, जैसे मूँछ बढ़ाने का टानिक कैसे बनाया जाता है । फिर खिजाब का एक नुस्खा सुनने वालों को सुनाया गया । फिर मर्दों को क्रोशिया से तकिये के गुलाफ़ पर ताज महल बनाने की तरकीब बताई । उसके बाद श्री भारत धर्मी की बात-चीत थी कि बच्चों की देख-भाल मर्दों को किस तरह करनी चाहिये । इस बात-चीत के बाद एक छोटा सा नाटक था "न हुआ मैं स्त्री" । यह नाटक भैरवी देवी गुप्ता का लिखा हुआ था । इसमें भी चूँकि एक महिला का पार्ट था इसलिये हम सब बुर्कों ही में रहे ।

स्वयं उनके साथ काम करने वाले मर्द भी बुर्कों में थे । नाटक बड़ा ही रोचक था । इस नाटक के बाद प्रोग्राम के 'दोस्त' गोपी जी ने मर्द सुनने वालों के खतों के जवाब सुनाये और जब प्रोग्राम खत्म हो गया तो गोपी जी ने और सब मर्दों को विदा करके हम दोनों से कहा कि

खुदानखास्ता]

अगर आप चाहें तो मैं आप दोनों को रेडियो स्टेशन की सैर कराने के अलावा कुछ और प्रोग्राम भी सुनवा दूँ। हम दोनों तो इसीलिये आये ही थे अतः उनके साथ पहले उस स्टूडियो में गये जहाँ उस्तानी फ़ैयाज़-जहाँ ख़याल जैजैवन्ती गा रही थीं। क्या कहना है इस गाने का। गोपी जी ने बताया कि इस समय सारे देश में इनमें अच्छी कोई गायिका नहीं है। उस्तानी फ़ैयाज़जहाँ के बाद एनाउन्सर महोदय ने एलान किया, “यह राधा नगर है। अभी आप उस्तानी फ़ैयाज़जहाँ से ख़याल जैजैवन्ती सुन रही थीं। अब अशरफ़ुन्निसा से श्री तलसीम माहीनगरी की ग़ज़ल सुनिये—

‘तुम्हारे सिवा कुछ जवाँ और भी है’

हम लोग अब उस स्टूडियो में आ गये जहाँ अशरफ़ुन्निसा का गाना हो रहा था। ये बेचारी साधारण स्त्रियों की अपेक्षा कुछ शर्मिली, कुछ मर्दों की तरह सिमटी सिमटाई छुई-मुई सी महिला थीं। बहुत ही शर्मा-शर्मा कर गा रही थीं। हम लोगों के पहुँच जाने से तो और भी परेशान सी दीख रही थीं। औरत होकर उनका यह हाल था जैसे कोई मर्द कुछ औरतों में पहुँच कर सिटपिटा जाय। उनकी ग़ज़ल ख़त्म होने के बाद फिर एनाउन्सर महोदय ने घोषणा की—“यह राधानगर है। अभी आपने श्री तलसीम माहीनगरी की ग़ज़ल अशरफ़ुन्निसा से सुनी, अब उस्ताद ज़मील भाई से ख़याल ललित द्रुत लय में सुनिये।” हम लोगों ने उस स्टूडियो में जाकर देखा तो उस्ताद ज़मील भाई साज़िन्दिनियों के सामने बैठे गा रहे थे। सिद्दीक़ भाई ने हमारे कान में कहा—“यह बाज़ारी क्रिस्म का मर्दुआ मालूम होता है।” और सचमुच उनके दाढ़ी भी ऐसे ही। ताव दी हुई नोकीली मूँछें, सिर का एक-एक बाल बड़ी सावधानी से चिपका हुआ। हवा में उड़ती हुई

रेशमी टाई। खुशबू में बसा हुआ रूमाल बार-बार जेब से निकाला जाता था। पास ही सिग्रेट केस रक्खा था। कभी गाते-गाते आप किसी तबलचिन को देख कर हँस दिये, कभी किसी सारंगिनी से आँख मिला कर मुस्करा दिये। उस जालिम की एक-एक बात से जी जल रहा था कि यही तो इन कमबख्तों की हरकतें होती हैं जिनसे ये औरतों को जाल में फँसाते हैं। सैकड़ों भरे घर इन कमबख्तों ने तबाह कर दिये। लेकिन वह औरतें भी खूब होती हैं जो इस दिखावटी हुस्न के पीछे अपने मासूम घरवालों के सच्चे प्रेम को ठुकरा कर उनके फदे में फँस जाती हैं। हालाँकि उनका प्रेम इस उसी समय तक होता है जब तक औरत के पास चार पैसे हैं। जहाँ उनका बटुआ खाली हुआ, इन भूटी मुहब्बत के पुतलों के दिल भी मुहब्बत से खाली हो जाते हैं। मुझे उस वक़्त रह-रहकर बेगमज़ादी अफ़सरजहाँ का खयाल आ रहा था। पचास से ऊपर उमर होगी, सिर के बाल सफ़ेद, चेहरे पर झुर्रियाँ तक पड़ चली थीं। दाँत कुछ गिर चुके थे कुछ हिल रहे थे और एक बाज़ारी अट्टारह वर्ष का छोकरा उनके पास था। अच्छी-खासी रियासत उसी छोकरे पर क़ुरबान कर दी थी। मियाँ घर में पड़े सड़ा किये, लाख-लाख बेचारे ने कोशिश की कि बेगमज़ादी साहबा को होश आ जाय, लेकिन उनकी आँखें उस वक़्त खुलीं जब इलाक़े का आख़िरी मकान भी बिक कर उसका रुपया भी ख़त्म हो गया और उस छोकरे के स्वार्थी बाप ने बेगमज़ादी साहबा को बड़ी ही ज़िज़्जत के साथ अपने घर से निकलवा दिया। इसको निकलवाना ही कहते हैं कि उन्हीं की मौजूदगी में एक ताल्लुकेदारिनी साहबा का उस छोकरे के पास आना-जाना शुरू हो गया। और जब उनको आपत्ति हुई तो उस छोकरे के बाप ने तोते की तरह आँखें बदल कर कहा कि वाह बेगम साहबा, मेरा छोकरा कोई आपके हाथ बिक थोड़े ही गया है। इतने दिनों

खुदानखास्ता]

तक इसकी जवानी सड़ी हुई क़ब्र के हवाले रही इसलिये कि उस क़ब्र में मोने की खान थी। अब क्या आपकी वजह से मैं हमेशा के लिये इसकी क़िस्मत फ़ोड़ दूँ? यह कोई आपका निकाहता शौहर तो है नहीं कि आपके साथ ज़िन्दगी बिता देगा। आपको अगर उसकी दूसरी मिलनेवालों पर ऐसा ही एतराज़ है तो आप अपने घर खुश हम करने घर खुश। बेगम साहबा अपना मुँह लेकर क़िस्मत को रोती चली गई। वह तो कहिये कि उनके शौहर ने यह रंग देखकर चुपके ही चुपके सारे गहने और थोड़ा बहुत नक़द रुपया, कुछ चाँदी-सोने के बर्तन अपने मायके भिजवा दिये थे। अतः जब यह ठोकर खा चुकी तो बेगमज़ादी साहबा को होश आया। खूब पछुताई और तौबा की। अन्त में वही शौहर उनके काम आया जिस बेचारे का छुर्ता पर ज़िन्दगी भर उम औरत ने कोदों दली थी।

हम इन्हीं विचारों में डूबे थे कि गोपीनाथ जी ने, जो हमको छोड़कर बाहर चले गये थे, आकर कहा कि आप दोनों की बेगम स्टेशन डायरेक्टरनी साहबा के कमरे में आप दोनों का इन्तज़ार कर रही हैं। हम दोनों ने यह सुन अपने बुक्रे दुरुस्त किये और गोपीनाथ जी के साथ उस कमरे में पहुँचे जहाँ बेगम, जमाल बहन और दो-तीन अन्य महिलायें बैठी बातें कर रही थीं। हम लोगों को देखकर सब स्त्रियाँ खड़ी हो गईं। बेगम ने हाथ के इशारे से कहा—“आप दोनों उस बराबर वाले कमरे में ठहरें, यह चाय के लिये इसरार कर रही हैं इसलिये चाय पीकर चलेंगे सब।

हम दोनों बराबर वाले कमरे में चिलमन के पोछे बैठ गये। कमरे में अंधेरा था इसलिये हमने बुक्रे का नक्काब उलट दिया। ठीक उसी समय बेगम ने ऊँची आवाज़ में कहा—“वहाँ इतमीनान से बुक्रे उतार कर या बुक्रे का नक्काब उलट कर बैठिये।”

हम बैठ गये तो स्टेशन डायरेक्टरनी साहबा की आवाज सुनाई पड़ी। वह कह रही थी—“अरे हाँ जमाल, वह लड़का कौन था जिसे लिये हुए तुम उस दिन पिक्चर में जा रही थीं?”

हम दोनों रुक बदल कर उस ओर देखने लगे।

जमाल बहन यह सुनकर सिटपिटा मी गई। उन्होंने आश्चर्य से पूछा—“लड़का ? मेरे साथ ? कब ?”

“हाँ हाँ, वह गोरा चिट्ठा तन्दुरुस्त सा लड़का, कुतरी हुई मूँछों वाला, चश्मा लगाये।”

जमाल बहन ने उसी तरह ताज्जुब से कहा—“मेरे साथ ?..... तुमको शुबह हुआ होगा।”

स्टेशन डायरेक्टरनी साहबा ने जैसे एकदम चौंक कर कहा—“ओह, माफ़ करना। मैं भूल ही गई थी कि भाई साहब भी बराबर वाले कमरे में बैठे हैं। हाँ, ठीक है, वह तो मैं उम्मी वक़्त समझ गई थी कि कोई और है, जमाल नहीं हो सकती।”

अब बेगम ने ठहाका लगाया और जमाल बहन ने भी अब उनकी शरारत को समझा तो उन्होंने भी हँस कर कहा—“कम्बख्त कहीं की, यह विष बो रही थी तू। मगर मेरा मर्द ऐसा नहीं है कि वह इन बातों का यक़ीन करले। उसे ख़ैर यह तो नहीं मालूम है कि तुम कितनी बनी हुई हो मगर उसे मुझ पर जो विश्वास है वह इन बातों में डगमगा नहीं सकता। हाँ, अगर इन बेगम साहबा के शौहर के बारे में तुम कुछ कहतीं तो वहाँ यक़ीन हो जाता।”

स्टेशन डायरेक्टरनी साहबा ने बड़ी गम्भीरता से कहा—“इसी लिये तो इनकी किसी बात का मैंने खुद ज़िक्र नहीं किया, न उस क़ौवाल की चर्चा की जिस के घर जा-जाकर आप क़ौवालियाँ सुनती हैं।”

खुदानसबास्ता]

बेगम ने मुस्कराकर कहा—“आदाब अर्ज करती हूँ। मगर मेरा घर वाला भी इतना बेवकूफ नहीं है जितना सूरत से नज़र आता है। तुम तो अपनी ख़बर लो कि घर वाला वहाँ पड़ा है और यहाँ बीबी-बन्ने रेडियो स्टेशन चला रही हैं। तौबा है, कितना बेबस है वह बेचारा भी कि बेगम आग से खेल रही हैं और उस बेचारे को यह यक़ीन है कि दामन बच रहा होगा। लेकिन मैं तो यह कहूँगी कि नौकरी है बड़ी दिलचस्प। नौकरी की नौकरी और हर तरह की दिलचस्पी अलग से। गाना सुनिये, नाचिये, कूदिये, दिल बहलाइये, बल्कि.....दिल चाहे तो दिल भी लगा लीजिये।”

स्टेशन डायरेक्टरनी साहबा ने कहा—“जी हाँ, दूर के ढोल ऐसे ही सुनावने होते हैं। यहाँ आकर देखो तो पता चले कि कैसा ख़ून पानी एक करना पड़ता है। इससे भी बढ़कर ट्रे जिडी और क्या हो सकती है कि जिन चीज़ों से दिलचस्पी हो वही चीज़ें फ़र्ज़ बन जायें। यक़ीन जानो मुझे गाना सुनने का बेहद शौक़ था लेकिन रेडियो में आकर और दिन-रात गाना सुनते-सुनते अब गाने के नाम से मिचली होने लगती है। दूसरे यह कोई पुलिस का महकमा तो है नहीं कि धौंस बट्टे से काम चल जाय। यहाँ तो बेबात की बात पैदा होकर अच्छी से अच्छी नेकनामी को ले दूबती है। जितना फूँक-फूँक कर यहाँ क़दम रखना पड़ता है, वह हम ही जानती हैं।”

बेगम ने कहा—“आपने संजीदगी के साथ इतना बड़ा लेक्चर देकर यह यक़ीन कर लिया होगा कि आपने कहा और मुझको विश्वास हो गया। जैसे मैं, जो पुलिस में हूँ और जिसका ऐसी ऐसी सैकड़ों मुल्लानियों से रोज़ का वास्ता रहता है, उसकी यह सब तज़रबेकारी सिर्फ़ इसलिये है कि आप ज़रा सा चकमा दें और मैं आपके गुन गाने लगूँ। जिस वक़्त तू

भूठ बोला करे, एक आईना भी सामने रख लिया कर। इस सफ़ाई से सूरत से भूठ बरसता है कि अंधी भी देख ले।”

स्टेशन डायरेक्टरनी ने मुस्करा कर कहा—“अपने आईने में हर एक की सूरत न देखा करो और न अपनी कसौटी पर हर एक को परखा करो। पुलिस में रहकर पाक साफ़ बने रहने का दावा बिलकुल ऐसा ही है जैसे नदी से निकल कर कोई सूखा रह जाने का दावा करे। पुलिस वालों की शौक्रीनियाँ तो मशहूर हैं, फिर कोतवालिनी—पुलिसवालिनों की भी नानी अम्माँ!—उनके लिये भला दिल बहलाने और दिल लगाने की कौन सी कमी है।”

इसी बीच चाय आ गई। हम दोनों ने अन्दर ही चाय पी और स्त्रियों ने बाहर। हम मन ही मन सोंच रहे थे कि ये औरतें आपस में कैसा गन्दा मजाक करती हैं और एक दूसरे की कैसी क़लई खोलती हैं। श्वैर, यह तो मजाक हो रहा था। लेकिन स्टेशन डायरेक्टरनी साहब का यह कहना कि पुलिस में रहकर पाक साफ़ रहना मुमकिन नहीं, कुछ ग़लत भी न था। पुलिसवालिनों के लिये खुल-खेलने के जैसे मौक़े हो सकते हैं वह हमसे भी छिपे न थे और इस आशंका में हम स्वयं धुला करते थे।



पन्द्रह

बेगम की तरफ से हमको पूरा इत्मीनान था । लेकिन इस इत्मीनान के बावजूद खुदा जाने क्यों यहाँ के रङ्ग देखकर दिल परेशान सा रहता था कि आखिर वह भी दिल रखती हैं, जवानी रखती हैं, हुस्न रखती हैं और फिर हुक्मत रखती हैं । उनके बहकने के लिये तो बस इशारा चाहिये ज़रा सा और सच्ची बात तो यह है कि वह अगर अब तक विचलित न हुई तो यहाँ उनका कुछ कम एहसान नहीं था, नहीं तो यहाँ तो औरत का बहकना और किसी ग़ैर मर्द से दिल लगा लेना बिलकुल ऐसी ही साधारण बात थी जैसी हमारे भारत में मर्दों का बहक जाना । भारत में मर्द अगर किसी औरत को डाल ले तो ज़्यादा से ज़्यादा ऐयाश कहा जा सकता था । वहाँ आमतौर से मर्द ऐयाशियाँ करते ही थे । बड़े-बड़े शरीफ़ घरानों के मर्द, बड़े-बड़े पढ़े-लिखे, बड़े-बड़े समझदार और बड़े-बड़े रईस—बल्कि इसको तो बड़ाई का एक लक्षण समझा जाता था कि बड़ा आदमी एकाध इस किस्म का शौक़ भी रखता हो और एकाध तोता उसके यहाँ भी पला हो । लेकिन अगर औरत से कहीं इस तरह की भूल एक दफ़ा भी हो जाय तो फिर वह गई हमेशा के लिये । न शौहर के घर में उसकी जगह न माँ-बाप के यहाँ उसका ठिकाना । बेटे की आवारगी पर अन्वाज़ान अगर बहुत ही भले आदमी हुए तो थोड़ा बहुत गुस्सा करके रह जाते थे, लेकिन बेटी की ज़रा सी बदनामी पर आत्म-हत्या तक कर लेना कोई बड़ी बात न थी ।

शौहर की ऐयाशी पर बीवी धुट-धुट कर रहती थी पर उसको अपनी बेइज़्जती का ख्याल न आता था । जलना और चीज़ है, पर शौहर की बदचलनी इतनी संगीन चीज़ न समझी जाती थी कि बीवी किसी को मँह दिखाने योग्य ही न रहे । अलबत्ता अगर बीवी ज़रा भी चाल-चलन के मामले में डगमगा जाय तो शौहर की ग़ैरत और उसका स्वाभिमान लेने और जान देने तक का सवाल पैदा कर देता था । हजारों ग़ैरतदारों ने अपने को बीवी की इज़्जत पर क़ुरबान कर दिया था और कितने ही बाँवी की नाक काट कर जेल चले जाते थे या फाँसी पर लटक जाते थे । हालाँकि धर्म और मज़हब की दृष्टि से मर्द का पाप भी उतना ही संगीन है जितना औरत का लेकिन समाज ने हमको इसका आदी बना दिया था कि मर्द की ऐयाशी तो एक साधारण भूल है और औरत की ऐयाशी वह महापाप है जिसका प्रायश्चित्त ही नहीं हो सकता । खुदा माफ़ कर दे तो कर दे, समाज नहीं माफ़ कर सकता । यानी इस मामले में समाज अपने को खुदा से भी बड़ा समझता है । मर्द ऐयाशी करे तो बस वह ऐयाशी है—ज़रा बुरी बात, लेकिन इसमें इज़्जत आबरू का कोई सवाल नहीं पैदा होता । हद यह है कि खुद उसकी इज़्जत पर भी आँच नहीं आती । लेकिन औरत से भूल चूक हो जाय तो न सिर्फ़ उसकी बल्कि उसके शौहर की, उसके बाप भाई की और उसके सारे ख़ानदान की इज़्जत चली जाती है । भूल चूक तो भूल चूक है, अगर कोई औरत अपनी कमज़ोरी के कारण किसी मर्द की ज़बरदस्ती का शिकार हो जाय तो भी उसकी बेक़र्सी और लाचारी को नहीं समझा जाता बल्कि इसके बावजूद वह न शौहर के काम की रहती है न किसी अपने रिश्तेदार को क़ायल कर सकती है कि मैं कमबख़्त 'औरत' हूँ, मुझको मज़बूर किया जा सकता है । जी नहीं, कुछ नहीं, मोती की आब उतरी तो उतरी ।

हमने लाख-लाख अपने मन को समझाया कि हिन्दुस्तान में जहाँ

खुदानखास्ता]

मर्दों की हकूमत है, समाज ने औरत के साथ ये ज़्यादतियाँ अगर कर रखी हैं तो यहाँ हमको उसी तरह ठंडे दिल से औरत की ज़्यादती को बरदाश्त करना चाहिये जिस तरह हिन्दुस्तानी औरत बरदाश्त से काम लेती है। लेकिन दिल किसी तरह इस क्रयामत का मुक्काबिला करने को तैयार न था। हम और तो सब कुछ बरदाश्त कर सकते थे। घर की क़ैद, मर्द होकर हांडी चूल्हे का मुक्काबिला, शौहर होकर बीबी की फ़रमाँबरदारी, दफ़्तर के काम के बजाय घर में बैठकर सीने काढ़ने का काम, बाप होकर माँ की तरह बच्ची की परवरिश—ये सब सख़्तियाँ भेल ही रहे थें और ज़िन्दगी भर भेलने के लिये तैयार थें, मगर इस कल्पना से तो एकदम ज़ंमे जहन्नुम सा भड़क उठता था। हमारे दिल के अन्दर वह अकथनीय तकलीफ़ होती थी जिससे खुदा दुश्मन को भी बचाये। हमने अक्सर इस बात पर भी ग़ौर किया कि इसी तरह की तकलीफ़ औरतों को भी भारत में होगी होगी, और अन्त में मानना ही पड़ा कि औरत जाति अपनी कोमलता और सहृदयता के बावजूद इस मामले में एक भारी पहाड़ है और मर्द जाति अपनी ताक़त और कठोरता के होते हुए भी इस सिलसिले में एक रूई के गाले से ज़्यादा हैसियत नहीं रखता। औरत की यह सहनशक्ति, मर्द अगर हज़ार मर्तबा इसी कोशिश में मरमर कर जिये तो भी नहीं हासिल कर सकता। इसको हमारे दिल से पूछिये कि आजकल हमारा क्या हाल था। सिर्फ़ यह शक हो गया था कि बेगम का आना जाना एक सब जज़िन साहबा के यहाँ बहुत ज़्यादा था। और हमको यह भी मालूम हो गया था कि उनके पति भी बेगम के सामने आते हैं। दर असल वह ख़ानदान ही कुछ हद से गुज़रा हुआ था। उनके यहाँ के मर्द तो बस इसलिये पर्दा करते थे कि क़ानून के अनुसार उन्हें पर्दा करना चाहिये था। अगर क़ानूनी पाबन्दी उठा ली जाती तो पर्दा छोड़ने के सिलसिले

में लाज-शर्म को ताक पर रखने वाले शायद इसी घराने के मर्द होते । नाबुकिस्तान के क़ानून के अन्तर्गत पर्दा छोड़ने का लायसेन्स सिर्फ़ उन मर्दों को दिया जा सकता था जो शराफ़त के दावेदार न हों और सिर्फ़ पेशावर हों, यानी जिनकी रोज़ी का ज़रिया ही लाज बेचना हो । उनके अलावा बाक़ी किसी भी मर्द को पर्दा छोड़ने की इजाज़त न थी । लेकिन यह भी सच है क़ानून तो ग़रीबों के लिये होता है, जनता के लिये होता है । श्वासकवर्ग को इससे क्या मतलब । दूसरे अपने घर में जिसका जी चाहे वेपर्दा रहे । सब-जजिन महोदया के ये पति भी वैसे तो बड़े पर्दानशीन थे, बिना बुक़ी पहने कभी घर के बाहर नहीं निकलते थे । घर पर भी हमेशा मर्दाने ही में रहते थे । लेकिन सब-जजिन और बेगम के सम्बन्ध इस हद तक बढ़े कि आख़िर उनसे भी पर्दा उठा दिया गया । अब जब देखिये बेगम को उनके ही यहाँ मौजूद हैं । अगर किसी दिन न गईं तो बुलावे पर बुलावा चला आ रहा है । सब-जजिन की तरफ़ से कम और उनके पति की तरफ़ से बहुत ज़्यादाह । फिर हमको एक शिकायत यह भी थी कि अगर ऐसे ही सम्बन्ध बढ़ गये थे तो सब-जजिन के पति ने आख़िर हमको कभी क्यों न बुलाया । न वह कभी हमारे यहाँ आये न हम कभी उनके यहाँ गये । दूसरे इतनी घनिष्टता के बाद भी बेगम ने कभी हमसे कोई ज़िक्र उनके यहाँ का नहीं किया बल्कि यह क़िस्सा तो हमने दूसरों से सुना । एकाध परचा बेगम के पर्स में सब-जजिन के पति का देखा जिनमें किसी में लिखा था कि आपने तो ख़ूब इन्तज़ार कराया । चाय लिये बैठा रहा और आख़िर में जब आप न आईं तो मैंने भी चाय न पी । किसी में लिखा था कि अगर आज आप न आईं तो मेरा सारा प्रोग्राम ख़त्म हो जायगा, बल्कि एक ख़त में तो यहाँ तक लिखा था कि आपकी दोस्त सब-जजिन साहबा बाहर जा रही हैं । आपको ज़्यादा वक़्त अब यहाँ बिताना है । अगर आपके शौहर साहब

खुदानखास्ता]

इजाजत दे सकें तो मुझ गरीब पर भी करम कीजियेगा ।

इन सभी खतों से अगर हमारे सन्देह बढ़ रहे थे तो कोई ताज्जुब की बात नहीं थी । हमने इन खतों को पहले तो चुपके से चुरा लिया, इसके बाद अपने एकमात्र दोस्त सिद्दीक भाई को वह खत दिखाये । वह भी इन खतों को देखकर कुछ घबरा से गये, और उनको भी कम से कम इसका तो कायल होना ही पड़ा कि कुछ न कुछ दाल में काला जरूर है, मगर हमको इत्मीनान दिलाया कि अपनी बेगम के जरिये इस सम्बन्ध में पूरी जाँच पड़ताल करायेंगे । आखिर एक दिन जब सिद्दीक भाई हमारे ही यहाँ थे, और बेगम घर से गायब थीं, बाहर से नफ़ीसा ने आवाज देकर एक कारचोबी पर्स और एक कागज़ भिजवाया कि इसको बेगम की मेज़ पर रख दिया जाय, सब-जजिन साहबा के घर से आया है । हमने बन्द लिफ़ाफ़े पर पानी लगाकर बड़ी सावधानी से लिफ़ाफ़ा खोला और सिद्दीक भाई तथा हमने मिलकर खत पढ़ना शुरू किया । लिखा था :—

“सरकार !

एक तुच्छ सी भेंट भेज रहा हूँ । यह पर्स मैंने खुदा बनाया है और शायद आपको यक़ीन आ सके कि आपके लिये ही बनाया है । इसकी तैयारी में एक महीना आठ दिन लगे हैं, और इस समय में वह वक़्त शामिल नहीं है जब आप यहाँ होती थीं बल्कि इसकी तैयारी का काम ही इसलिये शुरू किया गया था कि आपके पीछे भी आपही का खयाल मौजूद रहे, गोया आपकी अनुपस्थिति में एक माह आठ दिन तक मैंने आपको जिस तरह याद किया है उसका एक धुंधला सा स्वाका यह पर्स है । शायद इसके नक़्श में मेरी मित्रता की ज़िन्दगी आपको भी कभी महसूस हो सके । आप आज दो दिन से ग़ायब हैं ।

आप ही अपने जरा लुत्फ-ओ-करम को देखें
हम अगर अर्ज़ करेंगे तो शिकायत होगी।

आपका—

“मेहरोत्रा”

हमने ख़त पढ़कर काँपते हाथों से निहायत ख़ामोशी से सिद्दीक़ भाई को दे दिया। सिद्दीक़ भाई भी सन्नाटे में आ गये और खोखली आवाज़ में बोले—“पढ़ लिया है मैंने।”

हमने थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद कहा—“क्या तुमको अब भी कोई शक है?”

सिद्दीक़ भाई ने जैसे कुछ न समझते हुए कहा—“उसकी तरफ़ से तो मुझे भी कोई शक नहीं, सईदा बहन की तरफ़ से इस तरह की उम्मीद भी नहीं।”

हमने जोश में आकर कहा—“कैसी बातें करते हो सिद्दीक़ भाई। सईदा बहन की तरफ़ से इस तरह की उम्मीद भी नहीं। अगर वह इस सिलसिले में बेक्रसूर होती तो पर्स में लिये-लिये उस बदमाश के ख़त न फिरा करती। अगर वह इस सिलसिले में बेख़त होती तो उनके यहाँ का आना-जाना जारी न रखती। अगर उनके दिल में खुद चोर न होता तो मुझसे कभी इसका ज़िक्र ज़रूर करती। मगर वहाँ तो बराबर चोरियाँ हैं, मुस्तक़िल राज़दारी है। एक-एक बात मुझसे छिपाई जा रही है। और अब भी देख लीजियेगा कि इस पर्स और इस ख़त के बारे में भी कोई ज़िक्र न किया जायगा। मगर मैं भी अब चुप रहने वाला नहीं हूँ, न मेरा जन्म नाज़ुकिस्तान में हुआ है कि मैं बीबी की बेशर्मी पर क़िस्मत की शिकायत करके रह जाऊँ। मैं तो उनकी जान ले लूँगा और अपनी जान दे दूँगा।

खुदानख्वास्ता]

सिद्दीक़ भाई ने हमको समझाते हुए कहा—“इस क़दर बेक्राबू होने की ज़रूरत नहीं। मैं तुम्हारी बहन को परचा लिखकर अभी बुलाता हूँ। पहले उनसे सलाह करलो फिर कोई क़दम उठाना।”

हम तो सचमुच अपने हवास में नहीं थे। आँखों में खून उतर आया था। सारे जिस्म में जैसे शोले से भड़क रहे थे, मगर सिद्दीक़ भाई ने पहले तो जमाल आरा बहन को ख़त लिख कर भेजा, इसके बाद हमको उस वक़्त तक समझाते बुझाते रहे जब तक जमाल बहन न आ गईं। जब जमाल बहन ने ड्योढ़ी पर आवाज़ दी तो हम तुरन्त पर्दे में हो गये। जमाल बहन ने घर में आकर घबराई हुई आवाज़ में कहा—“ख़ैरियत तो है?”

सिद्दीक़ भाई ने कहा—“हाँ, ख़ैरियत है। तुम उधर कुर्सी पर बैठ जाओ तो इत्मीनान में बताऊँ।”

जमाल बहन ने बैठते हुए कहा—“पहले मुझे बतादो कि क्या क्रिस्ता है। निगोड़मारा दिल धड़क रहा है। मैं तो बेहद परेशान हो गई थी तुम्हारा परचा पाकर कि न जाने क्या क्रिस्ता हुआ होगा।”

अब सिद्दीक़ भाई ने शुरू से आख़ीर तक सारा क्रिस्ता सुनाया। वह परचे दिखाये जो हमने बेगम के पर्स से चुराये थे और आख़ीर में वह पर्स और वह पत्र भी दिखा दिया जो आज आया था। जमाल बहन ने सब कुछ देखते हुए कहा “मुबारक हो भाई साहब, मालूम होता है कि आपकी बेगम साहबा माशाअल्ला बालिग़ हो गई हैं। अब कहिये न कि ‘जिये मेरी जोरू गली-गली दिल फेंको’।”

सिद्दीक़ भाई ने डाँटा, “यह भला मज़ाक़ का कौन सा मौक़ा है। वह आपसे बाहर हैं कि मैं हिन्दुस्तानी खून रखता हूँ, मैं नाज़ुकिस्तान

में नहीं पैदा हुआ हूँ। मैं उनकी जान ले लूँगा और अपनी जान दे दूँगा।”

जमाल बहन ने कहा—“अरे अरे। भला ऐसा भी क्या गुस्सा ? औरतें तो यह किया ही करती हैं। इसमें नई बात कौन सी है। अगर इन्हीं बातों पर घर के बैठने वाले मर्द जान लेने और जान देने लगे तो हमारे नाज़ुकिस्तान की सारी आबादी ही ख़त्म हो जायगी। अब अपने भाई से ही पूछ लीजिये कि मैंने उनको क्या कम तड़पाया है।”

सिद्दीक़ भाई ने कहा—‘ख़ुदा न करे। मैं तो हज़ार में कह दूँ कि ख़ुदा दुनिया ज़हान के लड़कों की किस्मत ऐसी ही करे जैसी मेरी है और हर एक को ऐसी ही बीवी मिले जैसी मुझको मिली है।”

जमाल आरा बहन ने कहा - “अब यह खुशामद शुरू हुई। और वह जो अब्दुल्ला चपरासी का किस्सा था, वही जो मर्दाना स्कूल का चपरासी था, अपना पड़ोसी.....।”

सिद्दीक़ भाई ने कहा—“वह तो मुझे शक हुआ था। मुझसे कहने वालों ने एक बात कही थी तो मैंने तुमसे भी पूछ ली थी कि यह क्या किस्सा मशहूर हो रहा है ?”

हमने अन्दर से कहा—“बहन मैं आपको बताये देता हूँ कि मेरा ख़ून आपकी गर्दन पर होगा। ऐसी हालत में मेरा ज़िन्दा रहना नामुमकिन है। मैं और कुछ नहीं कह सकता।”

जमाल बहन ने कहा—“बेवकूफ़ न बनिये भाई साहब। आप जानते हैं, मुझे आपसे कितनी हमदर्दी है। पहले मुझे जाँच कर लेने दीजिये, इसके बाद जान देने का इरादा कीजियेगा।”

सिद्दीक़ भाई ने उनको समझा-बुझाकर और हमारा हाल बतलाकर इसका वायदा ले लिया कि वह बहुत जल्द असली बातें मालूम करके हमको बता देंगी।

सोलह

आज राधानगर में बड़ी हलचल थी। विधान सभा के चुनाव का दिन था। सुबह से वोटरानियों के लिये मोटरों, लारियों, टांगों और गाड़ियों का एक तांता बँधा हुआ था। एक पोलिंग स्टेशन कोतवाली के सामने भी था जिसमें तीन कैम्प लगे हुए थे और संयोग से उस पोलिंग स्टेशन पर पोलिंग अप्रसरनी भी जमाल आरा बहन थीं। बेगम के जिम्मे तो सारे शहर में शान्ति बनाये रखना था। वह अपनी सरकारी मोटर में पुलिस की एक टुकड़ी के साथ इधर से उधर और उधर से इधर फिर रही थीं। हम और सिद्दीक भाई दोनों कोठे पर बैठे चुनाव का तमाशा देख रहे थे। एक तरफ़ शोर था—“अपने मर्दों की इज्जत बचाने के लिये अख़्तर ज़मानी बेगम को वोट दीजिये।” दूसरी तरफ़ एक क्रयामत मची थी—“सरकार की बागी ख़लीफ़ा जिसा आपकी नुमाइन्दगी (प्रतिनिधित्व) करेंगी।” तीसरी तरफ़ भी हालाँकि वह शोर-मुल नहीं था लेकिन एकाध नारा कभी-कभी सुनने में आ जाता था कि सरदारिनी साहबा को न भूलिये। यह आपकी पुरानी सेविका हैं। लेकिन उन सेविका महोदया के लिये कोई सफलता की आशा न दिखती थी इसलिये उनके कैम्प में औरतें कम और मक्खियाँ ज़्यादा थीं। अलबत्ता ख़लीफ़ा जिसा और अख़्तर ज़मानी के कैम्प ख़ाख़व भरे थे। इन्द्रधनुष के पास भला इतने रंग कहाँ जितने रंग उस समय पोलिंग स्टेशन पर नज़र आ रहे थे। औरतें वोट देने क्या

आई थीं, मालूम होता था किसी की शादी में जैसे समझिनें उतरी हों । वह भड़कीले रंगीन लिबास और वह ज़ेवर कि न पूछिये । पोलिंग स्टेशन जगमग-जगमग कर रहा था । लगता था मानो किसी ने लगर फेंक कर आकाश गंगा को ज़मीन पर गिरा लिया हो । इन्द्र का अखाड़ा बना था पोलिंग स्टेशन, परिस्तान था परिस्तान । लेकिन एक बात थी कि अख्तर ज़मानी के कैम्प में रेशम और कमख्वाब का सैलाब आया हुआ था और खलीकुन्निसा के कैम्प में वह रंगीनियाँ और रेशम की वह सरसराहटें तो न थीं अलबत्ता सादगी यहाँ भी रंगीनी का मज़ा दे रही थी । उन दोनों का मुक़ाबिला करने से यह बात तो शायद एक अधा भी देख लेता कि एक तरफ़ रुपये का जोर था और दूसरी तरफ़ सिर्फ़ भक्ति काम कर रही थी । आख़ीर लंच की छुट्टी हुई । बेगम भी गश्त से लौट कर पोलिंग अफ़सरनी यानी जमाल आरा बहन को लेकर घर में खाना खाने आ गईं । हम और सिद्दीक भाई पदों में रहे और उन दोनों के लिये घर के अन्दर मर्दाने में ही खाने की मेज़ लगवादी । उस वक़्त उन दोनों में चुनाव की ही बातें हो रही थी । बेगम ने कहा—“क्या रंग है इस पोलिंग स्टेशन का ? बाक़ी स्टेशनों पर तो खलीकुन्निसा दस आने जा रही हैं, अख्तर ज़मानी पाँच आने और सरदारिनी एक आना । मेरा ख़याल तो है कि सरदारिनी की ज़मानत भी ज़ब्त हो जायगी ।”

जमाल आरा बहन ने कहा—“यहाँ भी यही हाल है । खलीकुन्निसा को अब मुश्किल से रोका जा सकता है । और सरदारिनी की ज़मानत तो निश्चय ही ज़ब्त होगी । मैंने तो उनके कैम्प की एक एजन्टिनी और एक वोटरनी को गिरफ़्तार करा दिया है ।”

बेगम ने कहा—“क्यों, ख़ैरियत तो है ?”

जमाल बहन ने कहा—“वह एजन्टिनी साड़ी बंधवाकर एक लड़के

खुदानखास्ता]

को ले आई जाली बोट दिलवाने। सूरत देख कर तो मैं न पहचान सकी। मगर जब मैंने उससे पूछा, मां का नाम ? तो उसने मर्दानी आवाज निकाली ? इस पर मुझे सन्देह हुआ और अब जो मैंने गौर किया तो उन कुमारी जी की चोटी भी नकली थी। वह मैंने नोच कर उनके हाथ पर रखदी और उनको पुलिस के हवाले कर दिया। अब उन पर जालसाजी का भी मुकदमा चलेगा और पर्दा तोड़ने का भी।”

बेगम ने कहा—“यहाँ तो खैर खलीकुन्निसा हो ही जायगी लेकिन अगर सारे देश में मर्दराज दल को कामयाबी हो गई तब सरकार का बड़ी करारी हार होगी।”

जमाल बहन ने कहा—“सरकार की हार तो सरदारिनी के हारने से ही हो गई।”

बेगम ने कहा—“खैर, वह तो सरकार की नहीं, बल्कि फ़खरुन्निसा बेगम प्रोसिडेन्ट की व्यक्तिगत हार है। लेकिन यह हार तो सरकार की परम्परा, सरकार के सिद्धान्तों और सरकार के उद्देश्यों की हार होगी। और फिर मर्दों को मुश्किल से ही क़ाबू में रखा जा सकेगा।”

जमाल बहन ने कहा—“यह तो खैर तुम ग़लत कह रही हो—

‘आह को चाहिये एक उम्र असर होने तक’

अलबत्ता मर्दों की आज्ञादी की नींव जरूर पड़ जायगी। मर्दों की तालीम और समाजी हालत भी ऊँची करने की कोशिश की जायगी।”

बेगम ने कहा—“और पर्दा ?”

जमाल बहन ने कहा—“पर्दा तो खैर यक़ीनन और फ़ौरन ख़त्म। अगर पूरे तौर पर न उठा तो भी पर्दे की क़ानूनी हैसियत जरूर ख़त्म हो जायगी और फिर यह एक सामाजिक चीज़ बन कर रह जायगी कि जिसका जी चाहे वह अपने मर्दों को पर्दा कराये और जिसका जी चाहे न कराये।”

बेगम ने कहा—“तो नतीजा क्या होगा, देख लेना कि बेशुमार सरफिरी औरतें मारे शौक्रीनी के अपने-अपने मर्दों को घरों से लेकर निकल पड़ेंगी। और फिर जो गड़बड़ी होगी उसके नतीजे पर भी गौर कर लो। मर्द जिस वक़्त तक घरों में हैं उसी वक़्त तक नाजुकिस्तान का अमन कायम है। मर्दों के बाहर आने के बाद क्या आप यह समझती हैं कि यह जनानी फ़ौज उनकी रोक-थाक कर सकेगी? यह नाजुक पुलिस उनको क़ाबू में रख सकेगी? अपराधों के ढंग और उनकी रफ़्तार ही कुछ की कुछ होकर रह जायगी और सरकार को लाचार हो मर्दों का मुक़ाबिला करने के लिये हर विभाग में मर्द भी रखना पड़ेंगे। जिनकी मौजूदगी में औरतें कुछ ही दिन के बाद बिल्कुल बेकार साबित होंगी और धीरे-धीरे यहाँ मर्दों की हुक़ूमत होगी और औरतें गुलाम बन जायेंगी।”

जमाल बहन ने कहा—“तो फिर इसका मतलब यह हुआ कि अब रोटी पकाना और कपड़े सीना भी सीख लेना चाहिये।”

बेगम ने कहा—“झैर, तुम तो मज़ाक़ कर रही हो, लेकिन मैं इस सिलसिले में पुरुष पर्दा रक्षक दल का दिल से समर्थन करती हूँ कि मर्दराज आन्दोलन औरतों के राज्य को ख़त्म करके रहेगा।”

जमाल बहन ने कहा—“झैर, इसमें आपकी समर्थन की क्या ज़रूरत है। मर्दराज दल के हर प्लेटफ़ार्म से पुकार-पुकार कर यही कहा जा रहा है कि हम शासन नहीं नारित्व चाहते हैं। वह चोरी-छिपे थोड़े ही कह रही हैं। तुमने मोहनी देवी का भाषण नहीं पढ़ा जो अखिल नाजुकिस्तान मर्दराज कांग्रेस की सभानेत्री के पद से उन्होंने दिया है और कई-कई जगह साफ़-साफ़ कहा है कि हम सिर्फ़ पर्दा उठवाना चाहते हैं। पर्दा उठा कर मर्द को बाहर निकाल कर देख

लीजिये, फिर तो हक हकदार के पास आप ही पहुँच जायगा। उनका दृष्टिकोण तो यह है कि नाजुकिस्तान एक कलाबाजी खाया हुआ प्रदेश है, जहाँ हर बात उलट कर रह गई है। यही कारण है कि हमको अपनी जिन्दगी असली नहीं बल्कि कुछ बनावटी नज़र आती है। और हम इस बनावटी जिन्दगी से ऊब चुके हैं।”

बेगम ने कहा—“बकती है चुड़ैल। ऊब चुकी है! और जब मर्द बाहर आ जायँगे और पकड़-पकड़ कर औरतों को घरों में ठूँसेंगे तब इन चर्वा को पता चलेगा कि ऊबना किसको कहते हैं। ज़रा पहुँचने दो मर्दों को विधान सभा में, और निकलने दो घरों के बाहर से, फिर देखना कि यह मर्द कैसे-कैसे नाकों चने चबवाते हैं।”

जमाल बहन ने कहा—“खैर, ये बातें हमारी आपकी जिन्दगी में मुश्किल से होने पायेंगी। मर्दों को व्यावहारिक जगत में कदम रखने की क्षमता आने के लिये अभी एक युग चाहिये। न अभी उनकी तालीमी हालत अच्छी है, न उनको बाहर की दुनिया का कोई तजर्बा है, न कोई अन्दाज़। अभी तो पर्दा उठेगा, फिर मर्द मुद्दतों में घरों से निकलने के योग्य हो सकेंगे। और जो निकलेंगे भी वह इस क़ाबिल न होंगे कि उन्हें ट्रेनिंग दी जाय। बुड़ढे तोते भी कहीं पढ़ा करते हैं। हाँ, अगली पीढ़ी ऐसी ज़रूर होगी जो इस क़ाबिल कही जा सके कि उसे कोई ज़िम्मेदारी सौंपी जा सके।”

बेगम ने कहा—“अच्छा, अगर यह क़ानून उठ गया पर्दे का, तो क्या तुम भाई साहब को निकालोगी बाहर?”

जमाल बहन ने कहा—“क्यों क्या हुआ? तुम्हारी क़सम हाथ में हाथ डाल कर अपने मर्द के साथ भूमर बाग़ और जौशन पार्क में घूमूँगा।”

बेगम ने जलकर कहा—“बेशर्म हैं आप। अरे पगली जो तेरे मर्द

को स्त्रियाँ घूरा करेंगी, और देखा करेंगी ललचाई हुई नज़रों से उस चक़्त क्या करेगी तू ?”

जमाल बहन ने कहा—“कहूँगी क्या, खुश होऊँगी कि जैसा मर्द मेरा है वैसा किसी का नहीं ।”

बेगम ने कहा—“और जो किसी औरत ने मोह लिया तो ?”

जमाल बहन ने कहा—“तो क्या, एकाध हफ़्ता अपनी किस्मत को रो-पीट लूँगी । और फिर कोई ग़बरू जवान अपने लिये ढूँढ़ लूँगी ।”

बेगम ने तंग आकर कहा—“खुदा बचाये तुझ जैसी बेग़ैरत से । शर्म तो नहीं आती ये बातें करते । मैं तो अपने मियाँ जी से कहूँगी कि कान खोल कर सुन लो, घर के बाहर क़दम निकाला तो पैर तोड़ दूँगी ।”

जमाल बहन ने कहा—“जी, और क्या, जैसे आपके तोड़े उनका पैर टूट ही तो जायगा, उल्टे आपही की कलाई मोच खा जायगी ।”

बेगम ने कहा—“अच्छा, चाहे तुम देख लेना..... खैर, छोड़ो भी इस ज़िद को । पोलिंग स्टेशन पर पोलिंग का वक़््त आ गया है । मैं जा रही हूँ शकुन्तला स्वयाय़र वहाँ के पोलिंग स्टेशन पर डर है कि भगड़ा न हो जाय ।”

वे दोनों बातें करती हुई बाहर निकल गईं । सिद्दीक़ भाई तो उनकी बातों पर बिना कुछ सोचे-समझे हंस रहे थे, मगर हम गम्भीरता के साथ सोच रहे थे कि नाज़ुक़िस्तान आते ही बेगम तो ऐसी मालूम होती हैं जैसे पीढ़ियों से इसी देश की रहने-सहने वाली हैं । मर्दों की मुख़ालिफ़त, यहाँ की तेज़ से तेज़ औरत ज़्यादा से ज़्यादा इतना ही कर सकती थी ज़ितनो बेगम कर रही थीं । और हमको बेगम की

खुदानखास्ता]

बातों पर गुस्सा आ रहा था कि क्या कहें। मगर क्या करते, मजबूर थे, बेबस थे, मर्द थे। उन दोनों के जाने के बाद हम दोनों फिर कोठे पर पहुँच गये। चुनाव की गर्मा-गर्मी पूर्ववत् थी बल्कि जोश-ख़रोश और भी बढ़ गया था। उस वक्त ख़ली कुन्सिसा के कैम्प में सचमुच तिल धरने की जगह न थी। टाँगों पर टाँगें और लारियों पर लारियाँ वोटरानियो से खचाखच भरी चली आ रही थीं। अख़्तर ज़मानी बेगम के कैम्प में भी ख़ैर हुजूम तो बहुत था मगर वह बात न थी। उनके कैम्प पर जो झंडा लहरा रहा था उस पर बुक की तस्वीर थी और ख़ली कुन्सिसा के कैम्प पर मर्दराज दल का कौमी निशान, यानी झंडे पर मूँछ बनी हुई थी और झंडा लहरा रहा था। वास्तव में उस वक्त चुनाव तो करीब-करीब ख़त्म हो चुका था मगर चूँकि यही पोलिंग स्टेशन केन्द्रीय पोलिंग स्टेशन था इसलिये बाकी सारे पोलिंग स्टेशनों से चार बजते ही परचियों के बक्स यहीं आ गये और मत गिनना शुरू हो गये। अब सारा शहर सिमट कर जैसे यहीं आ गया था और फल की घोषणा का इन्तज़ार था। एकाएक थोड़ी देर के बाद सारा पोलिंग स्टेशन 'ख़ली कुन्सिसा ज़िन्दाबाद' 'मर्दराज दल ज़िन्दाबाद' 'मर्दराज ज़िन्दाबाद' के नारों से गूँज उठा और देखते ही देखते अख़्तर ज़मानी बेगम के कैम्प में सन्नाटा छा गया। औरतों की भारी भीड़ नारे लगाती, खुश होती, उछलती कूदती ख़ली कुन्सिसा के कैम्प में नज़र आ रही थी। हमने देखा कि थोड़ी ही देर में एक गम्भीर और शान्त प्रकृति की महिला को बहुत सी औरतें हारों और फूलों में लादे हुए अपने घेरे में लिये पोलिंग स्टेशन में पहुँच गईं। यहाँ उनको देखते ही 'ख़ली कुन्सिसा ज़िन्दाबाद' के नारे फिर लगाये गये और आख़िर ख़ली कुन्सिसा बेगम ने एक ऊँची सी जगह खड़े होकर पहले तो हाथ जोड़ कर लाखों औरतों के मजमे को सलाम किया फिर किसी ने एक

माइक्रोफोन उनके सामने लाकर रख दिया और वह बोलने लगी :—

“बहनों !

आप मुझको मुबारकवाद न दीजिये, बल्कि मैं आपको मुबारकवाद देती हूँ कि आप, सरकार की सारी धांधली के बावजूद, रुपये की बारिश के मुक़ाबिले में अपनी ग़रीबी को लेकर सिर्फ़ अपने सच्चे जोश और ईमानदारी से कामयाब हो गईं । यह कामयाबी मेरी नहीं बल्कि आपकी है । आपने अपनी नुमाइन्दगी का जो भार मेरे कमज़ोर कंधों पर रक्खा है, दुआ कीजिये कि मैं उसे उठा कर चल सकूँ और आपकी सेवा इस मूँछदार भंडे के नीचे कर सकूँ । हम हक़दार को हक़ दिलाने के लिये उठे हैं । औरत का फ़र्ज़ उसको याद दिलाना है । ज़िन्दगी को तमाशा नहीं बल्कि ज़िन्दगी के रंग में देखना है । .खुदा हमको कामयाब करे ।”

इस संक्षिप्त भाषण के बाद एक जुलूस सा बनाया गया । एक तख़्त पर एक कुर्सी बिछाई गई जिस पर ख़लीफ़ुन्निसा हारों में लदी बैठी थीं और जुलूस एक हिलोरें लेते समुद्र की भाँति चल पड़ा ।

— —

सत्तरह

मेहरोत्रा कमबलूत, वही सब-जजिन का पति, वही हमारी जीती जागती व्यकुलता और हमारा सुलगता हुआ जहन्नुम सचमुच हमारे लिये एक परेशानी बना हुआ था। हमने उसको आज तक देखा भी न था मगर वह अजीब-अजीब आकृतियों के साथ हमारे स्वप्न में आता, हमारी कल्पना में बसा हुआ था और हम किसी वक़्त भी उसके तकलीफ़देह खयाल से अपने को सुरक्षित न पाते थे। इस दिन-रात की जलन ने आग़िर हमको घुलाना शुरू कर दिया। भूख हमारी गायब होगई, नींद हमारी रुस्त होगई, इत्मीनान हमारा चला गया और अब तो बात बात पर शक और सन्देह हमको घेर लिया करते थे। यह आज बेगम ने बालों में फूल क्यों लगाया है ? घर से तो बिना फूल लगाये गई थीं। हो न हो यह फूल उसी कमबलूत ने अपने हाथों से उनके बालों में लगाया होगा। हमने फूल को ध्यान से देखा। सुर्ख रङ्ग का फूल एकाएक अपनी शकल बदलने लगा। सचमुच वह तो फूल था ही नहीं। एक मर्द का खिला हुआ चेहरा था। मूछें लहराती हुईं। क्यों न खिलता, बेगम के सिर चढ़ा हुआ था। सौता बनकर सिर चढ़ा था, हँस रहा था, यानी हमको चिढ़ा रहा था। जैसे कोई किसी की चीज़ पर मुस्लालफ़ाना कब्ज़ा करके फ़ातिहाना हँसी हँसे। बेशक वह फ़ातेह (विजेता) था। उसने बेगम के दिल पर कब्ज़ा कर रक्खा था। वह बेगम को 'सरकार' कह कह सम्बोधित कर सकता था। उसने बेगम को

शीशे में उतार रक्खा था। बस हम इन्हीं विचारों में खोकर रह गये और उस समय चौंके जब बेगम ने बच्ची को आवाज दी—“शूकिया !”

मेरी नन्ही मुन्नी गुड़िया दौड़ती हुई आई और मां की गोद में उचक कर पहुँच गई। उसने जाते ही पूछा—“अम्मी क्या लाई हमारे लिये ?”

और बेगम ने सिर से वही फूल निकालते हुए कहा — “ यह देखो, कैसा अच्छा फूल है। जैसी फूल सी तुम वैसा ही यह फूल। कैसी अच्छी खुशबू है इसकी और कैसा प्यारा प्यारा है।”

शोकिया ने वह फूल ले लिया जो अभी हमको इन्सानी चेहरा नजर आ रहा था। जो सवाल हमको करना था वह शोकिया ने कर लिया—

“यह फूल कहाँ से मिला ?”

बेगम ने कहा—“कोतवाली की मालिन ने मुझको दिया था। मैंने अपनी बेटी के लिये वालों में लगा लिया था कि जब घर जाऊँगी तो अपनी गुड़िया को दूँगी।”

लीजिये, यह शक भी दूर हो गया कि मेहरोत्रा ने फूल लगाया होगा। इसी तरह के सैकड़ों शक बात-बात पर पैदा होते थे और फिर अपने आप दूर होजाया करते थे। लेकिन मेहरोत्रा वाला शक तो दिन पर दिन यक़ीन बन रहा था। बेगम का आना जाना वहाँ बना था। अक्सर रात का खाना भी वहीं होता था और हमारी जबान सिद्दीक़ भाई और जमाल बहन ने बन्द कर रक्खी थी कि जब तक उनकी जाँच पूरी न होजाय उस वक़्त तक हम कोई बात जबान से न निकालें। लेकिन हमारा ग़म अब कोई राज़ न रहा था। हर एक को मालूम था कि हम किस आग में जल रहे हैं। आख़िर एक दिन मौक़ा देखकर खुदा-

खुदानखास्ता]

बख्श ने डरते डरते कहा—“हुजूर अगर बुरा न मानें तो एक बात कहूँ।”

हम सुपारी काट रहे थे अपनी धुन में बैठे हुए। उसके इस तरह कहने पर अपने विचारों का सिलसिला तोड़कर कहा—“क्या बात है?”

खुदाबख्श ने कहा—“हुजूर के ग़म को मैं समझता हूँ। मगर इस बात में लापरवाही भी ठीक नहीं है। उस तरफ़ से पूरे दाँव चले जा रहे हैं और आप चुप बैठे हैं। क्या आप उस वक़्त चौँकियेगा जब पानी सर से ऊँचा हो जायगा और वह कमबख़्त मेहरोत्रा अपना पूरा क़ब्ज़ा बेगम साहब पर जमा लेगा?”

हम हैरान थे कि इसको मेहरोत्रा का नाम कैसे मालूम होगया। लेकिन हमने अपनी हैरानी को छिपाते हुए कहा—“तो फिर आख़िर मैं क्या करूँ और मैं मर्दजात आख़िर कर भी क्या सकता हूँ।”

खुदाबख्श ने कहा—“हुजूर चाहे मानें या न मानें, इस कमबख़्त मेहरोत्रा ने बेगम साहबा को उल्लू का कुस्ता जरूर खिला दिया है।”

हमने कहा—“ख़ैर, ये सब जहालत की बातें हैं। मैं इन इन बातों का कायल नहीं।”

खुदाबख्श ने आँखें निकाल कर बड़े दावे के साथ कहा—“हुजूर, आप मानें या न मानें, मगर मैं तो आजमाई हुई बात बताता हूँ। यहाँ इन टौटकों का बड़ा जोर है। पकरिया वाली मसजिद में एक मुस्लानी जी रहती है। क्या बात है उनकी। ऐसा हुक्मी अमल पढ़ती है कि फिर उसकी काट न होसके। खुद मेरे लड़के की बीबी ने एक और मर्द के पजे में फँसकर लड़के को छोड़ रक्खा था। न रोटी कपड़ा

देती थी और न बीमारी इलाज से उसे कोई मतलब रहा था। दिन रात वह थी और उसका नया मर्द। आखिर में उन मुल्लानी जी की विदमत में हाजिर हुआ और रो-रोकर मैंने पूरा हाल सुना दिया। मुल्लानी जी ने अपने अमल के जोर से मुझे बताया कि तुम्हारी बहू को काबू में लाने के लिये तुम्हारे लड़के के सौता ने बड़ा जबरदस्त अमल पढ़ाया है। उल्लू का कुश्ता खिलाया गया है और अब वह सोलह आने उस मर्द के कब्जे में है। आखिर मैंने बड़ी खुशामद की तो मुल्लानी जी का दिल पसीज गया और उन्होंने बताया कि मैं चालीस दिन का एक चिल्ला खींचूंगी। यह चिल्ला नदी के किनारे खींचा गया। रोज रात को ठीक बारह बजे नदी के अन्दर खड़ी होकर वह अमल पढ़ती थी। आखिर चालीस दिन के बाद चिल्ला खत्म करके उन्होंने मुझे एक तावीज दिया कि इसे बन्दर की खोपड़ी में रखकर किसी तरह उस मर्द के मकान की छत पर उछाल दो जो तुम्हारे लड़के की बीबी को फँसाये हुए है। हुआ, मैंने ऐसा ही किया। अब आपसे क्या कहूँ कि कैसा असर हुआ है उसका। दूसरे ही दिन वह मेरे लड़के से आकर मिल गई। हजारों खुशामदें उसकी कीं और तब से आज तक फिर उस तरफ का रुख भी नहीं किया।”

हमने गौर से यह दास्तान सुनकर कहा—“तो फिर उन्हीं मुल्लानी जी की मदद से तुमने अपनी बीबी पर कब्जा क्यों न किया?”

खुदाबक्ष ने कहा—“हुजूर, वहाँ तो क्रिस्ता ही दूसरा है। वह फँसी हुई थोड़े ही है। वह तो निकाह कर चुकी है और जिस एक और मर्द को उन्होंने डाल लिया है उसकी मुझे परवाह नहीं। जब वह मेरे अलावा किसी और मर्द से शादी कर चुकी तो अब मेरी बला से। हजार मर्द रखें तो भी मुझे क्या?”

खुदानरुवास्ता]

हमने कहा—“वैर उस मर्द को जाने दो जिसे डाल लिया है। मगर उसपर अमल क्यों नहीं कराते जिसे तुम्हारी बीबी ने शौहर बना रक्खा है।”

खुदाब.खश ने कहा—“हुजूर उस पर अमल का असर नहीं हो सकता और न मुल्लानी जी अमल पढ़ने पर तैयार होगी। उनकी शर्त तो यह है कि अमल उसके खिलाफ़ पढ़ेंगी जो नाजायज़ तौर पर फँसा हुआ हो। विवाहित मर्द के खिलाफ़ अमल नहीं पढ़ सकतीं। इसीलिये तो कह रहा हूँ कि मेहरोत्रा वाली बात अभी क़ाबू की चीज़ है। अभी उसपर और बेगम साहबा पर अमल का असर हो सकता है।”

हालाँकि हम इन बातों के दिल से क़ायल न थे पर डूबते को तिनके का सहारा बहुत होता है। हमने सोचा कि आग़िर इसमें हज़ा ही क्या है। क्या ताज्जुब है कि इसी का कुछ असर हो। लेकिन अब सवाल यह था कि हम बेगम की इजाज़त के बग़ैर बाहर कैसे निकले। यह तो ठीक है कि बूक़ों में जाते। दो क़दम पर वह पकड़िया वाली मसजिद थी। लेकिन फिर भी जबसे पढ़ें में बैठे थे, आज तक उनकी इजाज़त के बिना घर से बाहर कभी न निकले थे। इसलिये हमने ग़ौर करने के बाद कहा—“मगर मैं जाऊँगा कैसे मुल्लानी जी के पास, बिना बेगम से पूछे?”

खुदाब.खश ने कहा—‘तो उनको खबर कैसे होगी? आप तो यहाँ से सिद्दीक़ मियाँ के घर जाने के बहाने डोली पर रवाना हो जायें। मैं युक्ता पहन कर साथ साथ होलूँगा। पास ही तो है वह मसजिद।’

हमने कहा—“न बाबा, यह ग़लत है। मैं इस तरह की चोरी नहीं कर सकता, और न ऐसी बात मुझसे आगे करना। उनको खबर हो या न हो। पर मेरे दिल से यह कैसे हो सकेगा कि मैं उनके बिस्वास को चोट पहुँचाऊँ।”

खुदाबख्श ने गौर करने के बाद कहा—“अच्छा यों सही, मैं मुल्लानी जी को यहाँ लिये आता हूँ।”

हमने कहा—“हाँ यह तो हो सकता है कि मैं पदों में रहूँगा और बात भी खुद न करूँगा। गौर औरत हैं।”

खुदाबख्श ने कहा—“ए हुजूर उनसे क्या पर्दा। वह तो बड़ी पहुँची हुई अल्लाहवाली हैं।”

हमने कानों पर हाथ रखकर कहा—“कुछ भी सही, मगर हैं तो औरत, गौर औरत। न मैं सामने आऊँगा न अपनी आवाज उनको सुनाऊँगा।”

खुदाबख्श ने कहा—“अच्छी बात है। मैं खुद आपकी तरफ से, जो कुछ आप कहेंगे, कहता जाऊँगा। तो बुलानूँ उनको? ऐसे में बेगम साहबा भी दिन भर के लिये गई हुई हैं।”

हमने कह दिया—“बुलालो भाई। यह भी करके देख लें।”

थोड़ी ही देर में खुदाबख्श ने आकर कहा—‘सरकार! वह मुल्लानी जी तशरीफ ले आई हैं। आप अन्दर हो जाइये तो बुलानूँ।’

हम दौड़कर कमरे में चले गये और खुदाबख्श ने भी बुर्क़ों का नकाब मुँह पर डालकर मुल्लानी जी को अन्दर बुला लिया।

मुल्लानी जी सफ़ेद कपड़े पहने हाथ में लम्बी सी तसबीह लिये, पोपले मुँह में पान दबाये तशरीफ लाईं। खुदाबख्श ने उनको कुर्सी दी तो फ़रमाया—“तौबा तौबा! मैं इस फ़िरङ्गी चीज़ पर नहीं बैठ सकती। यह त.ख़्त शायद पाक होगा। मैं इस पर बैठती हूँ।” और यह कहकर त.ख़्त पर बैठ गई। खुदाबख्श ने उनके पास ही ज़मीन पर बैठकर बुर्क़ों के अन्दर से ही मेहरोज़ा और बेगम का सारा क्रिसा पूरी तफ़सील के साथ उनको सुना दिया। वह माला फेरती

खुदानखास्ता]

जाती थीं और सारा क्रिस्ता भी सुनती जाती थीं। आखिर सारा क्रिस्ता सुनकर फरमाया—“सब कुछ उसके इख्तियार में है। वह जो चाहे करे। लेकिन चूँकि शरा के लिहाज से भी यह बात गलत हो रही है इसलिये मैं अमल पढ़ दूँगी।”

खुदावरखश ने कहा—“मुल्लानी जी, बस ऐसा अमल पढ़िये कि उस कमबख्त मेहरोत्रा को एड़ियाँ रगड़वा दीजिये। जैसा उसने हमारे सरकार को परेशान किया है, खुदा करे आपका अमल उसको भी चैन से न बैठने दे।”

मुल्लानी जी ने कहा—“बुरी बात है। तुमको तो अपने मालिक के लिये अपनी मालकिन की मुहब्बत वापस चाहिये। खुदा ने चाहा तो वह वापस मिल जायगी। तुम मेहरोत्रा को तकलीफ पहुँचाने का खयाल दिल से निकाल दो। इस तरह नियत में खोटा पैदा हो जाती है। हाँ, तो तुमने सारे खर्चे बता दिये हैं अपने मालिक को?”

खुदावरखश ने कहा—“जी नहीं, अब आप ही बतलादे।”

मुल्लानी जी ने कहा—“मैं क्या बतलाऊँ। क्या कुछ मुझको लेना है? चालीस दिन तक मुझे रोजाना नदी के किनारे जाना होगा और आधी रात के बाद वापसी हुआ करेगी। लेहाजा चालीस दिन तक इसके का किराया। आने-जाने का चालीस रुपया लेती है मेरी इसके वाली। वहाँ मैं रोजाना सवा सेर दूध पढ़-पढ़ कर पीती हूँ। उसकी क्रीमत का अन्दाजा करलो। और इस ख़ास मामले में चूँकि दूसरा आदमी मुसलमान नहीं बल्कि हिन्दू है, इसलिये मुझे कुछ रुपया नदी में भी डालना होगा जिसमें कि अगर उधर से कुछ जादू हुआ तो उसका असर भी जाता रहे। इन सब चीजों में लगभग सवा सौ रुपये का खर्च होगा और बाद में तुम्हारे मालिक को जो तौफ़ीक़ हो मुझे भिजवा दें। गरीब औरतों में तक्रसोम कर दूँगी, अपनी ख़ास निगरानी में।”

हमने खुदाबख्श को इशारे से बुलाकर कहा—“हटाओ भी इस भगड़े को। मैं रुपये के खयाल से नहीं कह रहा हूँ बल्कि कुछ ऐसा महसूस हो रहा है, जैसे अपनी किस्मत के खिलाफ मुक़दमा दायर किया जा रहा है।”

खुदाबख्श ने कहा—“हुज़ूर, आप मेरे कहने से अमल पढ़वाकर तो देखें। आखिर इसमें हर्ज हो क्या है। मंगे लड़के के लिये जो अमल पढ़ा था उसमें कोई चार ऊपर पचास रुपये लगे थे। मैंने अपनी गरीबी के बावजूद कहीं न कहीं से इन्तज़ाम कर दिया था। इस मामले में वह कहती हैं कि नदी में भी कुछ रुपया डालना है। दूसरे हुज़ूर के लिये, खुदा न करे, कोई दिक्कत तो है नहीं, आप तो बस रुपये दे दीजिये, फिर आपसे कोई मतलब नहीं। फिर क़तेह ही क़तेह है।”

हमने फिर कुछ गौर करना शुरू कर दिया कि इतने में मुस्लानी जी ने खुदाबख्श को पुकार कर कहा—“मियाँ, खुदाबख्श! अपने मालिक से कह दो कि रुपये का मामला तो यह है कि जितना गुड़ डालेंगे उतना ही मीठा पायेंगे। मैं तो इनकी बेगम को आज ही बुला सकती हूँ, मगर मैं जानती हूँ कि हजार-डेढ़ हजार की रक़म इसके लिये निकाली न जा सकेगी इसलिये मैंने यह कम से कम रक़म बता दी है। अब इसमें किसी कमी की गुंजायश नहीं है। और न मुझे इसमें से कुछ लेना है।

खुदाबख्श ने कहा—“अरे भला आप क्या लेंगी। इस तरह लेती होतीं तो आज रुपये रखने की जगह न होती।”

हमने खुदाबख्श से कहा—“अच्छा, मेरा सन्दुक्चा उठा लाओ।”

खुदाबख्श दौड़ कर सन्दुक्चा उठा लाया और हमने यह बला टालने के लिये एक सौ पचीस रुपये निकाल कर खुदाबख्श के हाथ

खुदानखवास्ता]

में गिन दिये कि लो मुल्लानी जी को देकर रुख्सत कर दो । कहीं बेगम न आ जायें कि और मुसीबत आये ।

खुदा बन्श ने वह रुपया मुल्लानी जी के हवाले कर दिया जिसको अच्छी तरह गिन कर मुल्लानी जी ने कहा—“अब मैं इन्शाअल्ला आज सारे इन्तजाम पूरे करके कल से अमल शुरू कर दूँगी । लेकिन इस बीच में तुम्हारे मालिक गोश्त, अंडा, मछली, प्याज और लहसुन बिल्कुल न खायें । और हो सकता है उनको कुछ डरावने खाब दिखाई दें । इसलिये यह तावीज उनके तकिये में रख दो । और उनसे कह दो कि रात को सोते वक़्त तीन बार यह कह लिया करें—भाग सिड़ी दीवाना आया, भाग सिड़ी दीवाना आया, भाग सिड़ी दीवाना आया ।”

खुदा बन्श ने यह अमल भी याद कर लिया और मुल्लानी जी से कहा कि मैं खुद यह पढ़ कर फूँक दिया करूँगा ।

मुल्लानी जी ने इस पर कोई ज़ोर न दिया कि यह अमल खुद हमको ही पढ़ना चाहिये बल्कि हिदायत फ़रमाई कि कोई भी पढ़ कर फूँक दिया करे । बस इतना ही काफ़ी है ।

मुल्लानी जी तो उधर रवाना हो गईं और इधर हम अजीब कशमकश में पड़ गये । दिमाग़ कहता था कि यह क्या अंधविश्वास है और दिल कहता था कि मेहरोत्रा के फंदे से बेगम को छुड़ाने के लिये सब कुछ जायज़ है ।

— — —

अट्टारह

औरतों के दिल पर सौत के सिलसिले में क्या बीतती होगी इसका कुछ न कुछ अन्दाज़ा हमको भी अपनी अकथनीय तकलीफ़ से हो रहा था । किसी काम में जी न लगता था । हर वक़्त जैसे एक उलझन सी रहती थी । दिन रात जैसे अंगारों पर लोटा करते थे । जी चाहता था कि हमारे पर लग जायें और हम इस मुल्क से फिर अपने उसी हिन्दुस्तान की तरफ़ उड़ जायें जहाँ से विरक्त होकर यहाँ आ पैसे थे । मगर यहाँ की ज़मीन हिन्दुस्तान की ज़मीन से ज्यादा सख़्त थी और यहाँ का आसमान हिन्दुस्तान के आसमान से भी ज्यादा दूर था । आख़िर किसी न किसी तरह जमाल बहन अपनी जाँच का नतीजा सुनाने के लिए आई और हम अपनी किस्मत का फ़ैसला सुनने के लिए तैयार हो गये । सिद्दीक़ भाई ने आते ही कहा—“मैं उनको अन्दर ही बुलाये लेता हूँ । तुम खुद सारे हालात सुन लेना ।”

हम पर्दे में हट गये तो सिद्दीक़ भाई ने जमाल बहन को अन्दर बुला लिया । उन्होंने आते ही कहा—“तसलीम अर्ज़ करती हूँ भाई साहब ।”

अब हम भी आवाज़ का पर्दा जमाल बहन से न करते थे इसलिये हमने कहा—“आदाब अर्ज़ बहन ! कहिये आपने क्या सुराग़ लगाया मेरी चोर का ?”

जमाल बहन ने कहा—“साहब, अजीब हालात हैं वहाँ के। मैंने बड़ी चालाकियों से सही हालात मालूम करने की कोशिश की। मगर अब तक हालत यह है कि न मैं आपके शक को गलत कह सकती हूँ, न मैं यह कह सकती हूँ कि सईदा ने सचमुच मेहरोत्रा के जाल में फँसकर आपसे बेवफ़ाई की है।”

हमने कहा—“यह क्या बात हुई बहन? आप मेरा दिल रखने के लिये कोई बात छिपाने की कोशिश न कीजिये। इसलिये कि मैं तो इस सिलसिले में हर बुरी से बुरी खबर सुनने के लिये भी तैयार हूँ। मेरे दिल पर जितना असर होना चाहिये वह तो हो ही चुका अब इससे ज्यादा क्या होगा?”

जमाल बहन ने कहा—“नहीं, मैं कोई बात छिपा नहीं रही हूँ बल्कि यह बिलकुल सच कह रही हूँ। वहाँ का हाल यह है कि मेहरोत्रा की श्रीमती जी को दिन-रात होश ही नहीं रहता। बस वह कचेहरी तो किसी न किसी तरह चली जाती है। वहाँ से आई, नहाई धोई, कपड़े बदले और कलब चलो गईं। अब कलब में वह हैं और शराब। यहाँ तक कि क़रीब-क़रीब रोज़ रात को कभी एक बजे, कभी दो बजे, कलब की एकाध मेड उनको कोठी पहुँचाती है, और वह नशे में चूर बिस्तर पर डाल दी जाती हैं। तन-बदन का होश नहीं रहता उनको। सारी रात इसी तरह पीकर, उगल कर, नाच कर, कूद कर बिताती हैं और सुबह को उस वक़्त जागती हैं जब ख़ुमार चढ़ा होता है। नहाती हैं और कचेहरी पहुँच जाती हैं। शराब कमबख़्त ने न घर का रक्खा न बाहर का। न उसको पति का होश है न किसी का। उधर उनके पति महाराज का यह हाल है कि वह अपना इधर-उधर दिल बहलाना चाहते हैं। आदमी हैं मनचले, दूसरे पत्नी उनके लिए अपरिचित सी होकर रह गई है। इसी

कारण वह भी अपनी सभा गर्म रखते हैं। इसमें शक नहीं कि सईदा से उनको बेहद लगाव है लेकिन मैं आपसे सच कहती हूँ कि अब तक सईदा ने शायद उनको लिफ्ट नहीं दी है।”

हमने कहा—“क्या बातें करती हैं आप बहन, यह ‘लिफ्ट’ देना नहीं है तो और क्या है कि उनके तोहफे कुबूल करती हैं, उनके खत वसूल करती हैं, उनके यहाँ आती जाती रहती हैं। यह सब लिफ्ट देना नहीं तो और क्या है ?”

जमाल बहन ने कहा — “यह सब कुछ तो है, मगर मेरे पास इस बात का लिखित सबूत है कि सईदा उनको इस रंग में देखना नहीं चाहती जिस रंग में वह अपने को सईदा के सामने पेश कर रहे हैं। देखिये, सईदा का एक खत मैंने रास्ते में ही उड़ा लिया है।

सिद्दीक भाई ने जमाल बहन से वह खत लेकर हमको दिया और हमने पढ़ना शुरू किया : —

“अच्छे देवर जी, नमस्ते !

मैं तीन चार दिन से क्यों रायब हूँ, मैंने आपके तीन परचों का जवाब क्यों नहीं दिया, इसको शायद मुझसे ज्यादा आप खुद जानते होंगे। आपकी पत्नी सरला मेरी सहेली है। वही सहेली जिसको बहन का दर्जा प्राप्त है। और इस रिश्ते से आप सिर्फ मेरे देवर हो सकते हैं, इससे ज्यादा और कुछ नहीं मैंने कई बार आपको ज्ञानी और लिख कर समझाया है और आज फिर यह बात बताने की कोशिश करती हूँ कि मेरे नज़दीक इन्सानियत का सबसे बड़ा पाप यही है कि किसी के विश्वास को टूटी बनाकर उसकी आड़ में शिकार खेला जाय। दूसरे, आपको यह मालूम है कि मैं विवाहिता हूँ। मैं खुद भी किसी की विश्वासपात्र हूँ। हो सकता है कि आपके लिये

खुदानख्वास्ता]

विश्वासघात कोई बुरी बात न हो, लेकिन मैं उस पाप की कल्पना से ही काँप जाती हूँ। मेरा बेजबान शौहर मेरी मुहब्बत और मेरी बफ़ा का उम्मीदवार इसलिये नहीं है कि मैं दूसरों के शौहर पर मुहब्बत के खज़ाने लुटाती फिरूँ और उसकी अमानत में खयानत करूँ। आपने जो कुछ मेरी क़दरदानी फ़रमाई है, उसका शुक्रिया अदा करती हूँ। काश, यह सारी क़दरदानी और स्नेहानिस्वार्थ होती। लेकिन आपने मुझको दोहरे पाप का मार्ग दिखाया है। एक तरफ़ तो मैं अपनी सहेली सरला की इज़्जत लूटूँ, दूसरी तरफ़ अपने शौहर की अमानत में खयानत करूँ। मैंने इस सिलसिले में अपने को जाँचा, परखा, सारे विश्वासों को सामने से हटाकर देखा लेकिन किसी भी हैसियत से मैं आपकी इन इच्छाओं को पूरा करने के लिये तैयार नहीं हूँ। आपने उस दिन मेरा हाथ पकड़कर मुझसे वचन लेना चाहा और खुद बफ़ादारी की क़सम खाई, लेकिन आपको यह सोचना चाहिये था कि बेवफ़ा बफ़ा का वचन दे ही नहीं सकते। आपकी बेवफ़ाई तो सिद्ध है कि आप सरला से, बेवफ़ाई कर रहे हैं। और अगर मैं भी अपने पति से बेवफ़ाई करके, बफ़ा करने का वचन दूँ तो बफ़ा के नाम पर धिक्कार है।

मैं आपको पसन्द करती हूँ। आपकी प्रतिभा और बुद्धि की प्रशंसक हूँ। आपकी संगति में अपने सारे दुःख और चिन्ताओं को भूल जाती हूँ। बेशक मैंने यह भी कहा है कि सरला बदनसीब है जो इस साकार शराब को छोड़ कर उस शराब में मस्त है जिसका नशा चढ़ता उतरता रहता है। लेकिन इसके मानी यह तो नहीं हो सकते कि मैंने आपको अपने लिए पसन्द कर लिया था। बल्कि मैं तो आपकी निगाहों का मतलब भी असें तक न समझ सकी। आपने जब मुझको समझाया तो मैं काँप उठी। और अब मैं हैरान हूँ कि

आपको आखिर किस तरह समझाऊँ। आप मुझको प्रिय हैं और बहुत ही प्रिय हैं। आपको छोड़ना नहीं चाहती, लेकिन यह भी चाहती हूँ कि आप मुझे छोड़ने पर मजबूर न करें। मुझे उम्मीद है कि आज आप मुझसे वायदा करने में मेरी खातिर अपने दिल पर पत्थर रख लेंगे कि आगे आप हमेशा मुझको अपनी बहन समझकर मिलेंगे नहीं तो मैं अपने दिल पर पत्थर रखकर आपका खयाल छोड़ने की कोशिश करूँगी। जानती हूँ कि मुश्किल से कामियाबी होगी लेकिन मौत से बचने के लिये परहेज के तौर पर अच्छी से अच्छी चीज़ भी रोगिनी को छोड़ना पड़ती है।

आपकी शुभाचिन्तक.

—सईदा

इस खत को पढ़कर हमारी आँखें खुल गईं। मालूम यह हुआ जैसे सूखे दानों पर पानी पड़ गया। मेरी सईदा मेरी नज़रों में उतनी ही ऊपर उठ गई जितना उसको होना चाहिये था। मुझे क्या पता था कि मेरी बीबी ऐसी नेक और पाकवाज़ है। दिल ही दिल में हमने अपने को धिक्कारा कि ऐसी पाकवाज़ बीबी के बारे में इस तरह के विचार हमारे मन में उत्पन्न हुए। लेकिन कहीं ऐसा तो नहीं कि जमाल बहन ने हमारा दिल रखने को यह खत खुद लिख दिया हो। लेकिन लिखावट सईदा की थी। बिलकुल सईदा की। लेकिन अगर यह खत सचमुच सईदा का ही है तो ऐसे उपयोगी खत को जमाल बहन ने रास्ते से ही क्यों उड़वा लिया। मेहराबा तक जाने क्यों न दिया? कहीं ऐसा तो नहीं कि इस मामले में जमाल बहन भी सईदा की भेदी हों और सईदा से कहकर यह खत लिखाया हो कि हमको भी इत्मीनान हो जाय और सईदा के लिए रास्ता भी साफ़ रहे। सचमुच इन औरतों का क्या भरोसा। क्या

खुदानख्वास्ता]

पता कि खुद जमाल बहन का भी इसी तरह का कोई मामला हो जिसका भेद बेगम को मालूम हो इसीलिए बेगम के भेद छिपाये रखना भी इनका फर्ज हो गया हो। अगर ऐसी कोई बात नहीं है तो फिर जमाल बहन के चेहरे पर यह फिक्र और परेशानी क्यों है? ऐसे खत के बाद तो उनका चेहरा ख़ुश से खिल उठना चाहिए था।

हम इन्हीं भिन्न-भिन्न विचारों में डूबे थे कि सदीक भाई ने कहा—
“इस खत का देखकर तो इत्मीनान हा गया? मरे जाते थे बेचारे जोरू के लिए।”

हमने रस्मी तौर पर मुस्कराकर कहा “मेरी समझ में तो कुछ आता नहीं। अगर तुम इसका सन्तोषजनक समझते हो तो मुझे भी सन्तोष हो जायेगा।”

जमाल बहन ने कहा “सुनिये साहब, साफ़ बात यह है कि खुद मुझे इस खत के बावजूद इत्मीनान नहीं है। इस खत से सिर्फ़ इतना ही पता चलता है कि सईदा ने ईमानदारी के साथ बचने की पूरी कोशिश की है। मगर इस खत की तारीख़ देखिये। यह आज से तीन महीने तेरह दिन पहले का लिखा है और तब से अब तक के हालात कुछ बहुत ज्यादा इस खत के अनुकूल नहीं हैं।”

हमने कहा - “यह खत मेहरोत्रा तक आपने पहुँचने ही न दिया। आप कहती हैं कि रास्ते ही से उड़ा लिया था।”

जमाल बहन ने कहा— “जो नहीं! मैं ऐसी कच्ची गोलियाँ बहुत कम खेलती हूँ। यह खत मैंने पहले रास्ते से ही उड़वा कर अच्छी तरह पड़ा। और हालाँकि मेरा दिल बहुत चाहा कि मैं इसे आपको दिखा दूँ, लेकिन इससे भी ज़रूरी यह मालूम हुआ कि मेहरोत्रा तक जल्द से जल्द यह खत पहुँच जाय, इसलिए मैंने बिल्कुल ऐसे ही यह खत उन तक

पहुँचवा भी दिया और जिस जरिये से पहुँचवाया था उसी जरिये से फिर उसे गायब करा दिया ताकि आपको दिखा दूँ ।”

हमने कहा—“अच्छा तो वह हालात क्या हैं जिनके बारे में आप यह कह रही थीं कि वह इस खत की तारीख (समर्थन) में नहीं है ।”

जमाल बहन ने कहा — ‘वह हाजान यह हैं कि जब एक मर्द के बारे में यह मालूम हो चुका कि वह ऐसा आपे से बाहर है कि अपनी बीवी की नाक कटाने को भी तैयार है, जिसने मर्द होकर सारी शर्म-हया को तिलांजलि देकर खुद मुहब्बत की भीख मांगी हो, बल्कि मुहब्बत क्यों कहिये जिसने खुद पाप के लिये दावत दी हो उसमें आखिर फिर मिलने की ज़रूरत ही क्या थी । मगर वह रोज़ जाती हैं । आम तौर से रात का खाना वहीं खाती हैं । जब सरला क्लब में होती है तब एक ही कमरे में यह होती है और मेहरोत्रा होते हैं यह रंग कुछ अच्छे तो नहीं कहे जा सकते ।”

सिद्दीक भाई ने कहा—“हो सकता है इस खत के बाद उसने भी सुधार कर लिया हो और अब दोनों सचमुच भाई-बहन की तरह मिलते हों ।”

जमाल बहन ने कहा—“खैर, मिलते हों या न मिलते हों, लेकिन आप किसी को इस तरह की बहन बनाकर मिल सकते हैं ?”

सिद्दीक भाई ने कुछ शर्माकर कहा “खुदा न करे कि मैं मिलूँ ।”

जमाल बहन ने क्लायल करते हुए कहा —“क्यों, आखिर क्यों ? अगर यह कोई बुरी बात नहीं है तो फिर इस ‘खुदा न करे’ के क्या मानी हुए ?”

सिद्दीक भाई ने कहा—“तो फिर क्या यह खत भूठा था ?”

जमाल बहन ने कहा —“नहीं, यह खत बिलकुल सच्चा था । एक

एक लफ़्ज़ से सच्चाई बरस रही है। मगर आखिर कब तक? क्या यह मुमकिन नहीं है कि इनकी सच्चाई उसकी धूर्तता के आगे हार गई हो? गुनाह से बचने के लिये बहुत बड़े दिल गुर्दे की ज़रूरत है। और मैं यह भी नहीं कह सकता कि सचमुच ये मुलाक़ातें पाप भरी ही हैं। बहुत मुमकिन है कि दोनों में बड़ा ही पाक-पवित्र प्रेम हो। मगर मैं तो कहती हूँ कि यह तरीक़ा ग़लत है। देखने वालियों नाम धरती हैं, आम-तौर पर अब यह मशहूर हो रहा है कि कांतवालिनी साहबा और मेहरोत्रा के बीच कुछ ढाल में काला ज़रूर है। बद अच्छा बदनाम बुरा। मैं तो दर असल ऐस मर्द की सोहबत हो ग़लत समझती हूँ जो इतना बद-हवास हो चुका हो।

हमने कहा—“तो फिर आपने खाक तहक़ीक़ात की है कि यह भी मुमकिन है और वह भी हो सकता है अगर आपको सच-सच कुछ मालूम हो चुका है तो मुझे बता दीजिये। मेरी तरफ़ से आप बिल-कुल बेफ़िक्र रहिये मैंने अपना दिल पत्थर का कर लिया है।”

जमाल बहन ने कहा—“मेरी जाँच अभी दर असल ख़त्म नहीं हुई है। लेकिन बहुत ज़ल्द मुझको असली हाल मालूम हो जायेगा। इसलिये कि मैंने अपना नौकर अल्लाहदिया सबजिन के यहाँ रखवा दिया है। ज़रा उसका असर बढ़ने दीजिये, फिर वह सारी ख़बरें रोज़ मुझे पहुँचाता रहेगा। अभी इस ख़त को ही बहुत समझिये। कम से कम आपको यह इत्मीनान तो होना ही चाहिये कि आपकी बेगम ने बचाव में कोई कमी नहीं की है।”

जमाल बहन इसी तरह समझा बुझा कर हमको अजीब असमजस में डाल कर चली गई और हम बराबर सोचते रहे कि सचमुच अगर ख़त सच्चा है तो फिर इस मेल-जोल के क्या मानी। और फिर खुद ही यह साचते कि जो औरत ऐसा ज़बरदस्त ख़त लिखेगी वह बहक कैसे सकती है।

उन्नीस

विधान सभा ने आखिर बहुमत से फख्रुन्निसा बेगम के मुक्ताबिले में मोहिनी देवी को राष्ट्रनेत्री चुन लिया। चुनाव में हर जगह मर्दराज दल को सफलता मिली। केवल एक चौथाई दूसरी पार्टी की स्त्रियाँ सदस्या चुनी गईं। स्वयं फख्रुन्निसा बेगम इसलिये निश्चित हो गई थीं कि उनके मुक्ताबिले के लिये मर्दराज दल ने किसी को खड़ा न किया था। सारांश यह कि अब विधान सभा में मर्दराज दल का प्रबल बहुमत था। पुरुष पर्दा रक्षक दल विरोधी दल था जरूर लेकिन बेहद कमजोर, न होने के बराबर यह निश्चित था कि मर्दराज दल जो चाहेगा वह होकर रहेगा। जिस दिन विधान सभा पर मूँछ वाला भंडा लहराया गया उसी दिन से सारे देश की हवा बदल गई थी। जो पहले अपराधिन थे उनके हाथ में अब शासन की भागडोर थी। और नाजुकिस्तान हर इन्कलाब के लिये बिल्कुल तैयार था। चुनावों के लिये ही हुआ कि जिस वक्त जलीकुन्निसा पर्दे के खलाफ़ कानून का मसौदा लेकर उठी तो विरोधी दल ने लाख-लाख शोर मचाया, सैकड़ों संशोधन पेश किये 'वाक आउट' हुए लेकिन आखिरकार चार सौ सैंतीस मत पक्ष में और दो सौ तेरह विपक्ष में मत आने पर यह प्रस्ताव इस रूप में पास हो गया कि :-

“नाजुकिस्तान के समस्त पुरुषों पर कानूनन पर्दा करने की जो पाबन्दी लागू हुई थी, वह उठाई जाती है और अब पर्दा करना या न करना

खुदानुवाता]

उनकी अपनी इच्छा पर निर्भर करेगा। सरकार को इससे कोई मतलब न होगा कि मर्द पर्दा कर रहे हैं या बेपर्दा घूम रहे हैं। न कानूनन उनको बेपर्दा होने पर मजबूर किया जाता है, न कानून उनको पर्दा करने के लिये मजबूर करता है। ज़ाबता फौजदारी के कानून १३६ अ व प और कानून क्राबिल दस्तन्दाजी पुलिस ११७ क ख ग जिनके अन्तर्गत पर्दा त्यागने वाले मर्दों को सौ से पाँच सौ रुपये तक जुर्माना या तीन माह से एक साल तक की कैद वामशककृत या दोनों की सज़ा हो सकती थी, आज से बिलकुल रद्द समझे जायेंगे।”

इस कानून की मंजूरी के बाद मर्दराज दल के समर्थक अखबारों ने बड़े-बड़े अग्रलेख लिखे। खलीकुन्निसा की धूम मचाई और विरोधी अखबारों ने बाले बार्डरो में इस खबर को छापकर शोक मनाया सारे देश में जलसे हुए। लेकिन सभी स्त्रियाँ तो समर्थक थीं नहीं कि आम जश्न मनाया जाता। कहीं विरोध हुआ और कहीं समर्थन। लेकिन उस समय वायुमंडल यह था कि कानूनों पाबंदी तो ख़ैर उठ गई है लेकिन आम तौर पर मर्दों की ओर से यह कहा जा रहा था कि वे खुद अपनी घुट्टी में पड़ी हुई आदत का मुश्किल ही से छोड़ेंगे। लेकिन फिर भी बहुत से घरानों के मर्दों ने बुर्का उतार फेंका और अपनी-अपनी औरतों के साथ निकल खड़े हुए। बाहर सिनेमा घरों में अब औरतों के बीच बेपर्दा मर्द नज़र आने लगे, मगर बहुत ही कम, इक्का दुक्का। अलबत्ता हमारी भविष्यवाणी बिलकुल सच निकली कि राधानगर में जिस मर्द ने सबसे पहले पर्दा छोड़ा वह मेहरोत्रा था। उस कमबख्त को तो बहाना मिलना चाहिये था पर्दा छोड़ने का। एक दिन सिद्दीक भाई ने हमसे भी कहा—

“क्यों, निकलते हो पर्दे के बाहर?”

हमने कहा—“हम तो निकला ही करते थे बाहर, हमारे लिये बेपर्दागी नहीं, बल्कि पर्दा नई चीज़ है। हाँ, तुम अपनी कहो।”

सिद्दीक भाई ने कहा—“भाई सच पूछो तो मुझसे निकला ही नहीं जाता। मुझे तो घर के बाहर निकाल कर देख लो। या तो मैं अकड़ा हुआ खड़ा रहूँगा, लेकिन जहाँ कोई औरत सामने आई तो या तो मैं बैठ जाऊँगा गड़बड़ा कर या गिर पड़ूँगा। समझ में नहीं आता कि मर्दों से बाहर निकला कैसे जायगा घर के बाहर।”

हमने कहा—“आखिर निकलने वाले निकले ही घर के बाहर। मेहरोत्रा को देख लो न।”

सिद्दीक भाई ने बुरा मानकर कहा—“उस कमबख्त का क्या है। निर्लज्ज, बेशर्म ! उसे मर्द कौन कहता है। हजार बेशर्म मरी हूँगी तो यह मर्द पैदा हुआ होगा। उस कमबख्त ने तो श्री के चिराग जलाये होंगे। बिज्जी के भागों छींका दूया।”

हमने कहा—“सुना है कि अब तो तुम्हारी बहन साहब के साथ सिनेमा भी तशरीफ़ ले जाते हैं बेपर्दा।”

सिद्दीक भाई ने कहा—“कौन मेहरोत्रा जाना है सईदा बहन के साथ ?”

हमने कहा—“हाँ हाँ, कल ही तो मुझको खबर मिली है। मैं तो यह कहता हूँ कि अब खुलमखुला सैर सपाटे भी होने लगे।”

सिद्दीक भाई ने कहा—“मगर एक बात है अल्लाहदिया ने जो रिपोर्ट पहुँचाई है उससे तो यह मालूम होता है कि सईदा बहन को मेहरोत्रा बड़े आदर से बहन जी कहता है और वह भाई साहब कहती हैं। इसके आलावा अल्लाहदिया ने यह भी बताया है कि कभी उन दोनों को अकेले-दुकेले, अंधेरे-उजियाले भी किसी आपत्तिजनक अवस्था में नहीं

देखा गया। मगर अबतक हमारी बेगम साहब को इत्मीनान नहीं है। वह बराबर अल्लाहदिया को यही समझा रही हैं कि तुम निगरानी में कंतादी न करना।”

हमने कहा—“कुछ समझ में नहीं आता क्या बात है। अल्लाह-दिया का यह बयान, वह खत और बेगम की फितरत (प्रकृति) का जो कुछ अन्दाज़ा खुद मुझको है, उन सारी बातों से हर शक खतम हो जाता है। मगर जमाल बदन के कथनानुसार, फिर आखिर उस कमचखन से मिलने की ज़रूरत ही क्या है। और यह कौन सी नेकनामी की बात है कि उस बदनाम मर्द के साथ या खुल्लमखुल्ला फिरा जाय।”

हम यह बात कर ही रहे थे कि बेगम ने ज़्यादा पर आवाज़ दी और सिद्दीक भाई एक झपाके के साथ कमरे में घुस गये। हमने बेगम को बुलाया। बेगम ने आते ही कहा—“यानी अब भी भाई साहब पर्दा करते हैं। जैसे मैं इनके टके हुए लाल तोड़ ही तो लूँगी। बेपर्दागी का कानून तक बन चुका है और इनका पर्दा है कि किसी तरह खत्म ही नहीं होता।”

सिद्दीक भाई ने अन्दर ही से कहा—“बहन, आप मुझे देखकर क्या करेंगी। आप की निगाहें सेंकने के लिये अब तो बहुत से मर्द बाहर निकल आये होंगे।”

बेगम ने कहा—“कुछ न पूछिये क्या हाल है। मैं तो हर वक्त अपने बरखास्त होने के हुक्म का इन्तज़ार कर रही हूँ।”

सिद्दीक भाई ने घबराकर कहा—‘वह क्यों?’

बेगम ने कहा—“मर्दराज दल की हुक्मत भला मुझको रहने देगी? खलीकुन्निसा का बस चले तो कच्ची चबा जाय मुझे। मर्द राजिस्टों से

जेलें मैंने भरीं, डंडे बाजियाँ मैंने कीं, गोलियाँ मैंने चलाई । मैं तो उनकी आँखों में काँटे की तरह खटक रही हूँ ।”

सिद्दीक भाई ने कहा — “खुश न करे कि ऐसा हो । लेकिन मर्दराज पार्टी आखिर किस-किस से बदले लेगी ? आपने कोई अपनी मर्जों से तो यह सब किया नहीं । सरकार जो हुक्म देती थी वह आप करती थीं । दूसरे खलीकुन्निसा का आत का वयान आपने अखबार में नहीं पढ़ा ?”

बेगम ने कहा — “नहीं, मैंने अखबार नहीं पढ़ा ?”

हमने कहा — “यह क्या है ।”

बेगम ने कहा — “मुनाओ तो जग पढ़कर क्या फरमाती हैं ।”

हमने अखबार पढ़ना शुरू किया :—

खलीकुन्निसा एम० ए० का महत्वपूर्ण वक्तव्य

मुझ तक यह सूचनाएँ पहुँचाई गई हैं और करीने से ये सूचनाएँ सही मालूम होती हैं कि मुल्क में जहाँ मर्दराज पार्टी के सत्तारूढ़ होने से खुशी की एक लहर दौड़ गई है वहाँ एक वर्ग ऐसा भी है जो इन आशंकाओं से परेशान है कि शायद मर्दराज दल और उनसे उन ज्यादातियाँ और उन जुल्मों के बदले गिन-गिन कर लेगी जो सरकार के इशारे पर सरकार की पिछुआ ने मर्दराज दल पर किये हैं । मर्दराज दल के लोगों को अपमानित करके जेलों में भरा गया है, चोरी और डाके डालने वालियों का सा व्यवहार देश और जानि की सेविकाओं के साथ किया गया है । उनको साधारण अपराधियों के साथ रक्खा गया है, उनको मारा पीटा गया, उन पर गोलियाँ बरसाई गई और उनको हर तरह का आर्थिक नुकसान भी इस तरह पहुँचाया गया कि उनकी ज़मीनें ज़ब्त हुईं, उनके खेतों में आग लगाई गई सारांश यह कि उनको तरह-तरह से आजमाया गया लेकिन वह एक भारी चोटान की तरह अपने उद्देश्य पर डटी रही ।

यह सब कुछ सही है लेकिन यह आशंका कि अब मर्दराज दल इन अत्याचारों के बगले उन सबमे लेगी जिनके हाथों ये अत्याचार हुए तो यह शकत है और एक भूटी आशंका के सिवाय कुछ और नहीं। हमको पता है कि ये सब तो एक मशीन के कल पुर्जे हैं। जिनको चलाने वाली जिस तरह चलायेगी उसी तरह चलेंगे। मुझे सारे देश का हाल तो ठीक से नहीं मालूम लेकिन राधानगर का व्यक्तिगत अनुभव है कि जिस वक्त खानम बहादुरनी सईदा खातून कोतवालिनी मर्दराज पार्टी पर गोली चलाने आईं, सब से पहले वह मेरे पास आईं थीं और मुझमे निजी तौर पर कह दिया था कि मुझे गोली चला कर भीड़ को तितर बितर करने का हुक्म मिल चुका है। अगर आप भीड़ को शान्तिपूर्ण ढंग से हटा दें तो मैं अपनी मज्जा के खिलाफ गोली चलाने से बच जाऊँगी। लेकिन मैंने उनसे कह दिया था कि आपको जो हुक्म मिला है उसे पूरा कीजिये। मैं इस भीड़ को, जो शेरनियों की भीड़ है, कायरता की शिक्षा नहीं दे सकती। राधानगर में गोली चली और खानम बहादुरनी सईदा खातून के नेतृत्व में चली। लेकिन मैं जानती हूँ कि उसकी जिम्मेदारी उन पर नहीं है। इसी तरह मैं समस्त जिम्मेदार अधिकारियों को विश्वास दिलाती हूँ कि उनके व्यवहार उनकी अपनी इच्छा पर निर्भर न थे। और इसीलिए हमें व्यक्तिगत रूप से उनसे कोई बैर नहीं और न हमारे मन में किसी प्रतिशोध की भावना है। जिस राज्य और जिस व्यवस्था के इशारे पर यह सब कुछ हो रहा था वह राज्य और वह व्यवस्था हमने कुचल कर रख दी है। अब हम वही मिसालें पेश न करेंगी जिनका सुधार हम करना चाहती थीं और चाहती हैं।”

बेगम ने खुश होकर कहा—“सचमुच इस पार्टी को ताकत में आना भी चाहिए था। बड़ी कुरबानियाँ की हैं ”

हमने कहा—‘खुश हो गईं’ न उसके एक ही बयान पर और अभी बरखास्तगी के हुक्म का इन्तज़ार हो रहा था।’

बेगम ने कहा—“खैर, वह इन्तज़ार तो मुझे रहेगा। इसलिए कि यह बयान, ये लेख और भाषण तो सब हाथी के वह दांत होते हैं जो हाथी दिखाता है। चबाने वाले दांतों से खुश बचाये।”

सिद्दीक़ भाई ने कहा—“खैर, यह राजनीतिक चाल सही, तो भी अब आपका नाम लेकर मैं तो यह समझता हूँ कि वह ऐसी ही गधी हांगी जो आपको नुक़सान पहुँचाये ”

हमने कहा—“और आप खुद भी तो बड़ी चालाक हैं। आख़िर यह क्या सूझी थी कि गोली चलाने गईं और पहले उनसे सलाह कर ली।”

बेगम ने कहा—“सचमुच मेरा दिल कुछ धुक-धुक कर रहा था और गोली चलाने के खयाल से ही रोंगटे खड़े हुए जाते थे। एक बोटल पूरी बेदमशक पी ली थी मैंने गोली चलवाने के बाद, तब कहीं हवास ठीक़ हुए। मैंने तो सचमुच ख़लीकुन्निसा के आगे हाथ तक जोड़े कि इतनी बेगुनह औरतों का खून मेरी गर्दन पर न डालिये, इनको हटा दीजिये, मगर वह किसी तरह न मानी तो आख़िर मैं करती भा तो क्या करती ?”

सिद्दीक़ भाई ने कहा—“बहरहाल ख़लीकुन्निसा के इस बयान से यही मालूम होता है कि वह आपसे खुश हैं।”

बेगम ने मुँह बना कर कहा ‘जी हाँ मगर इसका मतलब यह भी हो सकता है कि चूँकि वह मुझको नुक़सान पहुँचाने वाली हैं इस लिए अपने लिए इस बयान से रास्ता साफ़ किया है। खैर देखा जायगा। इस वक़्त तो भूख के मारे बुरा हाल है। जब पेट भर जायगा तब कुछ मुझेगी।”

और हमने जल्दी से उठ कर बेगम के लिए खाने की मेज़ सजा दी।

बोस

शौकिया को खुदा की मेहरबानी से छुटा साल खत्म होकर सातवाँ साल शुरू हो रहा था कि एक दिन बेगम ने हमसे कहा कि शौकिया का कनछेदन कर दो। हम इसको मामूली सी बात समझकर चुप हो रहे लेकिन फिर दूसरे दिन बेगम ने यही जिक्र छोड़ा कि मैंने तुमसे छिया कर उस रुपये के अलावा, जो तुम्हें मालूम है, शौकिया के कनछेदन के लिए पाँच-छः हजार रुपया जमा किया है और मैं सोचनी हूँ कि अब तुरन्त शौकिया का कनछेदन कर दिया जाय। अब तो हमको सचमुच ताज्जुब हुआ कि कनछेदन भी कोई ऐसा संस्कार है जिस पर पाँच-छः हजार रुपया खर्च किया जाय। बेगम ने हमको बताया कि नाजुकिस्तान में शादी के बाद जिस संस्कार में सबसे ज्यादा धूम मनाई जाती है वह कनछेदन ही है। गरीब से गरीब औरत अपने बान्धवों के कनछेदन पर जी खोल कर खर्च करती हैं और यहाँ इस संस्कार को बड़ा महत्व प्राप्त है। लड़कों का खतना या मूँडन यहाँ जितना चुपचुपाते और खामोशी से होता है उतना ही धूम-धड़का यहाँ लड़की के कनछेदन में किया जाता है। बेगम ने सलाह दी कि तुम अपने सिद्दीक भाई से पूछ कर सारा सामान ठीक करा लो तो मैं कोई तारीख निश्चित कर दूँ।

हमने दूसरे ही दिन सिद्दीक भाई को बुला लिया और उनसे सलाह करके ज़रूरी सामान की एक सूची तैयार करके बेगम के सामने पेश कर दी। वह ठहरीं कोतवालिनी, चुटकी बजाते सब सामान पूरा हो गया

और अन्त में यह तय पाया कि अगली पन्द्रह तारीख को यह काम कर दिया जाय। अतएव, दावतनामे छपे, ज़नानी और मर्दानी दावतों के इन्तज़ाम हुए। प्रजा के जोड़ों की तैयारियाँ शुरू हो गईं और आखिर देखते ही देखते वह दिन भी आ पहुँचा जब शौकिया का कनछेदन था।

बाहर ज़नाने में कांतवाली के सारे स्टाफ ने कांतवाली को दुल्हन की तरह सजा दिया। अन्दर मर्दों के लिए सिद्दीक भाई ने बहुत ही अच्छा इन्तज़ाम कर दिया। आवरचिनियाँ लगा दी गईं काम पर। शौकिया को खूब सजा सँवार दिया गया और अब हम और सिद्दीक भाई घर में और बेगम व जमाल बहन बाहर ज़नाने में मेहमाना का स्वागत करने लगे। बाहर सभी हुक्कामनियाँ जमा हो रही थीं। आखिर एक मोटर पर से काली सफेद साड़ी पहने हुए खलीकुन्निसा बेगम भी उतरी। बेगम ने बढ़ कर उनका स्वागत किया और उनको लाकर बीच में एक सोफे पर बैठाया और उनकी गोद में शौकिया को दे दिया। पहले से यही तय था कि सूई पर 'विस्मिल्लाह' वही फूकेंगी। यहाँ का रिवाज यह था कि कनछेदन के मौके पर कोई बुजुर्ग आमतौर पर पहले 'विस्मिल्लाह' पढ़ कर फूँकती थी इसके बाद नाइन या लेडी डाक्टरनी, जो भी हो, कान छेद दिया करती थी। फिर भेंट उपहार, जिनमें ज्यादातर कानों के गहने होते थे, दिये जाते थे। जब सभी निमंत्रित महिलाएँ जमा हो चुकीं तो बेगम ने कहा "मैं ज़रा अन्दर पूछूँ, शायद कोई खास रस्म होत हो। मैं तो यहाँ की रस्मों से वाकिफ नहीं हूँ।"

यह कह कर वह ड्योढ़ी में आई और हमको बुला कर पूछा—
"अब छिदवा दिये जायें कान?"

हमने कहा—“मैं क्या जानूँ? ज़रा ठहरिये, सिद्दीक भाई से पूछ कर बताता हूँ।”

खुदानखास्ता]

यह कह कर हम सिद्दीक भाई के पास गये। उन्होंने देखते ही कहा — “अब क्या देर है भाई ?”

हमने कहा—“बस, आपही के हुक्म की देर है ”

वह बोले भाई हमारा हुक्म कैसा ? अपनी बेगम से कहो न कि अब सब रस्में पूरी कर डालें ,”

हमने कहा — “मैं इसीलिए तो आपके पास आया हूँ। बेगम पूछती हैं कोई खास रस्म तो नहीं है ?”

सिद्दीक भाई ने कहा—“है क्यों नहीं। उनसे कहो कि लड़की को पच्छिम की तरफ मुँह करके बिठाकर छिदवाये जायें कान और लेडी डाक्टरनी पर तलवारों का साया कर लिया जाय। और हाँ, वह सूई ले ली जाय उससे, उसी की नोक से बाद में डोरे काटे जायेंगे।”

बेगम “तोबा है ” कहती हुई बाहर चली गईं और शौकिया को खलीकुन्निसा बेगम की गोद में पच्छिम की तरफ मुँह करके बिठा दिया गया। इसके बाद शहर की सिविल सर्जनी मिस एडलिफ्स ने एक सूई में धागा पिरोकर पहले तो उसे स्पिट से साफ़ किया इसके बाद खलीकुन्निसा बेगम को दे दिया। खलीकुन्निसा बेगम ने बिस्मिल्लाह पढ़ कर फूँकी। सिविल सर्जनी पर तलवारों का साया किया गया और उसने शौकिया के दोनों दुर बड़ी सफ़ाई से छेद दिये। शौकिया ने सचमुच कमाल कर दिया। ज़रा बस नाक तो चढ़ाई थी, इसके अलावा तो यह मालूम हुआ जैसे कुछ हुआ ही नहीं। कनछेदन के बाद ही वहाँ तो जनानी महफ़िल में शौकिया के सामने उपहार आने शुरू हो गये। खुद खलीकुन्निसा बेगम ने हीरे की दो जड़ाऊँ बालियाँ दीं। किसी ने बुन्दे दिये, किसी ने करनफूल, किसी ने झुमके, किसी ने सिर्फ रुपये जमाल बहन ने पत्ते

बालियों का सेट दिया। इसके बाद ही वहाँ औरतें खाने पर जाने लगीं और यहाँ मर्दाने में एक खास क्रिस्ता यह पेश आया कि खुदाबखश ने हमारे कान में अकर कहा—“सरकार यही है मेहरोत्रा, जो ज़ामिन अब्बास साहब से बातें कर रहा है।”

हमने अभी कुछ धन भी न दिया था कि ज़ामिन अब्बास साहब ने हमको आवाज़ देकर कहा—“अपने एक नये बहनोई से तो मिलो। मेहरोत्रा साहब सब जजिन सरलादेवी के शौहर।”

हमने अनिच्छा से सलाम कर लिया तो वह अब हमारे सर हो गये कि हम पाँच सौ रुपये के नोट लेकर शौकिया को भेज दें।

हमने पहले तो बहुत टला आखिर सिद्दीक भाई को बुलाकर कहा—‘सिद्दीक भाई, आपसे मिलिये आप ही हैं मेहरोत्रा साहब। और मेहरोत्रा साहब आप हैं सिद्दीक साहब, जमाल आग बेगम डिप्टी कलक्टरनी के शौहर। सिद्दीक भाई! आप ये रुपये दे रहे हैं कि मैं शौकिया को तोहफ़ा अभी भेजवा दूँ। अब आप ही इनको समझाइये कि मैंने किसी मर्द का कोई तोहफ़ा अभी तक नहीं लिया है, और अगर लेता तो सबसे पहले सिद्दीक भाई का तोहफ़ा लेता ’’

मेहरोत्रा साहब ने कहा—“वह कैसे? सिद्दीक भाई अगर आपके भाई हैं तो सईदा बहन बेरी बहन हैं। आपको मालूम नहीं कि सईदा बहन मुझको सगे भाई के बराबर समझती हैं। और मैं भी उनको सगे बहन समझता हूँ। शौकिया मेरी भानजी है और मुझको हक है कि मैं उसे जो चाहूँ दूँ। आपको इस सिलसिले में बोलने का कोई हक नहीं है।”

सिद्दीक भाई ने कहा—“ताज्जुब है कि आपसे और सईदा से

सुदानस्य स्ता।

इतना गहरा रिश्ता भी कायम हो चुका है, और हम लोग अब तक इस मिलसिले में बिलकुल बेख़बर हैं। अगर आपके ऐसे संबंध होते तो सईदा बहन कभी तो आपका जिक्र भी करतीं ”

मेहरोत्रा साहब ने कहा—‘यह कुसूर मेरा तो नहीं है कि इसकी सज़ा आप मुझको दें। मेरे बयान की सच्चाई का अन्दाज़ा करना हो तो खुद बदन सईदा को बुलाकर पूछ लीजिये। और फिर यह भी उनसे ही पूछिये कि वह मर्दों का एक मर्द से क्यां पर्दा कराती रहीं। कुछ भी हो, यह चन्द रुपये मैं अपनी बच्चों को भेज रहा हूँ इससे आपकी कोई मतलब नहीं है ”

सिद्दीक भाई ने कहा—“यह तो कीजिये न, मैं सईदा बहन को बाहर से बुलवाये देता हूँ। आप ही उनको दे दीजिये।”

मेहरोत्रा साहब ने कहा—“अच्छी बात है। मुझे इसमें कुछ उज्र नहीं। उनकी मजाल नहीं है कि वह इनकार कर सकें।”

सिद्दीक भाई ने बाहर से बेगम को बुलवा भेजा। जब वह ड्योन्दी में आगई तो हम और सिद्दीक भाई मेहरोत्रा साहब को लेकर ड्योन्दी तक आये। सिद्दीक भाई तो उसी तरफ़ रह गये हमने आगे बढ़ कर कहा—“मेहरोत्रा साहब शौकिया को पाँच सौ रुपया देना चाहते हैं।”

बेगम ने कहा—“क्यों भाई जान ! यह क्या हरकत है ! मैं आप को न मना करती हूँ न मना करने का हक़ रखती हूँ। मगर इतनी सी बच्ची इतने बहुत से रुपये लेकर क्या करेगी ? दो चार रुपये बहुत हैं।”

मेहरोत्रा साहब ने कहा—“अच्छा, अब आप भी गैरों की तरह मुझसे तवल्जुफ़ कर रही हैं ? एक तो आपकी यही ज्यादाती है कि आपने मुझे ऐन वक्त पर बताया कि कनछेदन है, ताकि मैं कानों का कोई ज़ेवर न बनवा सकूँ, और मुझे शर्मिन्दा होना पड़े। दूसरे अब

इस वक्त भी अड़ंगा लगा रही हैं। इसका मतलब तो हुआ कि आप सचमुच मुझको भाई नहीं समझती।”

बेगम ने कहा—“भाई न समझती तो जरूर यह रकम ले लेती। मेरी बला से आपका नुकसान होता। लेकिन चूँकि भाई समझती हूँ इसीलिए क़िफ़ायतशआरी (मितव्ययता) की तालीम दे रही हूँ और खुद आपका नुकसान नहीं चाहती। हालाँकि मेरा नुकसान हो रहा है।”

मेहराबा साहब ने कहा—“खैर, अब बातें तो बनाइये नहीं, यह रुपया लीजिये चुपके से। अभी आपको एक दूसरी जवाबदही मी करनी है। मेरे बहनोई और सिद्दीक़ साहब, दोनों को हैरत है कि मैं आपका भाई हूँ। मगर ये दोनों मुझे जानते तक नहीं। अब आप खुद सच-सच बताइये कि मैंने कितनी बार आपसे कहा कि मेरे बहनोई से मिला दीजिये। मगर आप हमेशा टाल गईं।”

बेगम ने कहा “वात यह है कि आप ठहरे उस रिश्ते से इनक समुगली। रिश्तेदार, और रिश्तेदार भी कौन, साले। ये आप से मिलकर क्या खुश होते। ये तो जलने के रिश्ते हैं। साले और समुगे की जान तो मशहूर है नाजुकिस्तान में जैसे इनके हिन्दुस्तान में सास नन्द की दुश्मनी मशहूर है। दूसरे शुरू शुरू में आपने मुझसे ऐसा इश्क़ फ़रमाया था कि मेरा दिल चूर होकर रह गया था। और सच्ची बात तो यह है कि मुझे बहुत दिनों तक यक़ीन न आ सका कि आपने बहन-भाई का जो रिश्ता कायम किया है वह किस हद तक टिकाऊ है। कहीं ऐसा तो नहीं है कि यह भी जनाब के इश्क़ का एक करिश्मा हो। अब जब यक़ीन आगया कि नहीं हम सचमुच भाई-बहन हैं, तो देख लीजिये, आपके मिला दिया।”

खुदानवास्ता]

बेगम के इस साफ़ बयान पर मेहरोत्रा के चेहरे पर एक रंग आरंभ था, एक जा रहा था। मगर वह घबराया हुआ बिल्कुल न था। आखिर उसने हमको सम्बोधित कर कहा—“दर असल यह मेरी बहन भी हैं और एक किस्म की देवी भी, जिन्होंने मुझे बहुत से पापों से बचा कर नर्क से बचाया और स्वर्ग की राह दिखाई। मज़ा तो देखिये कि मैं इन पर आशिक़ था।” यह कह कर मेहरोत्रा हँसते-हँसते लोट गया और बेगम भी मुस्कराती रहीं।

उस वक्त हपारा चेहरा भी यक़ीनन खुशी से खिल उठा होगा, हमलिये कि दिल का गुबार एक दम छूट गया था और अब हमको सच-मुच दिल से यक़ीन हो गया था कि बेगम के जिस रोमान्स के सिलसिले में हम अन्दर ही अन्दर जले जाते थे, घुले जाते थे, उसकी असलियत अब खुल चुकी थी। लेकिन इस सिलसिले में हमको पूरा इत्मीनान तो बेगम तपसीली बातें करने के बाद ही हासिल हो सकता था, फिर भी एक बोझ सर से उतर गया था, एक ठंडक सी दिल में महसूस होने लगी थी।

बेगम ने रुपये लेते हुए कहा—“अच्छ भाई साहब, आप नहीं मानते तो मैं आपका दिल दुखाना भी नहीं चाहती। अब आप जाइये अपने साबिक़ (भूतपूर्व) रक्तीब और हाल (वर्तमान) के बहनों के साथ ताकि मैं बाहर जाकर देखूँ कि कुछ गड़बड़ तो नहीं है।”

हम मेहरोत्रा साहब को लेकर घर में आगये और उनको एक जगह बिठाकर सिद्दीक़ भाई के साथ इन्तज़ाम में लग गये। सिद्दीक़ भाई को भी अब इत्मीनान था और उन्होंने तो यहाँ तक कहा कि अब एक दम से दिल को यक़ीन आ गया कि जो सच्ची बात होती है उसके लिये किसी सबूत या दलील को ज़रूरत नहीं हुआ करती। दिल फ़ौरन उसका मान लेता है।

हमने कहा —“हाँ अब मेरे दिल पर भी कुछ बोझ नहीं है। और मालूम होता है जैसे किस्मत पर से आदल छुट गये ”

बाहर ज़नाने में खाने के बाद नाच-गाने की महफिल गर्म हो गई। अन्दर डोम गाते बजाते रहे। और आखिर आधी रात तक मेहमान विदा होते रहे। जब सब जा चुके और मेहरोत्रा साहब ने इजाज़त चाही तो हमने उनको यह कह कर रोक लिया कि “आप भी मेहमान है जो जाना चाहते हैं ? सुबह चले जाइयेगा।”

मेहरोत्रा साहब ने कहा - “भाई साहब मैं जरूर ठहर जाता। मगर आपको मालूम नहीं मेरे घर का नक्शा। इस वक्त तशरीफ़ लाई हांगी आपकी भाभी साहबा और वह भी ऐसे कि उन्हें दूसरों ने क़त्ल में मोटर पर सवार कराया होगा और दूसरे ही उन्हें मोटर से उतारेंगे। क्योंकि वह शराब के नशे में चूर हांगी। अब मैं जाकर उनको ढंग से लिथजंगा और रात भर उनकी निगरानी रखूँगा कि तांड-फोड़ न करें, अपने को कोई नुकसान न पहुँचायें। नहीं तो उनका क्या है, न जाने अपने को कहाँ फेंक दें। एक दिन ज़रा सी मेरी आँख लग गई थी तो सिग्रेट से सारे बिस्तर में आग लगा ली थी। मैं क्या बताऊँ आपसे कि मेरी जान कैसी मुसीबत में है। न कहीं आने का रहा हूँ न कहीं जाने का खासकर रात को तो घर से बाहर रह ही नहीं सकता।”

उनकी दलील सही थी, इसलिए हमने उनको विदा कर दिया। और उनके जाने के बाद खुद भी हारे पड़कर सो रहे। सुबह उठकर जब सब काम से छुट्टी पा चुके और बेगम भी नाश्ता आदि कर चुकीं तो हमने उनसे पूछा—“क्यों सरकार, यह क्या किस्सा था मेहरोत्रा वाला ?”

बेगम ने कहा —“किस्सा कह रहे हो, इसको हादिसा (दुर्घटना)

खुदानख्वास्ता]

कहो : खुदा ने बड़ी मेहरबानी की कि सभल गया नहीं तो वह तो ले उड़ा होता तुम्हारी बीबी को ।”

हमने कहा—“जैर, मेरी बीबी ऐसी नन्हीं नादान नहीं है कि कोई उसे ले उड़े, मगर आपने आखिर उनसे मुझे अब तक मिलाया क्यों न था ?”

बेगम ने कहा—“मुझे उस आदमी पर कोई भरोसा न था और अब भी मैं उसे इस क्राबिल नहीं समझती कि भले घरानों के बेटे दामादों से उसको मिलने दिया जाय । इसमें शक नहीं कि अब वह बड़ी हद तक सुधर चुका है और देखने में बड़े भले आदमियों की तरह ज़िन्दगी बिता रहा है लेकिन सरला ने ऐसी आज़ादी दे रखी है उसे कि जो भी न कर डाले थोड़ा है ।”

हमने कहा—“तो क्या सचमुच उनको आपसे इश्क था ?”

बेगम ने हँस कर कहा—“ऐसा वैसा इश्क ! मेरे साथ भागने तक को तैयार था । जान दिये देता था । अजीब हाल बना रक्खा था उसने ।”

हमने कहा—“मगर आपने कभी इसका ज़िक्र क्यों न किया ?”

बेगम कहा—“ज़िक्र करके मैं अपने सर मुसीबत लेती । तुमको यक़ीन थोड़े ही आता कि मैं उसका सुधार करना चाहती हूँ । तुम तो बस जलने लगते । तरह-तरह के शक करते, मेरा उससे मिलना-जुलना बन्द कराना चाहते । और तुमको खुद मुझपर भरोसा न रहता । मर्दों के लिए मोम का बना हुआ रक़ीब (प्रतिद्वन्द्वी) ही जल मरने को काफी है । मैं तो अब भी न बतलाती । वह तो कहो कि खुद तुमको मालूम हो गया इसलिए कि इस मौके पर मेहरात्रा को बुलाना भी ज़रूरी था ।”

हमने कहा—“तो आप क्या यह समझती हैं कि मुझे कुछ मालूम नहीं था । मुझे एक-एक बात मालूम थी । मैंने उसके ख़त आपके नाम

और आपके खत उसके नाम देखे थे। उसके तोहफे मेरी नज़र से गुजरे और उसके साथ आप कब सिनेमा गईं, मुझे इसका पता था।”

बेगम ने कहा—“सिनेमा गईं ? सिर्फ एक बार। और वह भी सरकारी मजबूरी से। मौजूदा हुक्मत का एक हुक्म निकला था कि जो मर्द पर्दा छोड़ रहे हैं उनके साथ सार्वजनिक जगहों पर सरकारी हुक्कामनियों को जाना चाहिए। जिसमें कि जनता को यह अन्दाज़ा हो सके कि उनका बेपर्दा होना कोई कानून के खिलाफ बात नहीं है। मेरोज़ा के लिये मेरे पास हुक्म आया था कि वह पर्दा छोड़ चुके हैं, आप उनके साथ किसी आम मजमे में जायें जिसमें कि देखने वालियों को यह अन्दाज़ा हो सके कि पुलिस की एक जिम्मेदार अफसरनी एक बेपर्दा मर्द को गिरफ्तार नहीं कर रही है बल्कि उसके साथ खुद घूम-फिर रही है।”

हमने कहा—‘ख़ैर कुछ भी हां, लेकिन मुझे इसकी भी ख़बर थी।’

बेगम ने कहा—“अच्छा तो तुमने मुझसे कभी कहा क्यों नहीं ?”

हमने कहा—“या करते कह कर। थोड़ी बहुत जो शर्म बाक़ी थी कि तुम मुझसे छिपकर उनसे मिल रही थीं, क्या वह भी मैं उठा देता ताकि तुम खुल्लमखुल्ला उनसे मिलती रहो।”

बेगम ने प्यार से एक तमाचा मार कर कहा—“अरे बड़ा चलता हुआ है मेरा मियाँ—बेवक़फ़ कहीं का, जैसे मैं ऐसे प्यारे प्यारे मियाँ को छोड़ क किसी और क भी अपना सकती थी। अच्छा अब तो इत्मीनान हो गया।”

हमने कहा—“हाँ अब मुझे इत्मीनान है।”

बेगम ने बाहर जाते हुए कहा—“अच्छा अब मैं बाहर जा रही हूँ

खुदानखास्ता]

आज दो तीन बेगमें मेरे साथ चाय पियेंगी जरा इन्तज़ाम ठीक रखना ।
केक और समोसे मैं मँगाये लेती हूँ ।”

यह कह कर उधर तो बेगम रवाना हुई और इधर खुदाबख्श दरवाजे की आड़ से निकल कर बोले—“देख लिया हुआ आपने मुल्लानी जी के अमल का असर । अभी अमल खत्म भी नहीं हुआ और नतीजा निकल आया ।”

हमने कहा—“अच्छा खैर, वह अमल ही का नतीजा सही, मगर यह तुम्हारी क्या हक़त है कि तुम छिप कर हम लोगों की बातें सुना करते हो । मैं इसको पसन्द नहीं करता ।”

खुदाबख्श ने कहा—‘हुजूर गलती तो हुई । लेकिन चूँकि मेरा दिल लगा हुआ था उस मेहरोत्रा वाले किस्से में इसलिये मैंने इस पर गौर भी न किया कि मैं यह नामुनासिब बात कर रहा हूँ और यही जिक्र सुनकर दरवाजे की आड़ में खड़ा हो गया । माफ़ी चाहता हूँ, मगर हुआ को भी अब तो मुल्लानी जी के अमल का कायल होना चाहिये, मैंने तो आज तक मुल्लानी जी के अमल को बेअसर देखा नहीं ।”

हमने कहा—“मुल्लानी जी के अमल का तो मैं उस वक्त कायल होता जब दरअसल कुछ किस्सा भी होता । मगर यहाँ तो कोई किस्सा था ही नहीं एक सिरे से ।

खुदाबख्श ने कहा—“सरकार मतलब तो यह है कि आपके बेकरार दिल के करार आ गया । यही अमल का असर है ।”

हमने कहा—“अच्छा भई अच्छा यही सही । अब तुम जरा काम में लग जाओ । बेगम की कुछ सहेलियाँ चाय पर आ रही हैं । कुछ पकवान का इन्तज़ाम करलो ।”

इक्कीस

मर्दों की बेपर्दगी के नतीजे आखिर सामने आने लगे। कल ही खानून पिक्चर पैलेस में कुछ मर्दों के बीच मारपीट हो गई और पुलिस ने जो हस्तक्षेप किया तो दोनों तरफ़ के मर्दों ने कॉनिस्टिबलनियों को उठा-उठा कर एक तरफ़ उछाल दिया और जो औरतें बीच में पड़ीं उनमें से भी किसी की कलाई मरोड़ी, किसी को धक्का देकर गिरा दिया। किस्सा यह बयान किया जाता है कि किसी औरत के पास एक मर्द था जिसकी तलाश में उस औरत का शोहर रहता था। मगर चूँकि वह पर्दे में था इसलिए उसे अब तक ढूँढ़ न सका था। लेकिन अब बेपर्दगी के क़ानून से फ़ायदा उठा उसने पर्दा उठा दिया और एक दिन किसी बाज़ार में उस मर्द को देख कर वहाँ उससे एक-एक पानी चाहा मगर वह मर्द भाग गया और लड़ाई की नौबत न आ सकी। कल संयोग से सिनेमा में दोनों की मुठभेड़ हो गई और फिर जो भगड़ा हुआ है तो अच्छे-खासे बलबे का रूप धारण कर लिया। उस मर्द की तरफ़ से भी कुछ मर्द और कुछ औरतें थीं और इधर से भी कुछ मर्द और कुछ औरतें थीं। दोनों पार्टियों में खूब लड़ाई हुई और घायल हुई पुलिस वालियाँ। बल्कि एक पुलिस कॉनिस्टिबलनी तो इतनी ज़ख्मी हुई कि बेचारी अस्पताल में पहुँचते ही मर गई। बेगम को जब ख़बर मिली तो वह भी मौके पर पहुँची, मगर उस वक़्त तक भगड़ा करने वाले भाग चुके थे और

खुदानखास्ता]

सिर्फ घायल पुलिस वालियाँ पड़ो सिसक रही थीं। इस भगड़े की सारे शहर में चर्चा थी, बल्कि आज पुरुष पर्दा रक्त दल की ओर से एक जलसा भी था, वर्तमान सरकार के खिलाफ अविश्वास का प्रस्ताव पास करने के लिये। और सारे शहर में सचमुच बड़ा जोश पैला हुआ था कि इन जानवरों को घरों से निकाल कर अच्छी खासी शान्ति भंग की गई है और अब इस तरह की घटनाएँ रोज़ होती रहेंगी जिनकी कोई रोक-थाम पुलिस से इसलिए न हो सकेगी कि औरतों की पुलिस मर्दों को काबू में लाने में असमर्थ है। बेगम खुद भी परेशान थीं इसलिये कि आज शहर में आम हड़ताल मनाई गई थी और डर था कि कहीं जलसे में बेपर्दा मर्द पहुँच कर फिर कोई भगड़े की सूरत न पैदा करें। इसलिये हथियार बन्द पुलिस का पूरा इन्तज़ाम था और बेगम उनको आदेश दे रही थीं कि खलीकुन्निसा बेगम खुद कोतवाली आई और बेगम को अलग ले जाकर कहा—“पुरुष पर्दा रक्त दल के जलसे को अमन शान्ति के साथ हो जाना चाहिये। मैं यह नहीं चाहती कि जिस तरह पिछली हुकूमत ने हमारे जलसों को भंग करने की कोशिश की है और जिस तरह हमारे जलसों को पुलिस के ज़रिये नाकाम बनाने की कोशिश की है, वैसा ही हम भी करें। मैं कल ही पार्लियामेन्ट के जलसे में शिरकत के लिए जा रही हूँ। इस बार वहाँ हंगामे को नज़र में रख कर काम रोको प्रस्ताव ज़रूर पेश होगा। सुना है साहबज़ादीपुर, दुखतराबाद, नारीनगर में भी इस क्रिस्म के हंगामे हुए हैं। हर इन्कलाब के बाद इस तरह के तमाशे तो हुआ ही करते हैं। आप इसका पूरा खयाल रखियेगा कि जलसे में कुछ गड़बड़ न हो।”

बेगम ने उनसे वायदा कर लिया कि जलसा पूरी शान्ति के साथ हो जायगा। और उनके जाने के बाद अपने इन्तज़ाम में लग गईं। यह जलसा कोतवाली के सामने उसी मैदान में होने वाला था जिसमें

चुनाव में पोलिंग स्टेशन बनाया गया था। दिन ही से हर तरफ़ लाउड स्पीकर लगा दिये गये थे और ऊँचे से प्लेटफार्म पर पुरुष पर्दा रक्षक दल का झन्डा, जिस पर बुर्के की तस्वीर थी, लहरा रहा था। आखिर तीसरा पहर होने-होते हजारों औरतें उस मैदान में जमा हो गईं। लेकिन शुक्र है कि कोई मर्द वहाँ नज़र न आता था। हालाँकि डर था कि कहीं बेपर्दा मर्द भी उस जलसे में न चले आयें और भगड़ा करने की कोशिश करें। आखिर ठीक चार बजे नारे लगने शुरू हो गये और हम दौड़ कर कोठे पर पहुँच गये कि जरा सैर ही करें जलसे की। हमारे पहुँचने के बाद लाउड स्पीकर से आवाज़ गूजी : —

“मैं इस जलसे की सद्दत के लिये अख़्तर ज़मानी बेगम साहबा का नाम पेश करती हूँ।”

और सभ्रा मजमा “अख़्तर ज़मानी बेगम जिन्दावाद” के नारों से गूँज उठा।

अख़्तर ज़मानी बेगम जार्जट की निहायत खूबसूरत साड़ी बाँधे जूड़े में फूल लपेटे सद्दत की कुर्सी पर तशरीफ़ लाई और फौरन ही जलसे की कार्रवाई अपने जोशीले भाषण के साथ शुरू कर दी। इसमें शक नहीं कि अख़्तर ज़मानी बेगम बहुत ही जोरदार बोलने वाली हैं। बड़ा दबंग भाषण दिया और हद यह है कि भाषण करते करते यहाँ तक कह गईं कि :—

“कहाँ हैं आज मर्दों के इश्क़ में सचमे बड़ी दीवानी बी खली कुन्निसा ? अब आयें और संभालें अपने मर्दों को, उन मर्दों को जिनको देखकर आँखें सँकने के शौक़ में पर्दे से बाहर तो निकलवाया है मगर अब उनके प्यारे उनकी सरकार के सँभाले नहीं सँभलते। उनके कानिलों ने कल्ले-आम मचा रक्खा है। हमारी पायें ने इसी दिन के लिए मर्दों का

खुदानखास्ता]

पर्दा उठाने का विरोध किया था और आज तक हम मर्दों का पर्दा उठाने का विरोध कर रही हैं। लेकिन इस सरफिरी मर्दराज सरकार ने अपनी हविस पूरी करने के पीछे सारे देश की तबाही मोल ली है तो अब यही सरकार उस सारी खूँरेजी की जिम्मेदार होगी जिसने पर्दे के क़ानून को ख़त्म करके मर्दों के बुर्के उतरवाये हैं। अभी क्या है, अभी तो देख लीजियेगा कि यह मर्द खुद इस सरकार की ईंट से ईंट बना देंगे और किसी के सँभाले न सँभलेंगे। और मर्द राज दल की पगलियों को उस वक़्त होश आयेगा जब मर्दों का पूरा क़ब्ज़ा हो चुकेगा और नाज़ुकिस्तान मर्दिस्तान बन चुकेगा। मैं सरकार को चैलेंज देती हूँ कि वह आज भी पर्दा छोड़ने का क़ानून ख़त्म करने के सिलसिले में मुझसे नहीं बल्कि किसी पुरुष पर्दा रक्षक दल की जाहिल से जाहिल स्वयं सेविका से बहस करके पर्दे के खिलाफ़ किसी दलील में कामियाब हो जाय तो मैं पहली औरत होऊँगी जो अपने घर के मर्दों को बाज़ार में बेपर्दा ले आयेगी। लेकिन मुझे मालूम है कि पर्दे के खिलाफ़ दलील और बहस से जीता ही नहीं जा सकता। अलबत्ता अगर बेउसूली को उसूल बना लिया जाय तो बात ही दूसरी है।”

इस भाषण के बाद एक आध भाषण और हुए। अन्त में एक निन्दा का प्रस्ताव पास हुआ जिसमें वर्तमान सरकार के खिलाफ़ निंदात्मक शब्दों की भरमार थी। प्रस्ताव तालियों की गूँज में पास हो गया और सबसे अच्छी बात यह हुई कि जलसा अमन शान्ति के साथ ख़त्म हो गया।

दूसरे दिन के अख़बारों में ज़लसे की पूरी कार्रवाई के साथ लेख भी थे और बड़ी-बड़ी नेत्रियों के वक्तव्य भी। मगर दैनिक ‘सहेली’ ने अपने अग्रलेख में यह इशारा किया था कि जिस पार्टी ने इतनी बड़ी जिम्मेदारी लेकर मर्दों को पर्दे के बाहर निकलवाया है वही इस भगबे

के सिलसिले में भी अपनी एक स्थायी योजना रखती है। और हमको आशा है कि इस योजना के सामने आते तक हम खाहमखाह सरकार की तरफ से लोगों के मन में बुराई पैदा न होने देंगी।

चुनांचे तीसरे ही दिन इस योजना की खबर भी आ गई। बेगम ने अखबार लाकर हमको देते हुए कहा—“देख लो तुम, मैंने जो कहा था कि अब मर्दों को जिम्मेदारियाँ दिये बिना काम नहीं चल सकता, वही हुआ। विधान सभा ने तय किया है कि मर्दों को इन्तजामी मामलों में बराबर का हिस्सा दिया जाय और वह फिज्हाल औरतों की निगरानी में काम सीखें इसके बाद मर्दों के सारे मामले इन्हीं मर्द हाकिमों के हवाले कर दिये जायें। इसके अलावा यह भी मंजूर हुआ है कि क़ाबिल और काम करने योग्य मर्दों को नाजुकिस्तान से बाहर भेजा जाय जिसमें कि वह नाजुकिस्तान से बाहर जाकर दूसरे देशों में राज-काज के इन्तजाम की ट्रेनिंग हासिल करें। और फिर नाजुकिस्तान आकर यहाँ का इन्तजाम संभाल लें”

हमने कहा—“फिर अब क्या होगा?”

बेगम ने कहा—“मेरे साथ अगर किसी मर्द कोतवाल को भी लगा दिया तो मैं लम्बी छुट्टी ले लूँगी। मेरी छुट्टी बाक़ी भी है और काम करते-करते थक भी गई हूँ। मगर यहाँ सोचती हूँ कि क्या करूँगी छुट्टी लेकर। लेकिन ऐसी सूरत में छुट्टी लेनी ही पड़ेगी, मैं इस दोरज़्जी में न रह सकूँगी।

हमने कहा—“मेरे खयाल में तो आप यह कीजिये कि खली-कुन्सिा बेगम से सलाह किये बिना आप कुछ न कीजिये। वह सरकार की अधिकारिणी भी हैं और आप पर बेहद मेहरबान भी। इसलिये आप अपना मामला उन्हीं को सौंप दीजिये।”

बेगम उस वक़्त तो ठाल गईं लेकिन दूसरे दिन वह एक लम्बा सा

खुदानखास्ता]

स्लिफाफा लिये हुये हमारे पास आई और हँसते हुए कहा—“मैंने कहा, सुनते हो ? लो यह तुम्हारे नाम सेन्ट्रल गवर्नमेन्ट की चिट्ठी आई है ।”

हमने ताज्जुब से कहा—“हमारे नाम ? लो भला मुझको सरकारी चिट्ठी से क्या मतलब ?”

बेगम ने कहा—“देखो तो सही सचमुच तुम्हारे हा नाम है । लो पढ़ो ।”

सचमुच वह तो हमारे ही नाम था । हमने और बेगम ने खामोशी से पढ़ना शुरू किया :—

“आदरणीय खानम बहादुरनी सईदा खानून साहबा ,कोतवालिनी राधानगर के श्रीमान् पति देव जी ! तसलीम !

नाजुकिस्तान सरकार को मर्दों का पर्दा उठा देने के बाद से अपने अमन कानून की रक्षा और इन्तजाम के लिये मर्द हाकिमों की जरूरत बड़ी तेजी से महसूस हो रही है और इस सिलसिले में सरकार ने तय किया है कि योग्य मर्दों को सरकारी खर्च पर नाजुकिस्तान के बाहर भेजकर खास-खास विभागों की ट्रेनिंग दी जाय जिसमें कि वह वापस आकर देश की अच्छी तरह सेवा कर सकें । सरकारी कागज़ों की जाँच-पड़ताल से मालूम हुआ है कि आपका सम्बन्ध हिन्दुस्तान से है और आप यहाँ की नागरिकता स्वीकार करने से पहले खुद अपने मुल्क में बेपर्दा थे । आपकी शिक्षा भी अच्छी है और आपमें इसकी काफी क्षमता है कि आप ज़िम्मेदारी से काम कर सकेंगे । इसलिये सरकार ने आपका चुनाव किया है कि आप जल्दी से जल्दी हिन्दुस्तान जाकर पुलिस की ट्रेनिंग हासिल करें और फिर नाजुकिस्तान वापस आकर मर्दाना पुलिस की कमान अपने हाथ में लें । इस सिलसिले में नाजुकिस्तान के

[खदानखवास्ता]

कानूनों के अनुसार आपके लिये इनकार की कोई गुंजायश नहीं है आप जल्द जवाब दें कि आप कब रवाना हो सकेंगे।

दस्तखत-

मोहिनी देवी

राष्ट्रनेत्री

नाजुकिस्तान”

हम और बेगम दोनों इस पत्र को पढ़कर सन्नाटे में आ गये। हमारे लिये इतनी लम्बी यात्रा कोई आसान बात न थी। शौकिया का कम से कम तीन साल के लिये छोड़ना हम पसन्द न करते। उसको साथ ले जाते भी न बन पड़ता था, यह खयाल था कि बेगम परेशान होंगी। आखिर हमने सोचते-सोचते कहा—“सुनिये तो सही। आप खुद भी तो छुट्टी लेना चाहती थीं।”

बेगम ने कहा—“अच्छा, तो फिर ?”

हमने कहा—“इस तरह सभी चल सकते हैं। मैं, आप और शौकिया।”

बेगम ने कहा—“मैं तो एक दूसरी बात सोच रही हूँ। क्या सच-मुच अब तुम्हारा पर्दा भी मुझको उठाना पड़ेगा ? ट्रेनिंग हासिल करके जब तुम आओगे तो पर्दे में कैसे रह सकोगे ?”

हमने कहा—“जब की बात जब के साथ है। पहले तो चलने या न चलने का फैसला करना है।”

बेगम ने कहा—“फैसला ही अब क्या हो सकता है। यह तो हुक्म है। आपको तो जाना हो पड़ेगा।”

हमने कहा—“और मैं बगैर तुम्हारे जा ही नहीं सकता, यह कान खोल कर सुन लो।”

बेगम तो न जाने क्या सोच रही थीं मगर हम सिर्फ यह सोच रहे थे कि इसी बहाने से हिन्दुस्तान तक पहुँचने का मौका मिल रहा है। अगर सब को लेकर चले गये तब फिर निजात (मुक्ति) ही निजात है।

बार्डस

यों तो लगभग बीस दिन से हमारे यहाँ सफ़र का सामान दुरुस्त हो रहा था लेकिन आज खास तौर से बड़ी हलचल थी। बाहर जमाल बहन और घर में सिद्दीक़ भाई और मेहरोत्रा सामान दुरुस्त करने में लगे थे। बेगम बराबर दस दिन से दावतें खा रही थीं। एकाध हमारी भी दावत हुई। कल रात ही खलीकुन्निसा बेगम ने बेगम की दावत की थी और उनके शौहर ज़ाहिद अली ख़ाँ साहब ने हमको भी बुलवाया था। दर असल बेगम को छुट्टी पर हमारे साथ जाने की इजाजत ही खलीकुन्निसा बेगम की कोशिशों से मिली थी। नहीं तो यहाँ यह सवाल बड़ी आसानी पैदा हो सकता था कि कहीं हम दोनों बच्ची सहित इसी बहाने हिन्दुस्तान जाकर हिन्दुस्तान ही के न हो रहें। आज कोतवाली के स्थान ने बेगम को बड़ा ऐन्-होम दिया था। इधर ये दावतें, उधर हमको यह फ़िक्र कि सामान में कोई चीज़ रह न जाय। आज शाम ही की गाड़ी से हमको बेगमाबाद खाना होकर दूसरे दिन राष्ट्रनेत्री मोहिनी देवी के सामने पेश होना था और उसी शाम को हमारा जहाज़ बेगमाबाद के बन्दरगाह से लंगर उठाने वाला था। यह जहाज़ विशेष रूप से हमारे लिये ही मगवाया गया था। जहाज़ का यह रास्ता न था। उसको अदन से सीधा बम्बई जाना था। लेकिन यहाँ से खास सरकारी आदेश गया कि जहाज़ इस तरफ़ से होता हुआ जाय। सारांश यह कि अब हमको किसी

न किसी तरह आज ही रात को यहाँ से रवाना होकर कल बेगमबाद पहुँचना था। सामान तो सब ठीक हो ही चुका था। लेकिन कोई न कोई चीज़ बराबर याद आती चली जाती थी। मसलन यहाँ का खास तोहफ़ा था वह पत्थर जिस पर अपने आप तस्वीर उतर आती है, या यहाँ का खुर्मा मशहूर था। अमरूद के बराबर का खुर्मा, और ऐसा स्वादिष्ट कि हिन्दुस्तान वाले आम का मज़ा भूल जायें। ठीक समय पर ये दोनों चीज़ें याद आईं और तुरन्त मुद्दिया की गईं। सिद्दीक भाई का बुरा हाल था। रोंते-रोते आँखें सूज गई थीं। हम उनके सामने जाने का साहस मुश्किल से कर पाते थे। आँखें चार होते ही खुद हमारा भी अजीब हाल होता था। बाहर यही हाल जमाल बहन का था। 'ऐड-होम' में सुना है कि बोलते-बोलते बेहोश हो गईं और बड़ी मुश्किल से उनको होश आया। हृदय यह है कि खलीकुन्निसा ऐसी मज़बूत दिल वाली महिला भी रों दीं। हालाँकि सबको यह मालूम था कि हम लोग कुछ दिनों के लिए ही जा रहे हैं मगर यहाँ इस हद तक सम्बन्ध बढ़ गये थे कि स्वदेश से जिस वक्त हमारी बेकस किश्ती रवाना हुई थी, हमको बिदा करने वाला कोई न था और इस परदेश में यह गैर अपनों से बढ़कर अपनत्व के सबूत इच्छा से नहीं बल्कि अनायास दे रहे थे।

शाम को हम स्टेशन रवाना हुए। स्टेशन पर कहीं तिल धरने की जगह न थी। मालूम होता था कि सारा शहर सिमट कर आ गया है। बेगम के पहुँचते ही उन पर हारों और फूलों की बारिश शुरू हो गई और थोड़ी ही देर में वह फूलों में बिलकुल छिग कर रह गईं। बार-बार उनके गले से हार उतारे जाते थे और फिर उतने ही हो जाते थे। हम बुर्के में थे और हमको उस फ़र्स्ट क्लास के डिब्बे में पहुँचा दिया गया जो हमारे लिए सरकारी तौर पर 'रिजर्व' था। हमको पहुँचाने सिद्दीक भाई, मेहरोत्रा और खलीकुन्निसा बेगम के शौहर जाहिद अली खाँ साहब आये थे।

[खुदानखवास्ता]

सहीक भाई और जमाल बहन तो बेगमाबाद तक साथ जा रही थीं। बाक़ी सब यहीं तक आये थे। आख़िर इन्जन ने सीटी दी और बेगम ने डिब्बे में क़दम रख कर रो रोकर औरतों से हाथ मिलाने शुरू कर दिये। मगर कहाँ तक ? हज़ारों औरतें तो थीं। आख़िर सब को वहीं से हाथ जोड़कर सलाम किया और ट्रेन रवाना हो गई।

बेगमाबाद के स्टेशन पर भी बेगम की बहुत सी सहेलियाँ उनको लेने आ गई थीं। यही निश्चय हुआ कि सारा सामान इसी वक्त जहाज़ पर पहुँचा दिया जाय और बेगम राउद राष्ट्रनेत्री मोहिनी देवी की सेवा में चली जायें। हम लोगों ने भी यही उचित समझा कि जहाज़ पर ही टहरें। दिन भर बेगम की दोस्त जो बेगमाबाद की डिप्टी कमिशनरिन थीं इस बात का आग्रह करती रहीं कि भोजन उनके साथ किया जाय। लेकिन तब यही पाया कि इसमें भगड़ा है, खाना जहाज़ पर ही पहुँचा दिया जाय। अतएव बेगम तो स्टेशन के 'वेटिंग-रूम' में ही राष्ट्रनेत्री के पास जाने की तैयारियाँ करने लगीं और हम लोग जमाल बहन के साथ जहाज़ में आ गये जिसमें हमारे लिए दो फ़र्स्ट क्लास कमरे 'रिज़र्व' थे। उस जहाज़ के बाक़ी सारे मुसाफ़िरों को कड़ी मनाही थी कि वह किनारे पर क़दम न रखें। इसलिये नहीं कि वे बेपर्दा थे बल्कि इसलिये कि यहाँ के रहन सहन के तरीक़ों से वे परिचित न थे और मुमकिन था कि उनसे किसी का या किसी से उनको कोई शिकायत पैदा हो जाती। यहाँ की कुछ सौदागरनियाँ जहाज़ पर ही अपना माल बेचने के लिये गईं तो मालूम यह हुआ कि उनको अक्सर मुसाफ़िरों ने छेड़ा और उनको सब्त ताज़ुब हुआ कि ये मर्द कैसे बेशर्म हैं जो ग़ैर औरतों से पर्दा तो ख़ैर करते ही नहीं, मगर उनको छेड़ते भी हैं। सारांश यह कि हम लोग जिस वक्त पहुँचे उस वक्त हमको सब मुसाफ़िर तमाशे की तरह देख रहे थे और हमारे बुकों पर हँस रहे थे, लेकिन जमाल बहन ने कप्तान से

इस सम्बन्ध में शिकायत की कि ये मुसफ़िर हालाँकि मर्द हैं और मर्दों का मर्दों से पर्दा कोई मानी नहीं रखता लेकिन ये हमारे मर्दों को इस तरह तमाशा बनाये रहेंगे, तो अच्छा न होगा।

कप्तान ने मुसाफ़िरों को वहाँ से हटा दिया और फिर हम चैन से बैठ सके। शौकिया किसी तरह जमाल बहन को नहीं छोड़ रही थी। वह भी उसे कलेजे से लगाये लगाये फिर रही थीं। उसका सारा वाजू तावीज़ों से लदा हुआ था और नन्हें-नन्हें गजरे उसके गले में पड़े थे। वह एक-एक चीज़ को हैरत से देख रही थी कि आखिर यह तमाशा क्या है। और यह क्या हो रहा है। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद जमाल बहन उसका गले से लगा कर रोना शुरू कर देती थीं। और सिद्दीक भाई के सर पर तो रूमाल तक बंध चुका था। सर में दर्द होने लगा था बेचारे के रोते-रोते। अगर बुखार भी हो गया हो तो कोई ताज्जुब की बात नहीं। आखिर तीन बजे के करीब बेगम भी राष्ट्रनेत्री से भेंट करके और अपनी सारी सहेलियों से मिल-मिलाकर आ गईं। उनके साथ एक बड़ा ना थाल लिये, जिसके ऊपर ज़री का काम किया हुआ कपड़ा पड़ा था, एक सरकारी सनारिन थी।। बेगम ने आते ही कहा—“लीजिये साहब, मोहिनी देवी ने आपके लिये यह तोहफ़े भेजे हैं और शौकिया को यह दस हजार की थैली दी है। इसके अलावा मुझको एक जड़ाऊ तलवार प्रदान की है।”

जमाल बहन ने कहा—“बड़ी भाग्यशालिनी हो तुम। यहाँ यह तलवार सिवाय बज़ीरियों के और किसी को नहीं भेंट की जाती।”

बेगम ने कहा—“जी हाँ, इसी हैसियत से यह तलवार मिली है। मुझे पुलिस की वज़ारत का परवाना भी मिला है।”

जमाल बहन ने खुशी से उछल कर कहा—“तुम्हें खुदा की कसम, तो सही।”

खुदानखास्ता]

और जब बेगम ने उनको वह परवाना दिखाया है तो वह दौड़ कर बेगम से लिपट गई और भर्राये हुए स्वर में बोलीं—“यह हुई है एक बात। कीतवालिनी के बाद अभी तुम को तीन ग्रेड और तय करने थे तब कहीं यह पद मिल सकता था। लेकिन बात तो यह है कि खलीकुन्निसा बेगम ने तुम्हारे लिये बड़ा काम किया है।”

बेगम ने कहा—“खलीकुन्निसा बेगम के बारे में अगर मुझे यह मालूम होता तो मैं उनको उस जमाने में कुछ और ठोंक पीट लेती। यह सब करामात सिर्फ एक डंडे की है जो जलसा भंग करते वक्त मैंने उनकी पीठ पर जमा दिया था। कुछ भी हो, इसमें शक नहीं कि नाजुकिस्तान ने मुझको खरीद लिया।”

हम अपना यह उपन्यास यहीं तक लिखने पाये थे और इरादा था कि अब जहाज़ का लंगर उठवा देंगे कि बेगम ने कंधे की तरफ से भाँक कर कहा—“खुदा करे ऐसा ही हो जाय।”

हमने कलम रोक कर कहा - “खुदानखास्ता।”

बेगम ने कहा—“आहा। लीजिये इसका नाम भी मिला गया। इस उपन्यास का नाम रखिये खुदा करे या ए काश।”

हमने कहा—“जी नहीं, इससे अच्छा नाम आपने और आपकी बात-चीत ने हमको दे दिया है।”

“वह क्या ?”

हमने कहा—“खुदानखास्ता।”

